Vedas. Yajurveda. Vājasaneyi-
saṃhitā. Selections
, Vājasaneyi Mādhyandina
Śukla Yajurveda saṃhitāyāḥ
sarvānukramasūtram



वाजसनेयि- माध्यन्दिन-शुक्ल

# यजुर्वेद संहितायाः सर्वानुक्रमसूत्रम्





स्वाध्याय-मंडल, किल्ला-पारडी ( जि. सूरत )






मूल्य १॥) रु.


LIBRARY
SEP 1 1964
UNIVERSITY OF TORONTO



## अथ वाजसनेयि--माध्यन्दिन--शुक्ल--
## यजुर्वेद संहितायाः

# सर्वानुक्रमसूत्रम् ।

ॐ मण्डलं दक्षिणमक्षि हृदयं चाधिष्ठितं येन, शुक्लानि यजूंषि भगवान् याज्ञवल्क्यो यतः प्राप, तं विवस्वन्तं त्रयीमयमर्चिष्मन्तमभिध्याय, माध्यन्दिनीये वाजसनेयके यजुर्वेदाम्नाये स-चैं स-खिले स-शुक्रिय ऋषि-दैवत-छन्दांस्यनुक्रमिष्यामो, यजुषामनियताक्षरत्वादेकेषां छन्दो न विद्यते, द्रष्टार ऋषयः, स्मर्तारः परमेष्ठ्यादयो, देवता मन्त्रान्तर्भूता अग्न्यादिका हविर्भाजः स्तुतिभाजो वाऽनःशाखोखाशम्योपवेषकपालेध्मोलूखलादयश्च प्रतिमाभूताश्छन्दांसि गायत्र्यादीन्येतान्यविदित्वा योऽधीतेऽनुब्रूते, जपति, जुहोति, यजते, याजयते, तस्य ब्रह्म निर्वीर्यं यातयामं भवत्यथान्तराश्वगर्तं वा पद्यते, स्थाणुं वर्च्छति, प्रमीयते वा, पापीयान् भवत्यथ विज्ञायैतानि योऽधीते, तस्य वीर्यवदथ योऽर्थवित् तस्य वीर्यवत्तरं भवति, जपित्वा हुत्वेष्ट्वा तत्फलेन युज्यते ॥ १ ॥

'इषे त्वादि खं ब्रह्मान्तं' विवस्वानपश्यत् । ततः प्रतिकर्मविभागेन ब्राह्मणानुसारेण ऋषयो वेदितव्याः, परमेष्ठी प्राजापत्यो दर्शपूर्णमासमन्त्राणां ऋषिर्देवा वा प्राजापत्याः ।

इषे त्वा शाखाऽनुष्टुब् विनियोगः कल्पकारोक्त, एवमूर्जे त्वा, वायवो वायव्यं, देवो

---

इषे त्वा० ( अ० १।१ )— ॐ खं ब्रह्म ( अ. ४०।१७ ) पर्यन्तं विवस्वान् ऋषिः ।

---

[ अथ दर्शपूर्णमासमंत्राः— अ. १—२।२८ ]

| मंत्र | | ऋषिः । | देवता | छन्दः |
|---|---|---|---|---|
| १ | इषे त्वा । | परमेष्ठी प्राजापत्यः, देवाः प्राजापत्या वा | शाखा | अनुष्टुप् |
| | ऊर्जे त्वा । | ,, | ,, | |
| | वायव स्थ । | ,, | वायुः | |
| | देवो वः सविता० | ,, | इन्द्रः | |

व ऐन्द्रं, यजमानस्य शाखा, वसोर्वायव्यं, द्यौर्मातरिश्वन उखा, वसोर्वायव्यं, देवस्त्वा पयः, कामधुक्षः प्रश्नः, सा विश्वायुस्त्रीणि गव्यानीन्द्रस्यैन्द्रं, विष्णो पयः ॥ २ ॥
[ य० अ० १ मं० १–४ ]

अग्न इदमाग्नेये ॥ कस्त्वा प्राजापत्यं, कर्मणे स्रुक्शूर्पं, प्रत्युष्टं द्वे राक्षसे, उरु ब्रह्म रक्षोघ्नꣳ सर्वत्र, धूरसि धूर्देवानां विष्णुस्त्वाऽन, उरु हविष्या, अपहतꣳ रक्षो, यच्छन्ताꣳ हविष्या, देवस्य त्वा सावित्रꣳ सर्वत्राऽग्नये लिङ्गोक्ते, भूताय त्वा हविः, स्वः सूर्यो, दृꣳहन्तां गृहाः, पृथिव्यास्त्वा हव्यं, पवित्रे लिङ्गोक्तꣳ, सवितुर्देवीः प्रोक्षिता

| | | | |
|---|---|---|---|
| | यजमानस्य पशून्पाहि । | ,, | शाखा |
| २ | वसोः पवित्रमसि । | ,, | वायुः |
| | द्यौरसि पृथिव्यसि । मातरिश्वनो० | ,, | उखा |
| ३ | वसोः पवित्रमसि० | ,, | वायुः |
| | देवस्त्वा सविता० | ,, | पयः |
| | कामधुक्षः ? | ,, | ( प्रश्नः ) |
| ४ | सा विश्वायुः । सा विश्वकर्मा० | ,, | गौः |
| | इन्द्रस्य त्वा भागꣳ० | ,, | इन्द्रः |
| | विष्णो हव्यꣳ रक्ष । | ,, | पयः |
| ५ | अग्ने व्रतपते० इदमह० | ,, | अग्निः |
| ६ | कस्त्वा युनक्ति० | ,, | प्रजापतिः |
| | कर्मणे वां वेषाय वाम् । | ,, | स्रुक्, शूर्पम् |
| ७ | प्रत्युष्टꣳ रक्षः० निष्टप्तꣳरक्षो० | ,, | रक्षः |
| | उर्वन्तरिक्षमन्वेमि । | ,, | ब्रह्म रक्षोघ्नम् |
| ८ | धूरसि धूर्व धूर्वन्तं० | ,, | धूः |
| | देवानामसि वह्नितमं० | ,, | अनः |
| ९ | अह्रुतमसि हविर्धानं० | ,, | ,, |
| | विष्णुस्त्वा क्रमताम् । | ,, | ,, |
| | उरु वाताय । | ,, | हविः |
| | अपहतꣳ रक्षः । | ,, | रक्षः |
| | यच्छन्तां पञ्च । | ,, | हविः |
| १० | देवस्य त्वा सवितुः० | ,, | सविता |
| | अग्नये जुष्टं० अग्नीषोमाभ्यां० | ,, | लिङ्गोक्ते |
| ११ | भूताय त्वा नारातये० । | ,, | हविः |
| | स्वरभिविख्येषम् । | ,, | सूर्यः |
| | दृꣳहन्तां दुर्याः । | ,, | गृहाः |

आपान्यग्नये लिङ्गोक्ते, दैव्याय पात्राणि ॥ ३ ॥ [ य० अ० १ मं० ५–१३ ]

शर्मास्यदित्याःकृष्णाजिनमवधूतꣳ राक्षसमद्रिर्ग्रावोलूखले, अग्नेर्हविर्बृहत्स इदं मौसले, हविष्कृदधिदैवतं वागधियज्ञं पत्नी, कुकुटो वाग्, वर्षवृद्धꣳ शूर्पं, प्रति त्वा हविः, परापूतमपहतꣳ राक्षसे, वायुर्वो देवो वस्तण्डुला, धृष्टिरुपवेषोऽपाग्न आ देवयजमाग्नेये, ध्रुवमसि षण्णां कपालान्यग्ने ब्रह्माग्नेयं, धिषणासि दार्षदं, दिवः शम्या,

| | | | |
|---|---|---|---|
| | पृथिव्यास्त्वा० | ,, | हव्यम् |
| १२ | पवित्रे स्थो वैष्णव्यौ । | ,, | लिङ्गोक्ता |
| | सवितुर्वः प्रसव० | ,, | आपः । |
| | देवीरापो अग्रेगुवोऽग्रे० | ,, | ,, |
| १३ | युष्माऽइन्द्रो० प्रोक्षिता स्थ । | ,, | ,, |
| | अग्नये त्वा जुष्टं प्रोक्षाम्य० | ,, | लिङ्गोक्ता |
| | दैव्याय कर्मणे शुन्धध्वं० | ,, | पात्राणि |
| १४ | शर्मास्यवधूतꣳ रक्षो० | ,, | कृष्णाजिनम् |
| | अदित्यास्त्वगसि० | ,, | ,, |
| | अवधूतꣳ रक्षो० | ,, | रक्षः |
| | अद्रिरसि वानस्पत्यः । | ,, | उलूखलम् |
| | ग्रावासि पृथुबुध्नः० | ,, | ,, |
| १५ | अग्नेस्तनूरसि वाचो विसर्जनं० | ,, | हविः |
| | बृहद्ग्रावासि वानस्पत्यः । | ,, | मुसलम् |
| | स इदं देवेभ्यः० | ,, | ,, |
| | हविष्कृदेहि हविष्कृदेहि । | ,, | (अधिदैवतं) वाक्, (अधियज्ञं) पत्नी |
| १६ | कुक्कुटोऽसि मधुजिह्व० | ,, | वाक् |
| | वर्षवृद्धमसि । | ,, | शूर्पम् |
| | प्रति त्वा वर्षवृद्धं वेत्तु । | ,, | हविः |
| | परापूतꣳ रक्षः परापूताऽअरातयः । | ,, | रक्षः |
| | अपहतꣳ रक्षः । | ,, | ,, |
| | वायुर्वो विविनक्तु । | ,, | तण्डुलाः |
| | देवो वः सविता हिरण्यपाणिः० | ,, | ,, |
| १७ | धृष्टिरसि । | ,, | उपवेषः |
| | अपाग्ने अग्निमामादं जहि० | ,, | अग्निः |
| | आ देवयजं वह । | ,, | ,, |
| | ध्रुवमसि पृथिवीं दृꣳह० | ,, | कपालानि |
| १८ | अग्ने ब्रह्म गृभ्णीष्व० | ,, | अग्निः |

धिषणौपलं, धान्यमसि षण्णाꣳ हविर्महीनामाज्यम् ॥४॥ [ य०अ०१ मं० १४–२० ]

संवपामि हविः, समाप आपं, जनयत्यै त्वेदꣳ हविरिषे त्वाज्यं, घर्मोऽसि षण्णां पुरोडाशस्त्रिताय त्रयाणां त्रितो द्वित एकतः क्रमेणाददद इन्द्रस्य स्फ्यः, पृथिवि वेदि-र्व्रजं पुरीषं, वर्षतु वेदिर्बधान सावित्रमपाररुमररो आसुरे, द्रप्सस्ते वेदिर्गायत्रेण त्रीणि वैष्णवानि, सुक्ष्मा त्रयाणां वेदिः, पुराऽघशꣳसोऽपश्यच्चान्द्रमसीं त्रिष्टुभं, प्रोक्षणीः

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| [ अ.१।१४ ] | १९ | शर्मास्यव० अदित्या० | ,, | [ कृष्णाजिनम् । ] |
| | | धिषणासि पर्वती० | ,, | दृषत् |
| | | दिवः स्कम्भनीरसि । | ,, | शम्या |
| | | धिषणासि पार्वतेयी० | ,, | उपलः |
| | २० | धान्यमसि धिनुहि देवान् | ,, | हविः |
| | | महीनां पयोऽसि । | ,, | आज्यम् |
| [ अ.१।१० ] | २१ | देवस्य त्वा० | ,, | [ सविता । ] |
| | | संवपामि । | ,, | हविः |
| | | समाप ओषधीभिः ० | ,, | आपः |
| | २२ | जनयत्यै त्वा संयौमि । | ,, | हविः |
| | | इदमग्नेरिदमग्नीषोमयोः । | ,, | ,, |
| | | इषे त्वा । | ,, | आज्यम् |
| | | घर्मोऽसि विश्वायुरुरुप्रथा० | ,, | पुरोडाशः |
| | २३ | मा भेर्मा संविक्था० | ,, | ,, |
| | | त्रिताय त्वा । | ,, | त्रितः |
| | | द्विताय त्वा । | ,, | द्वितः |
| | | एकताय त्वा । | ,, | एकतः |
| [ अ.१।१० ] | २४ | देवस्य त्वा० | ,, | [ सविता । ] |
| | | आददेऽध्वरकृतं देवेभ्यः । | ,, | स्फ्यः |
| | | इन्द्रस्य बाहुरसि दक्षिणः० | ,, | ,, |
| | २५ | पृथिवि देवयजन्यास्ते मूलं० | ,, | वेदिः |
| | | व्रजं गच्छ गोष्ठानं । | ,, | पुरीषम् |
| | | वर्षतु ते द्यौः । | ,, | वेदिः |
| | | बधान देव सवितः परमस्यां० | ,, | सविता |
| | २६ | अपाररुं पृथिव्यै देवयजनाद्बध्यासं० | ,, | असुरः |
| | | अररो दिवं मा पप्तो० | ,, | ,, |
| | | द्रप्सस्ते द्यां मा स्कन्० | ,, | वेदिः |
| | २७ | गायत्रेण त्वा छन्दसा० | ,, | विष्णुः |

प्रैषो, द्विषत आभिचारिकमनिशितः स्रुवोऽनिशिता स्रुगदित्यै विष्णोर्योक्त्रमूर्जे त्रयाणामाज्यं, सवितुरापं, तेजोऽसि धामाज्यम् ॥ ५ ॥ [ य० अ० १ मं० २१–३१ ]

इति० संहितायां प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

कृष्णोऽसीध्मो, वेदिर्बर्हिर्लिङ्गोक्ते, अदित्या आपं, विष्णोः प्रास्तरमूर्णम्रदसं वेदिर्भुवपतये त्रीण्याग्नेयानि, गन्धर्वस्त्रयाणां परिधयो, वीतिहोत्रं विश्वावसुराग्नेयीं गायत्रीं, समिदाग्नेयं, सूर्यस्त्वा लिङ्गोक्तं, सवितुर्विधृती, ऊर्णम्रदसमा त्वा प्रास्तरे, घृताच्यसि

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| | | सुक्ष्मा चासि शिवा चासि० | ,, | वेदिः | |
| | २८ | पुरा क्रूरस्य विसृपो विरप्शिन्० | ,, अघशंसः । | चन्द्रमाः | त्रिष्टुप् |
| | | प्रोक्षणीरासादय । | ,, | ( प्रैषः ) | |
| | | द्विषतो वधोऽसि । | ,, | आभिचारिकम् | |
| [अ. १।७] | २९ | प्रत्युष्टꣳ० निष्टप्तꣳ० | ,, | [ रक्षः ] | |
| | | अनिशितोऽसि सपत्नक्षित्० | ,, | स्रुवः | |
| [अ० १।७] | | प्रत्युष्टꣳ रक्षः० | ,, | [ रक्षः ] | |
| | | अनिशितासि सपत्नक्षित्० | ,, | स्रुक् | |
| | ३० | अदित्यै रास्नासि । | ,, | योक्त्रम् | |
| | | विष्णोर्वेष्योऽसि । | ,, | ,, | |
| | | ऊर्जे त्वा दब्धेन त्वा० | ,, | आज्यम् | |
| | ३१ | सवितुस्त्वा प्रसव उत्पुना० | ,, | आपः | |
| | | तेजोऽसि शुक्रमस्यमृतमसि । | ,, | आज्यम् | |
| | | धाम नामासि प्रियं देवाना० | ,, | ,, | |

अथ० संहितायां द्वितीयोऽध्यायः ।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| १ | कृष्णोऽस्याखरेष्ठो० | परमेष्ठी प्राजापत्यः, देवाः प्राजापत्याः वा । | इध्मः | |
| | वेदिरसि बर्हिषे त्वा जुष्टां | ,, | लिङ्गोक्ता | |
| | बर्हिरसि स्रुग्भ्यस्त्वा० | ,, | ,, | |
| २ | अदित्यै व्युन्दनमसि । | ,, | आपः | |
| | विष्णो स्तुपोऽसि । | ,, | प्रस्तरः | |
| | ऊर्णम्रदसं त्वा स्तृणामि० | ,, | वेदिः | |
| | भुवपतये स्वाहा० | ,, | अग्निः | |
| ३ | गन्धर्वस्त्वा विश्वावसु० | ,, | परिधयः | |
| ४ | वीतिहोत्रं त्वा कवे० | ,, विश्वावसुः | अग्निः | गायत्री |
| ५ | समिदसि । | ,, | ,, | |
| | सूर्यस्त्वा पुरस्तात्पातु० | ,, | लिङ्गोक्ता | |
| | सवितुर्बाहू स्थ । | ,, | विधृती | |

त्रयाणां जुहूपभृद्ध्रुवाः क्रमेण, प्रियेण हविर्ध्रुवा असदन् पाहि मां वैष्णवे, अग्ने वाज-
जिदाग्नेयं, नमो दैवत्यं, स्वधा पित्र्यत्यं, सुयमे स्रुचावंघ्रिणा वैष्णवं, वसुमतीमाग्नेयमित
ऐन्द्रत्यं, संज्योतिषाज्यं, मयीदमाशीःप्रतिग्रहणमुपहूता द्यावापृथिव्यम् ॥ ६ ॥
[ य० अ० २ मं० १-११ ]

'ब्रह्मत्वं प्रतिष्ठान्तं' बृहस्पतिराङ्गिरसोऽपश्यदग्नेष्ट्वा प्राशित्रमेतं ते वैश्वदेवमेषा तेऽनु-
ष्टुबाग्नेय्यग्ने वाजजिदाग्नेयमग्नीषोमयोश्चत्वारि लिङ्गोक्तानि, वसुभ्यस्त्रयाणां परिधयः, सं-

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | ऊर्णम्रदसं० आ त्वा वसवो० | ,, | | | प्रस्तरः | |
| | ६ | घृताच्यसि जुहूर्नाम्ना० | ,, | | | जुहूः | |
| | | घृताच्यस्युपभृन्नाम्ना० | ,, | | | उपभृत् | |
| | | घृताच्यसि ध्रुवा नाम्ना० | ,, | | | ध्रुवाः | |
| | | प्रियेण धाम्ना प्रियꣳ सद० | ,, | | | हविः | |
| | | ध्रुवाऽअसदन्नृतस्य योनौ० | ,, | | | विष्णुः | |
| | | पाहि मां यज्ञन्यम्० | ,, | | | ,, | |
| | ७ | अग्ने वाजजिद्वाजं त्वा० | ,, | | | अग्निः | |
| | | नमो देवेभ्यः । | ,, | | | देवाः | |
| | | स्वधा पितृभ्यः । | ,, | | | पितरः | |
| | | सुयमे मे भूयास्तम् । | ,, | | | स्रुचौ | |
| | ८ | अस्कन्नमद्य देवेभ्य० | ,, | | | ,, | |
| | | अंघ्रिणा विष्णो मा त्वावक्रमिषम् । | ,, | | | विष्णुः | |
| | | वसुमतीमग्ने ते छायामुप० | ,, | | | अग्निः | |
| | | इतऽइन्द्रो वीर्यमकृणोत्० | ,, | | | इन्द्रः | |
| | ९ | अग्ने वेर्होत्रं० | ,, | | | ,, | |
| | | सं ज्योतिषा ज्योतिः । | ,, | | | आज्यम् | |
| | १० | मयीदमिन्द्रऽइन्द्रियं० | ,, | | | आशीः प्रतिग्रहणम् | |
| | | उपहूता पृथिवि मातोप० | ,, | | | पृथिवी | |
| | ११ | उपहूतो द्यौ० | ,, | | | द्यौः | |
| [ ब्रह्मत्वं— | | देवस्य त्वा० | ,, | बृहस्पतिः | आंगिरसः | [ सविता ] | |
| | | अग्नेष्ट्वास्येन प्राश्नामि । | ,, | ,, | ,, | प्राशित्रम् | |
| | १२ | एतं ते देव० | ,, | ,, | ,, | विश्वेदेवाः | |
| -ब्रह्मत्वं समाप्तं ] | १३ | मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य० | ,, | ,, | ,, | ,, | |
| | १४ | एषा तेऽअग्ने समित्० | ,, | | | अग्निः | अनुष्टुप् |
| | | अग्ने वाजजिद्वाजं त्वा० | ,, | | | ,, | |
| | १५ | अग्नीषोमयो० अग्नीषोमौ० | ,, | | | लिङ्गोक्ता | |

जानाथां व्यन्तु प्रास्तरे, मरुतां कपिर्बृहतीं प्रास्तरीमन्त्यः पाद आग्नेयो, यं परिधिं देवल आग्नेयीं त्रिष्टुभं विराड्रूपां यजुरन्तामग्नेः प्रियं यजुः, सꣳस्रवभागाः सोमशुष्मो वैश्वदेवीं त्रिष्टुभं यजुरन्ताꣳ, स्वाहा वाड्यजुर्घृताची स्रुचौ, यज्ञ नमः शूर्पं यवमान्कृषि-रुद्वालवान्धानान्तर्वानिति पञ्चार्षेयो यज्ञो देवताऽग्ने दब्धायो गार्हपत्योऽग्नये दक्षिणाग्निः, सरस्वत्यै लिङ्गोक्तं, वेदोऽसि वेदो, देवा मनसस्पतिर्वातदेवत्यां विराजꣳ, सं बर्हिर्लिङ्गोक्ता त्रिष्टुब्विराड्रूपा, कस्त्वा प्राजापत्यꣳ, रक्षसाꣳ राक्षसम्॥७॥ [य०अ०२मं०११-२३]

अथ याजमानँ— सं वर्चसा त्वाष्ट्री त्रिष्टुब्, दिवि विष्णुस्त्रीणि वैष्णवान्यस्मादन्ना-

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| | इन्द्राग्न्योरुज्जिति० | ,, | | लिङ्गोक्ता | |
| | इन्द्राग्नी तमपनुदतां० | ,, | | ,, | |
| १६ | वसुभ्यस्त्वा रुद्रेभ्यस्त्वा० | ,, | | परिधयः | |
| | संजानाथां० व्यन्तु वयोक्तꣳ० | ,, | | प्रस्तरः | |
| | मरुतां पृषतीर्गच्छ० | ,, | कपिः। | ,, | बृहती |
| | चक्षुष्पा अग्नेऽसि चक्षुर्मे पाहि। | ,, | ,, | अग्निः | ,, |
| १७ | यं परिधिं पर्यधत्था० | ,, | देवलः। | ,, | विराड्रूपा त्रिष्टुप् |
| | अग्नेः प्रियं पाथोऽपीतम्। | ,, | ,, | ,, | ( यजुरन्ताः ) |
| १८ | सꣳस्रवभागा स्थेषा० | ,, | सोमशुष्मः | विश्वेदेवाः | त्रिष्टुप् (यजुरन्ता) |
| | स्वाहा वाड्। | ,, | ,, | ,, | यजुः |
| १९ | घृताची स्थो० | ,, | | स्रुचौ | |
| | यज्ञ नमश्च त उप च० | शूर्पं, यवमान्, कृषिः, उद्वालवान्, धानान्तर्वान् | | यज्ञः | |
| २० | अग्नेऽदब्धायोऽशीतम | परमेष्ठी प्राजापत्यः देवाः प्राजापत्या वा | | गार्हपत्यः | |
| | अग्नये संवेशपतये स्वाहा० | ,, | | दक्षिणाग्निः | |
| | सरस्वत्यै यशोभगिन्यै स्वाहा। | ,, | | लिङ्गोक्ता | |
| २१ | वेदोऽसि येन त्वं देव वेद० | ,, | | वेदः | |
| | देवा गातुविदो गातुं वित्त्वा० | ,, | मनसस्पतिः | वातः | विराट् |
| २२ | संबर्हिरंक्तां हविषा घृतेन० | ,, | | लिङ्गोक्ता | विराड्रूपा त्रिष्टुप् |
| २३ | कस्त्वा विमुञ्चति स त्वा० | ,, | | प्रजापतिः | |
| | रक्षसां भागोऽसि। | ,, | | रक्षः | |
| "याजमानं"– २४ | सं वर्चसा पयसा० | ,, | | त्वष्टा | त्रिष्टुप् |
| २५ | दिवि विष्णुर्व्यक्रꣳस्त० | ,, | | विष्णुः | |
| | अस्मादन्नात्। | ,, | | भागः | |
| | अस्यै प्रतिष्ठायै। | ,, | | भूमिः | |

गोऽस्यै भूमिरगन्म देवथ्ं, सं ज्योतिषाहवनीयः, स्वयंभूः सूर्यस्य सौरे, अग्ने गृहपते गार्हपत्यः, सूर्यस्य सौरमग्न इदमाग्नेये ॥ ८ ॥ [ य० अ० २ मं० २४-२८ ]

पितृयज्ञः – प्रजापतेरार्षमग्नये सोमाय द्वे दैवे स्वाहाकारश्रुतेरपहता आसुरं, ये रूपाणि कव्यवाहनोऽग्निस्त्रिष्टुबत्रामी मदन्त पित्र्ये, नमो वः षड् लिङ्गोक्तानि, परे पित्र्ये, आधत्त पित्र्या गायत्र्यूर्जमापी विराट् ॥ ९ ॥ [ य० अ० २ मं० २९-३४ ]

इति० संहितायां द्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

अग्न्याधेयं-- प्रजापतेरार्षं देवानामग्नेर्गन्धर्वाणां वा, समिधाग्नेग्य्यश्चतस्रो गायत्र्यः, समिधा विरूप आङ्गिरसः, सुसमिद्धाय वसुश्रुतस्तं त्वा भरद्वाजो, भूर्भुवस्वस्तिस्रो महा-

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| | अगन्म स्वः । | ,, | देवाः | |
| | सं ज्योतिषाभूम । | ,, | आहवनीयः | |
| २६ | स्वयम्भूरसि० । सूर्यस्यावृत० | ,, | सूर्यः | |
| २७ | अग्ने गृहपते सुगृहपति० | ,, | गार्हपत्यः | |
| | सूर्यस्यावृतमन्वावर्ते । | ,, | सूर्यः | |
| २८ | अग्ने व्रतपते० इदमहं० | ,, | अग्निः | |

[ इति दर्शपूर्णमासेष्टिमन्त्राः समाप्ताः । अतः परं पिण्डपितृयज्ञमन्त्राः । ]

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| २९ | अग्नये कव्य०सोमाय पितृ० | प्रजापतिः | देवाः | |
| | अपहता रक्षाꣳसि वेदिषदः । | ,, | असुराः | |
| ३० | ये रूपाणि प्रतिमुञ्चमानाः० | ,, | कव्यवाहनोऽग्निः | त्रिष्टुप् |
| ३१ | अत्र पितरो० । अमीमदन्त० | ,, | पितरः | |
| ३२ | नमो वः पितरो रसाय० | ,, | लिङ्गोक्तानि | |
| | नमो वः पितरः पितरो० | ,, | पितरः | |
| ३३ | आधत्त पितरो गर्भं० | ,, | ,, | गायत्री |
| ३४ | ऊर्जं वहन्तीरमृतं० | ,, | आपः | विराट् |

[ इति पिण्डपितृयज्ञमन्त्राः समाप्ताः । ]

अथ० संहितायां तृतीयोऽध्यायः ।

[ अग्न्याधेयं अ० ३ मं० १—८ ]

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| | १ | समिधाग्निं ० | प्रजापतिः, देवाः, विरूप आंगिरसः अग्निः, गंधर्वा वा | अग्निः | गायत्री |
| | २ | सुसमिद्धाय शोचिषे० | ,, वसुश्रुतः | ,, | ,, |
| | ३ | तं त्वा समिद्भिरङ्गिरो० | ,, भरद्वाजः | ,, | ,, |
| | ४ | उप त्वाग्ने हविष्मती० | ,, | ,, | ,, |
| महाव्याहृतयः | ५ | भूः | ,, | ,, | |
| | | भुवः | ,, | वायुः | |
| | | स्वः | ,, | सूर्यः | |

व्याहृतयोऽग्निवायुसूर्यदेवत्याः क्रमेण, द्यौरिव यजमानाशीर्लिङ्गोक्तदेवताऽऽयं गौः सार्पराज्ञ्यस्तृचो गायत्रोऽग्निः परावररूपेण देवता ॥ १० ॥ [ अ० ३ मं० १–८ ]

अग्निहोत्रं– प्रजापतेरार्षमग्निर्ज्योतिः सप्त लिंगोक्तदेवता गायत्र्य आद्याः पञ्चैकपदा अग्निर्वर्चो द्वे तक्षाऽपश्यत्परां जीवलश्चैलकिः ॥ ११ ॥ [ अ० ३ मं० ९–१० ]

यजमानाग्न्युपस्थानं बृहद्देवानामार्षमुपप्रयन्त इत्यनुवाक आद्ये द्वे आग्नेय्यौ गायत्र्यावुपवत्या गोतमो राहूगणो, मूर्धन्वत्या विरूप, उभा वां भरद्वाज ऐन्द्राग्नीं त्रिष्टुभमयं ते देवश्रवा देववातश्च भारतावाग्नेयीमनुष्टुभमयमिह वामदेवो जगतीमस्य प्रत्नामवत्सारो गव्यां वाग्नेयीं वा पयोदेवत्यां वा गायत्रीं, तनूपा आग्नेयानीन्धाना आग्नेयी महापंक्तिस्त्र्यवसाना ॥ १२ ॥ [ अ० ३ । ११–१८ ]

---

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| | द्यौरिव भूम्ना पृथिवीव वरिम्णा० | ,, | ( यजमानाशीः ) लिङ्गोक्ता | |
| ६ | आयं गौः पृश्निरक्रमीत्० | ,, सर्पराज्ञी | अग्निः | गायत्री |
| ७ | अन्तश्चरति रोचनास्य० | ,, ,, | ,, | ,, |
| ८ | त्रिꣳशद्धाम विराजति० | ,, ,, | ,, | ,, |

[ इत्यग्न्याधेयमन्त्राः । ]

[ अथ अग्निहोत्रमन्त्राः— अ० ३ मं० ९—१० ]

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| ९ | अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा । | प्रजापतिः | लिङ्गोक्ता | एकपदा गायत्री |
| | सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा । | ,, | ,, | ,, |
| | अग्निर्वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा । | ,, तक्षा | ,, | ,, |
| | सूर्यो वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा । | ,, ,, | ,, | ,, |
| | ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा | ,, जीवलश्चैलकिः | ,, | ,, |
| १० | सजूर्देवेन सवित्रा सजू० | ,, | ,, | गायत्री |

[ इत्यग्निहोत्रमन्त्राः । ]

[ अथ यजमानाग्न्युपस्थानं बृहत् ( बृहदुपस्थानम् )— अ० ३ मं० ११—३६ ]

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| ११ | उपप्रयन्तोऽअध्वरं० | देवाः, गोतमो राहूगणः | अग्निः | ,, |
| १२ | अग्निर्मूर्धा दिवः ० | ,, विरूपः | ,, | ,, |
| १३ | उभा वामिन्द्राग्नी० | ,, भरद्वाजः | इन्द्राग्नी | त्रिष्टुप् |
| १४ | अयं ते योनिर्ऋत्वियो० | ,, देवश्रवादेववातौ भारतौ | अग्निः | अनुष्टुप् |
| १५ | अयमिह प्रथमोऽधायि० | ,, वामदेवः | ,, | जगती |
| १६ | अस्य प्रत्नामनुद्युतꣳ० | ,, अवत्सारः | गौः,अग्निः,पयः वा | गायत्री |
| १७ | तनूपाऽअग्नेऽसि० | ,, | अग्निः | |
| १८ | इन्धानास्त्वा शतꣳ हिमा० | ,, | ,, | महापंक्तिः ( त्र्यवसाना ) |

चित्रावसो रात्रिदेवत्यमृषयोऽपश्यन्, सं त्वमाग्नेयमन्ध स्थ रेवतीः सꣳहितेति त्रीणि गव्यान्युप त्वाग्नेयं तृचं गायत्रं मधुच्छन्दा वैश्वामित्रोऽग्ने त्वं चतस्रो द्विपदाऽऽग्नेयीर्बन्धुः, सुबन्धुः, श्रुतबन्धुर्विप्रबन्धुरेकैकश, इडे काम्या गव्ये, सोमानं ब्राह्मणस्पत्यं तृचं गायत्रं ब्रह्मणस्पतिर्मेधातिथिर्वा, महि त्रीणाꣳ सत्यधृतिर्वारुणिरादित्यदैवतं तृचं गायत्रं पथिस्वस्त्ययनं, कदाचनैन्द्रीं पथ्याबृहतीं मधुच्छन्दास्तत्सवितुर्विश्वामित्रः सावित्रीं गायत्रीं, परि ते वामदेव आग्नेयीमनिरुक्तां गायत्रीम् ॥ १३ ॥ [ अ० ३ मं० १८–३६ ]

क्षुल्लकोपस्थानमासुरेरार्षं भूर्भुवः स्वः, प्रवत्स्यदुपस्थानमागतोपस्थानं चादित्य-

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| | चित्रावसो स्वस्ति ते पारमशीय। | ,, ऋषयः | रात्रिः | |
| १९ | सं त्वमग्ने सूर्यस्य० | ,, | अग्निः | |
| २० | अन्ध स्थान्धो वो भक्षीय० | ,, | गौः | |
| २१ | रेवती रमध्वमस्मिन्योना० | ,, | ,, | |
| २२ | सꣳहितासि विश्वरूप्यूर्जा० | ,, | ,, | |
| | उप त्वाग्ने दिवेदिवे० | ,, मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः | अग्निः | गायत्री |
| २३ | राजन्तमध्वराणां० | ,, ,, | ,, | ,, |
| २४ | स नः पितेव सूनवे० | ,, ,, | ,, | ,, |
| २५ | अग्ने त्वं नोऽअन्तम० | ,, बन्धुः | ,, | द्विपदाविराट् |
| | वसुरग्निर्वसुश्रवा० | ,, सुबन्धुः | ,, | ,, |
| २६ | तं त्वा शोचिष्ठ दीदिवः० | ,, श्रुतबन्धुः ,, | ,, | ,, |
| | स नो बोधि श्रुधी हव० | ,, विप्रबन्धुः | ,, | ,, |
| २७ | इडऽएह्यदित एहि। काम्या० | ,, | गौः | |
| २८ | सोमानꣳ स्वरणं० | ,, ब्रह्मणस्पतिः, मेधातिथिःवा | ब्रह्मणस्पतिः | गायत्री |
| २९ | यो रेवान्योऽअमीवहा० | ,, ,, ,, | ,, | ,, |
| ३० | मा नः शꣳसोऽअररुषो० | ,, ,, ,, | ,, | ,, |
| [ अथ पथिस्वस्त्ययनम् — अ० ३ मं० ३१—३३ ] | | | | |
| ३१ | महि त्रीणामवोऽस्तु० | ,, सत्यधृतिर्वारुणिः | आदित्यः | गायत्री |
| ३२ | नहि तेषाममा चन० | ,, ,, | ,, | ,, |
| ३३ | ते हि पुत्रासोऽअदितेः० | ,, ,, | ,, | ,, |
| [ इति पथिस्वस्त्यनम् ] | | | | |
| ३४ | कदा चन स्तरीरसि० | ,, मधुच्छन्दाः | इन्द्रः | पथ्याबृहती |
| ३५ | तत्सवितुर्वरेण्यं० | ,, विश्वामित्रः | सविता | गायत्री |
| ३६ | परि ते दूडभो रथो० | ,, वामदेवः | अग्निः | गायत्री |
| [ इति बृहदुपस्थानं समाप्तम्। अथ क्षुल्लकोपस्थानम्— अ० ३ मं० ३७ पूर्वार्धः। ] | | | | ( अनिरुक्ता ) |
| ३७ | भूर्भुवः स्वः सुप्रजाः प्रजाभिः० | आसुरिः | अग्निः | |

स्यार्षं, नर्य गार्हपत्यः, शंस्याहवनीयोऽथर्य दक्षिणाग्निरागन्माहवनीयोऽनुष्टुबयमग्निर्न्यंकुसारिणी बृहती गार्हपत्यो,ऽयमग्निरन्वाहार्यपचनोऽनुष्टुब्, गृहा मा त्रिष्टुब् विराड्रूपा, येषामनुष्टुबुपहूता महापंक्तिस्त्र्यवसाना तिस्रोऽपि वास्तवीः शंयुर्बार्हस्पत्यः ॥ १४ ॥ [ अ०३ मं० ३७–४३ ]

चातुर्मास्यानि– प्रजापतेरार्षं, प्रघासिनो मारुती गायत्री, यद्ग्रामे मारुत्यनुष्टुबनिरुक्ता, मो षू णोऽगस्त्य ऐन्द्रामारुतीं विराजमक्रन्ननिरुक्ताग्नेय्यनुष्टुबवभृथ यज्ञदैवतं, पूर्णा दर्वि द्वे और्णवाभ ऐन्द्यावनुष्टुभावक्षन् द्वे गोतम ऐन्द्यौ पंक्ती, मनो नु मानसं तृचं

---

[ प्रवत्स्यदुपस्थानं आगतोपस्थानं च अ० ३ मं०३७ द्वितीयार्धात् मं० ४३ पर्यन्तम् । ]

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| | नर्य प्रजां मे पाहि । | आदित्यः | गार्हपत्यः | |
| | शंस्य पशून्मे पाहि । | ,, | आहवनीयः | |
| | अथर्य पितुं मे पाहि । | ,, | दक्षिणाग्निः | |
| ३८ | आगन्म विश्ववेदस० | ,, | आहवनीयः | अनुष्टुप् |
| ३९ | अयमग्निर्गृहपति० | ,, | गार्हपत्यः | बृहती ( न्यंकुसारिणी ) |
| ४० | अयमग्निः पुरीष्यो० | ,, | अन्वाहार्यपचनः | अनुष्टुप् |
| ४१ | गृहा मा बिभीत० | ,, शंयुः बार्हस्पत्यः | वास्तुः | त्रिष्टुप् ( विराड्रूपा ) |
| ४२ | येषामध्येति प्रवस० | ,, ,, | ,, | अनुष्टुप् |
| ४३ | उपहूता इह गाव० | ,, ,, | ,, | त्र्यवसाना महापंक्तिः |

[ इत्युपस्थानमन्त्राः समाप्ताः ]

[ चातुर्मास्यानि । अ० ३ मं० ४४—६३ ]

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| ४४ | प्रघासिनो हवामहे० | प्रजापतिः | मरुतः | गायत्री |
| ४५ | यद्ग्रामे यदरण्ये० | ,, | ,, | अनुष्टुप् अनिरुक्ता |
| ४६ | मो षू णऽइन्द्रात्र० | ,, अगस्त्यः | इन्द्रामरुतौ | विराट् |
| ४७ | अक्रन् कर्म कर्मकृतः० | ,, | अग्निः | अनिरुक्ताअनुष्टुप् |
| ४८ | अवभृथ निचुम्पुण० | ,, | यज्ञः | |
| ४९ | पूर्णा दर्वि परापत० | ,, और्णवाभः | इन्द्रः | अनुष्टुप् |
| ५० | देहि मे ददामि ते० | ,, ,, | ,, | ,, |
| ५१ | अक्षन्नमीमदन्त० | ,, गोतमः | इन्द्रः | पंक्तिः |
| ५२ | सुसन्दृशं त्वा वयं० | ,, ,, | ,, | ,, |
| ५३ | मनो न्वाह्वामहे० | ,, बन्धुः | मनः | गायत्री |
| ५४ | आ नऽएतु मनः पुनः० | ,, ,, | ,, | ,, |
| ५५ | पुनर्नः पितरो मनो० | ,, ,, | ,, | ,, |

बन्धुर्गायत्रं, वयशं सौमीं गायत्रीं बन्धुरेष ते द्वे रौद्रे, अवरुद्रशं रौद्र्यावेका पंक्तिरपरा ककुप्, त्र्यम्बकं द्वे अनुष्टुभौ पूर्वस्यां वसिष्ठ, एतदास्तारपंक्तिस्त्र्यायुषं नारायण उष्णिहं यजमानाशिषंशं शिवो नाम क्षौरं, निवर्तयामि लिङ्गोक्तदेवतमाशीःप्रायम् ॥ १५ ॥
[ अ० ३ मं० ४४--६३ ]

इति० संहितायां तृतीयोऽध्यायः ॥

अग्निष्टोमः– प्रजापतेरार्षमेदं द्वे अत्यष्टी त्र्यवसाने आद्यावर्धर्चौ देवयजनदेवत्याविमा आप ओषधे कुशतरुणशं, स्वधिते क्षुरमापो अस्मानापं, दीक्षातपसोर्वासो, महीनां नवनीतं, वृत्रस्याञ्जनं, चित्पतिर्द्वे प्राजापत्ये, देवो मा सावित्रमा वो दैव्यनुष्टुब्वाशीः,

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| ५६ | वयशूँ सोम व्रते तव | ,, ,, | सोमः | ,, |
| ५७ | एष ते रुद्र भागः सह० | ,, | रुद्रः | |
| | एष ते रुद्र भागऽआखुस्ते पशुः । | ,, | ,, | |
| ५८ | अव रुद्रमदीमह्यव० | ,, | ,, | पंक्तिः |
| ५९ | भेषजमसि भेषजं० | ,, | ,, | ककुप् |
| ६० | त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टि० | ,, वसिष्ठः | ,, | अनुष्टुप् |
| | ,, ,, ,, पति० | ,, | ,, | ,, |
| ६१ | एतत्ते रुद्रावसं० | ,, | ,, | आस्तारपंक्तिः |
| ६२ | त्र्यायुषं जमदग्नेः० | ,, नारायणः | यजमानाशीः | उष्णिक् |
| ६३ | शिवो नामासि० | ,, | क्षुरः | |
| ,, | निवर्तयाम्यायुषे० | ,, | लिङ्गोक्तदेवतं आशीःप्रायम् | |

[ इति चातुर्मास्यानि । ]

अथ० संहितायां चतुर्थोऽध्यायः ।

[ अथ अग्निष्टोमः । अ० ४ । १ — अ० ८ । ३२ पर्यन्तम् ]

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| १ | एदमगन्म देवयजनं० | प्रजापतिः | देवयजनम् | त्र्यवसाना अत्यष्टिः |
| | ऋक्सामाभ्याशूँ सन्तरन्तो० | ,, | ,, | ,, |
| | इमा आपः शमु मे सन्तु देवीः । | ,, | कुशतरुणम् | |
| | ओषधे त्रायस्व । | ,, | ,, | |
| | स्वधिते मैनशूँ हिशूँसीः । | ,, | क्षुरम् | |
| २ | आपोऽ अस्मान्मातरः० | ,, | आपः | |
| | दीक्षातपसोस्तनूरसि० | ,, | वासः | |
| ३ | महीनां पयोऽसि० | ,, | नवनीतम् | |
| | वृत्रस्याऽसि कनीनक० | ,, | अञ्जनम् | |
| ४ | चित्पतिर्मा० वाक्पतिर्मा० । | ,, | प्रजापतिः | |
| | देवो मा सविता० | ,, | सविता | |
| ५ | आ वो देवासऽईमहे० | ,, | आशीः | दैवी अनुष्टुप् |

स्वाहा यज्ञं चतुर्णां यज्ञ, आकूत्यै चतुर्णामौद्भ्रभणानामग्निरापो देवीलिङ्गोक्तदेवता विराट् ॥ १६ ॥ [ अ० ४ मं० १–७ ]

विश्वो देवस्य स्वस्त्यात्रेयः सावित्रीमनुष्टुभमृक्सामयोः कृष्णाजिने, शर्मासि कृष्णाजिनमूर्गस्यङ्गिरोभिर्दृष्टं मेखलꣳ, सोमस्य नीविर्विष्णोर्वास, इन्द्रस्य सुसस्याः कृष्णविषाणोच्छ्रयस्व दण्डो, व्रतं यज्ञो, दैवीं धीर्ये देवा वाक् प्राणोदानौ चक्षुःश्रोत्रमध्यात्ममग्निर्मित्रावरुणावादित्यो विश्वेदेवा अधिदैवतꣳ, श्वात्रा आपी जगतीयं ते लोष्टमपो मूत्रं पृथिव्या लोष्टमग्ने त्वमाग्नेय्यनुष्टुप्, पुनर्मन आग्नेयं, त्वमग्ने वत्स आग्नेयीं गायत्रीꣳ, रास्वेयत् सौम्यमेषा ते हिरण्याज्यदैवतं, जूरसि वाग्दैवतꣳ, शुक्रमसि हिरण्यं, चिदसि

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | ६ | स्वाहा यज्ञं मनसः० | ,, | | यज्ञः | |
| [ औद्भ्रभणानि | ७ | आकूत्यै प्रयुजेऽग्नये० | ,, | | अग्निः | |
| अ. ४ मं. ७ ] | | आपो देवीर्बृहती० | ,, | | लिङ्गोक्तदेवता | विराट् |
| | ८ | विश्वो देवस्य नेतु० | ,, | स्वस्त्यात्रेयः | सविता | अनुष्टुप् |
| | ९ | ऋक्सामयोः शिल्पे० | ,, | | कृष्णाजिने | |
| | | शर्मासि शर्म मे यच्छ० | ,, | | कृष्णाजिनम् | |
| | १० | ऊर्गस्याङ्गिरस्यूर्णम्रदा० | ,, | अङ्गिरसः | मेखला | |
| | | सोमस्य नीविरसि० | ,, | ,, | नीविः | |
| | | विष्णोः शर्मासि० | ,, | | वासः | |
| | | इन्द्रस्य योनिरसि। सुसस्याः० | ,, | ,, | कृष्णविषाणा | |
| | | उच्छ्रयस्व वनस्पते० | ,, | ,, | दण्डः | |
| | ११ | व्रतं कृणुताग्नि० | ,, | | यज्ञः | |
| | | दैवीं धियं मनामहे० | ,, | | धीः | शक्करी |
| | | ये देवा मनोजाता० | ,, | | (अध्यात्मं)वाक्,प्राणोदानौ, चक्षुः, श्रोत्रम् (अधिदैवतं)अग्निः,मित्रावरुणौ, आदित्यः, विश्वेदेवाः | |
| | १२ | श्वात्राः पीता भवत यूयमापो० | ,, | | आपः | जगती |
| | १३ | इयं ते यज्ञिया तनूः। | ,, | | लोष्टम् | |
| | | अपो मुञ्चामि न० | ,, | | मूत्रम् | |
| | | पृथिवीमा विशत० | ,, | | लोष्टम् | |
| | १४ | अग्ने त्वꣳ सु जागृहि० | ,, | | अग्निः | अनुष्टुप् |
| | १५ | पुनर्मनः पुनरायुर्म आगन्० | ,, | | ,, | |
| | १६ | त्वमग्ने व्रतपाऽअसि० | ,, | वत्सः | ,, | गायत्री |
| | | रास्वेयत्सोमा भूयो भर० | ,, | | सोमः | |

गौः सोमक्रयणी वाग्रूपाऽध्यारोपकल्पनया ॥ १७ ॥ [ अ० ४ मं० ८-२० ]

वस्व्यस्यनुष्टुब् बृहती वा सोमक्रयण्यास्तुतिरदित्या आज्यमस्मे षण्णां लिङ्गोक्ता देवताः, समख्ये पत्न्याशीरास्तारपंक्तिरेष ते लिङ्गोक्तदेवतमास्माकोऽसि सौम्यमभित्यꣳ सावित्र्यष्टिः, प्रजाभ्यस्त्वा प्रजास्त्वा शुक्रं त्वा सौम्यानि, सग्मेऽस्मे लिंगोक्ते, तपसोऽर्द्धेऽजाऽर्द्धे सोमो, मित्रो न इन्द्रस्य सौम्ये, स्वानादीनि धिष्ण्यनामानि, परिमाऽऽग्नेयी पुरस्ताद्बृहती, प्रतिपन्थामनुष्टुप्पथिदेवत्याऽदित्याः कृष्णाजिनमदित्यै सौम्यमस्तभ्नात्

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| १७ | एषा ते शुक्र तनू० | ,, | हिरण्यं, आज्यम् | |
| | जूरसि धृता मनसा० | ,, | वाक् | |
| १८ | तस्यास्ते सत्यसवसः० | ,, | ,, | |
| | शुक्रमसि चन्द्रमस्यमृत० | ,, | हिरण्यम् | |
| १९ | चिदसि मनासि० | ,, | वाग्रूपा गौः | |
| २० | अनु त्वा माता मन्यता० | ,, | ,, | |
| २१ | वस्व्यस्यदितिरस्यादित्यासि० | ,, | ,, | अनुष्टुप् बृहती वा |
| २२ | अदित्यास्त्वा मूर्धन्नाजिघर्मि० | ,, | आज्यम् | |
| | अस्मे रमस्वास्मे ते० | ,, | लिङ्गोक्ता | |
| २३ | समख्ये देव्या धिया | ,, | पत्न्याशीः | आस्तारपंक्तिः |
| २४ | एष ते गायत्रो भाग० | ,, | लिङ्गोक्ता | |
| | आस्माकोऽसि शुक्रस्ते० | ,, | सोमः | |
| २५ | अभि त्यं देवꣳ सवितार० | ,, | सविता | अष्टिः |
| | प्रजाभ्यस्त्वा । प्रजास्त्वानु प्राणन्तु० | ,, | सोमः | |
| २६ | शुक्रं त्वा शुक्रेण क्रीणामि० | ,, | ,, | |
| | सग्मे ते गोः । अस्मे ते चन्द्रा० । | ,, | लिंगोक्ता | |
| | तपसस्तनूरसि प्रजापतेर्वर्णः | ,, | अजा | |
| | परमेण पशुना क्रीयसे० | ,, | सोमः | |
| २७ | मित्रो नऽएहि सुमित्रधः । | ,, | ,, | |
| | इन्द्रस्योरुमाविश० | ,, | ,, | |
| | स्वान भ्राजाङ्घारे बम्भारे० | ,, | ( धिष्ण्यनामान्येतानि सप्त ) | |
| २८ | परि माग्ने दुश्चरितात्० | ,, | अग्निः | पुरस्ताद्बृहती |
| २९ | प्रति पन्थामपद्महि० | ,, | पन्थाः | अनुष्टुप् |
| ३० | अदित्यास्त्वगसि । | ,, | कृष्णाजिनम् | |
| | अदित्यै सदऽआसीद । | ,, | सोमः | |
| | अस्तभ्नाद्द्यां वृषभो० | ,, | वरुणः | त्रिष्टुप् |
| ३१ | वनेषु व्यन्तरिक्षं ततान० | ,, | ,, | ,, |

त्रिष्टुभौ वारुण्यौ, सूर्यस्यानुष्टुप् कृष्णाजिनमुस्रावूर्ध्वबृहत्यानडुही, भद्रो मे सौम्यं, नमो मित्रस्याभितपनः सूर्यः सौरीं जगतीं, वरुणस्य पञ्च वारुणानि, या ते सौमीं त्रिष्टुभं गोतमः ॥ १८ ॥ [ अ० ४ मं० २१--३७ ]

इति० संहितायां चतुर्थोऽध्यायः ।

अग्नेस्तनूरसि पञ्च वैष्णवानि, अग्नेः शकलं, वृषणौ दर्भतरुणके, उर्वश्यसि त्रयाणां लिङ्गोक्ता देवता, गायत्रेण त्रीण्याग्नेयानि, भवतं नः पंक्तिरग्नावग्निर्विराडेतयोर्निर्मथ्याहवनीयावग्नी देवते, आपतये वायव्यमनाधृष्टमाज्यमग्ने व्रतपा आग्नेयमंशुरंशुः प्रकृतिश्चतुरवसाना सौम्यन्त्योऽर्धर्चौ लिङ्गोक्तदेवतो, या ते त्रीण्याग्नेयानि, तप्तायनी चत्वारि पार्थिवानि, विदेदाग्नेयमग्ने अङ्गिरो योऽस्यामनु त्वा लिङ्गोक्तानि, सिंह्यसि त्रयाणां

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| ३२ | सूर्यस्य चक्षुरारोहाग्ने० | ,, | कृष्णाजिनम् | अनुष्टुप् |
| ३३ | उस्रावेतं धूर्षाहौ० | ,, | अनडुत् | ऊर्ध्वबृहती |
| ३४ | भद्रो मेऽसि प्रच्यवस्व० | ,, | सोमः | |
| ३५ | नमो मित्रस्य वरुणस्य चक्षसे० | ,, अभितपनः सूर्यः | सूर्यः | जगती |
| ३६ | वरुणस्योत्तम्भनमसि० | ,, | वरुणः | |
| ३७ | या ते धामानि हविषा यजन्ति० | ,, गोतमः | सोमः | त्रिष्टुप् |

अथ संहितायां पञ्चमोऽध्यायः ।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| १ | अग्नेस्तनूरसि० | प्रजापतिः | विष्णुः | |
| २ | अग्नेर्जनित्रमसि । | ,, | शकलम् | |
| | वृषणौ स्थ । | ,, | दर्भतरुणके | |
| | उर्वश्यसि। आयुरसि। पुरूरवा० | ,, | लिङ्गोक्ता | |
| | गायत्रेण त्वा छन्दसा मन्थामि० | ,, | अग्निः | |
| ३ | भवतं नः समनसौ० | ,, | निर्मथ्याहवनीयौ अग्नी | पंक्तिः |
| ४ | अग्नावग्निश्चरति प्रविष्ट० | ,, | ,, | विराट् |
| ५ | आपतये त्वा परिपतये० | ,, | वायुः | |
| | अनाधृष्टमस्यनाधृष्यं० | ,, | आज्यम् | |
| ६ | अग्ने व्रतपास्त्वे व्रतपा० | ,, | अग्निः | |
| ७ | अंशुरंशुष्टे देव० | ,, | सोमः | चतुरवसाना प्रकृतिः |
| | एष्टा रायः प्रेषे भगाय० । | ,, | लिङ्गोक्ता | |
| ८ | या तेऽअग्नेऽयःशया तनू० | ,, | अग्निः | |
| ९ | तप्तायनी मेऽसि वित्तायनी० | ,, | पृथिवी | |
| | विदेदग्निर्नभोनामाग्ने० | ,, | अग्निः | |
| | अग्नेऽअङ्गिरऽआयुना नाम्नेहि० । | ,, | लिंगोक्ता | |
| | योऽस्यां पृथिव्यामसि० | ,, | ,, | |
| | अनु त्वा देववीतये० | ,, | ,, | |

वेदिरिन्द्रघोषश्चतुर्णामुत्तरवेदिरिदमहमापꣳ, सिꣳह्यसि पञ्चानां वाग्, भूतेभ्यः स्रुग्, ध्रुवोऽसि परिधयस्त्रयाणामग्नेः संभारा गुल्गुल्वादयः ॥ १९ ॥ [ अ० ५ मं० १–१३ ]

युञ्जते श्यावाश्वः सावित्रीं जगतीमिदं विष्णुर्मेधातिथिर्वैष्णवीं गायत्रीमिरावती वसिष्ठस्त्रिष्टुभं, देवश्रुतावक्षधुरौ, प्राची स्वं गोष्ठमत्र हविर्धाने, विष्णोर्नु तिस्रो वैष्णव्यस्त्रिष्टुभ आद्ये द्वे यजुरन्ते, विष्णोर्नु प्र त दीर्घतमा औतथ्यो, विष्णो रराटं पञ्च वैष्णवान्याददेऽभ्रिरिदमहꣳ रक्षोघ्नं, बृहन्नौपरवाणीदमहं पञ्च लिङ्गोक्तानि, स्वराडस्यौपरवाणि चत्वारि, रक्षोहणो वः सप्त वैष्णवानि, यवोऽसि यवो, दिवे त्वौदुम्बरी, शुन्धन्तां पित्र्ये,

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| १० | सिꣳह्यसि सपत्नसाही० | ,, | वेदिः | |
| ११ | इन्द्रघोषस्त्वा वसुभिः० | ,, | उत्तरवेदिः | |
| | इदमहं तप्तं वार्बहिर्धा० | ,, | आपः | |
| १२ | सिꣳह्यसि स्वाहा० | ,, | वाक् | |
| | भूतेभ्यस्त्वा । | ,, | स्रुक् | |
| १३ | ध्रुवोऽसि पृथिवीं दृꣳह० | ,, | परिधयः | |
| | अग्नेः पुरीषमसि । | ,, | गुल्गुल्वादयः संभाराः | |
| १४ | युञ्जते मनऽउत युञ्जते० | ,, श्यावाश्वः | सविता | जगती |
| १५ | इदं विष्णुर्विचक्रमे० | ,, मेधातिथिः | विष्णुः | गायत्री |
| १६ | इरावती धेनुमती हि भूतꣳ० | ,, वसिष्ठः | ,, | त्रिष्टुप् |
| १७ | देवश्रुतौ देवेष्वाघोषतम् । | ,, | अक्षधुरौ | |
| | प्राची प्रेतमध्वरं० | ,, | हविर्धाने | |
| | स्वं गोष्ठमावदतं देवी० | ,, | ,, | |
| | अत्र रमेथां वर्ष्मन्पृथिव्याः । | ,, | ,, | |
| १८ | विष्णोर्नु कं वीर्याणि प्रवोचं० | ,, दीर्घतमा औतथ्यः | विष्णुः | त्रिष्टुप् |
| १९ | दिवो वा विष्णऽउत० | ,, | ,, | ,, |
| २० | प्र तद्विष्णु स्तवते वीर्येण० | ,, दीर्घतमा औतथ्यः | ,, | ,, |
| २१ | विष्णो रराटमसि० | ,, | ,, | |
| [ उपरवमन्त्राः–मं. २२–२५ ] | | | | |
| [अ.१मं.१० ] २२ | देवस्य त्वा सवितुः० | ,, | [ सविता ] | |
| | आददे नार्यसि० | ,, | अभ्रिः | |
| | इदमहꣳ रक्षसां ग्रीवा० | ,, | रक्षोघ्नम् | |
| | बृहन्नसि बृहद्रवाः० | ,, | उपरवाः | |
| २३ | रक्षोहणं वलगहनं वैष्णवीं | ,, | ,, | |
| | इदमहं तं वलगमुत्किरामि० | ,, | लिंगोक्ता | |
| २४ | स्वराडसि सपत्नहा० | ,, | उपरवाः | |
| २५ | रक्षोहणो वो वलगहनः० | ,, | विष्णुः | |

उद्दिवं पञ्चानामौदुम्बरी, घृतेन द्यावापृथिव्यमिन्द्रस्यैन्द्रं,परि त्वा मधुच्छन्दा अनिरुक्ता-मैन्द्रीमनुष्टुभमिन्द्रस्यैन्द्राणि त्रीणि, चतुर्थं वैश्वदेवम्॥२०॥ [य० अ०५ मं० १४–३०]

विभूरस्यष्टानां धिष्ण्या अग्नयः, सम्राडाहवनीयः, परिषद्यो बहिष्पवमानदेशो, नभोऽसि चात्वालो, मृष्टोऽसि शामित्र, ऋतधामौदुम्बरी, समुद्रोऽसि ब्रह्मासनमजोऽसि शालाद्वार्योऽहिरसि प्राजहितो, वागसि सद, ऋतस्य द्वार्ये, अध्वनाथ्ठ सूर्यो, मित्रस्य-र्त्विजोऽग्नयो धिष्ण्याः ॥ २१ ॥ [ य० अ० ५ मं० ३१–३४ ]

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| [अ.१मं.१०] | २६ | देवस्य त्वा सवितुः० | प्रजापतिः | सविता | |
| [अ.५ मं.२२ ] | | आददे नार्यसि० | ,, | अभ्रिः | |
| | | यवोऽसि यवयास्मद्द्वेषो० | ,, | यवः | |
| | | दिवे त्वान्तरिक्षाय त्वा पृथिव्यै त्वा । | ,, | औदुम्बरः | |
| | | शुन्धन्तां लोकाः पितृषदनाः० | ,, | पितरः | |
| | २७ | उद्दिवꣳ स्तभानान्तरिक्षं पृण० | ,, | औदुम्बरी | |
| | २८ | ध्रुवासि ध्रुवोऽयं यजमानो० | ,, | ,, | |
| | | घृतेन द्यावापृथिवी पूर्येथाम् । | ,, | द्यावापृथिवी | |
| | | इन्द्रस्य छदिरसि विश्वजनस्य० | ,, | इन्द्रः | |
| | २९ | परि त्वा गिर्वणो गिर० | ,, मधुच्छन्दाः | ,, | अनिरुक्ता अनुष्टुप् |
| | ३० | इन्द्रस्य स्यूरसीन्द्रस्य० | ,, | ,, | |
| | | वैश्वदेवमसि । | ,, | विश्वेदेवाः | |
| | ३१ | विभूरसि प्रवाहणो० | ,, | धिष्ण्या अग्नयः | |
| | ३२ | उशिगसि कवि० | ,, | ,, ,, | |
| | | सम्राडसि कृशानुः । | ,, | आहवनीयः | |
| | | परिषद्योऽसि पवमानः । | ,, | बहिष्पवमानदेशः | |
| | | नभोऽसि प्रतक्वा । | ,, | चात्वालः | |
| | | मृष्टोऽसि हव्यसूदनः । | ,, | शामित्रः | |
| | | ऋतधामासि स्वर्ज्योतिः । | ,, | औदुम्बरी | |
| | ३३ | समुद्रोऽसि विश्वव्यचाः । | ,, | ब्रह्मासनम् | |
| | | अजोऽस्येकपात् । | ,, | शालाद्वार्यः | |
| | | अहिरसि बुध्न्यः । | ,, | प्राजहितः | |
| | | वागस्यैन्द्रमसि सदोऽसि । | ,, | सदः | |
| | | ऋतस्य द्वारौ मा मा सन्ताप्तम् । | ,, | द्वार्ये | |
| | | अध्वनामध्वपते प्र मा तिर० | ,, | सूर्यः | |
| | ३४ | मित्रस्य मा चक्षुषेध्वम् । | ,, | ऋत्विजः | |
| | | अग्नयः सगराः सगरा स्थ० | ,, | धिष्ण्याः | |

ज्योतिरसि वैश्वदेवं, त्वꣳ सोम क्रतुर्भार्गवः सौमीं गायत्रीमनवसानां, जुषाणो अ-
प्तुदेवत्यैकपदा विराड् यजुरन्ताऽग्ने नयाऽगस्त्य आग्नेयीं त्रिष्टुभमयं नस्त्रिष्टुब्यजुरन्ता-
ग्नेय्युरु विष्णो वैष्णव्यनुष्टुब्यजुरन्ता, देव सवितः सावित्रमेतत्त्वꣳ सौम्यꣳ, स्वाहा नि-
र्लिङ्गोक्तदेवतमग्ने व्रतपा आग्नेयमत्यन्यान्वनस्पतिरोषधे कुशतरुणꣳ स्वधिते परशुर्द्यां
माऽतस्त्वं वनस्पतिः ॥ २२ ॥ [ य० अ० ५ मं० ३५--४३ ]

इति० संहितायां पञ्चमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

अग्रेणीः शकलं, देवस्त्वा यूपः, सुपिप्पलाभ्यश्चषालं, द्यामग्रेण यूपो, या ते दीर्घतमा
यूपदेवत्यां त्रिष्टुभं, ब्रह्मवनि ब्रह्म दृꣳह यूपदेवत्ये, विष्णोः कर्माणि द्वे मेधातिथिर्वै-

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| | ३५ | ज्योतिरसि विश्वरूपं० | प्रजापतिः | विश्वेदेवाः | |
| | | त्वꣳसोम तनूकृद्भ्यो० | ,, क्रतुर्भार्गवः | सोमः | अनवसाना गायत्री |
| | | जुषाणोऽअप्तुराज्यस्य वेतु स्वाहा । | ,, | अप्तुः | एकपदा विराट् |
| | ३६ | अग्ने नय सुपथा रायेऽअस्मान्० | ,, अगस्त्यः | अग्निः | त्रिष्टुप् |
| | ३७ | अयं नो अग्निर्वरिवस्कृणो० | ,, | ,, | यजुरन्ता ,, |
| | ३८ | उरु विष्णो विक्रमस्वोरु० | ,, | विष्णुः | ,, अनुष्टुप् |
| | ३९ | देव सवितरेष ते सोम० | ,, | सविता | |
| | | एतत्त्वं देव सोम० | ,, | सोमः | |
| | | स्वाहा निर्वरुणस्य पाशान्मुच्ये । | ,, | लिङ्गोक्ता | |
| | ४० | अग्ने व्रतपास्त्वे व्रतपा० | ,, | अग्निः | |
| [अ.५ मं.३८] | ४१ | उरु विष्णो विक्रमस्वोरु० | ,, | [ विष्णुः ] | |
| | ४२ | अत्यन्याँ२ऽअगां० | ,, | वनस्पतिः | |
| | | ओषधे त्रायस्व । | ,, | कुशतरुणम् | |
| | | स्वधिते मैनꣳ हिंसीः । | ,, | परशुः | |
| | ४३ | द्यां मा लेखीरन्तरिक्षं मा० | ,, | वनस्पतिः | |
| | | अतस्त्वं देव वनस्पते० | ,, | ,, | |

अथ० संहितायां षष्ठोऽध्यायः ।

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| [अ.५ मं.२६] | १ | देवस्य त्वा सवितुः० | प्रजापतिः । | [ सविता ] | |
| | २ | अग्रेणीरसि स्वावेश० | ,, | शकलम् | |
| | | देवस्त्वा सविता मध्वानक्तु । | ,, | यूपः | |
| | | सुपिप्पलाभ्यस्त्वौषधीभ्यः । | ,, | चषालम् | |
| | | द्यामग्रेणास्पृक्ष आन्तरिक्षं० | ,, | यूपः | |
| | ३ | या ते धामान्युश्मसि० | ,, दीर्घतमाः | ,, | त्रिष्टुप् |
| | | ब्रह्मवनि त्वा० ब्रह्म दृꣳह० | ,, | ,, | |
| | ४ | विष्णोः कर्माणि पश्यत० | ,, मेधातिथिः | विष्णुः | गायत्री |
| | ५ | तद्विष्णोः परमं पदं० | ,, ,, | ,, | ,, |

ष्णव्यौ गायत्र्यौ, परिवीर्यूपो, दिवः स्वरुरेष ते यूप, उपावीस्तृणमुप देवां लिङ्गोक्तमृ-तस्य त्वा पशुरग्नीषोमाभ्यां लिङ्गोक्तमद्भ्योऽपां पशुरापो देवीरापथ्ं, सं ते पशुर्घृतेन स्वरुशासौ, रेवति वाग्, वर्षो तृणथ्ं, स्वाहा दैवे॥ २३ ॥ [ य० अ०६ मं० १--११ ]

माहिर्भू रज्जुर्नमस्ते यज्ञो, देवीरापोऽर्द्धमापमर्द्धमाशीर्वाचं ते मनस्ते पशुः, शं लिङ्गोक्तमोषधे तृणथ्ं, स्वधितेऽसी रक्षसां लिङ्गोक्तं, निरस्तमिदमहथ्ं रक्षोहणी, घृतेन द्यावा-

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| | ६ | परिवीरसि परि त्वा० | प्रजापतिः | यूपः |
| | | दिवः सूनुरसि । | ,, | स्वरुः |
| | | एष ते पृथिव्याँल्लोक० | ,, | यूपः |
| | ७ | उपावीरसि । | ,, | तृणम् |
| | | उप देवान्दैवीर्विशः० | ,, | लिङ्गोक्ता |
| | ८ | रेवती रमध्वं बृहस्पते० | ,, | ,, |
| | | ऋतस्य त्वा देवहविः० | ,, | पशुः |
| [अ.१।मं.१०] | ९ | देवस्य त्वा सवितुः० | ,, | [ सविता ] |
| | | अग्नीषोमाभ्यां त्वा० | ,, | लिङ्गोक्ता ( अग्नीषोमौ ) |
| | | अद्भ्यस्त्वौषधीभ्योऽनु त्वा० | ,, | पशुः |
| | १० | अपां पेरुरसि । | ,, | ,, |
| | | आपो देवीः स्वदन्तु० | ,, | आपः |
| | | सं ते प्राणो वातेन गच्छता० | ,, | पशुः |
| | ११ | घृतेनाक्तौ पशूᳪस्त्रायेथाम् । | ,, | स्वरुशासौ |
| | | रेवति यजमाने प्रियं धा० | ,, | वाक् |
| | | वर्षो वर्षीयसि यज्ञे यज्ञपतिं धाः। | ,, | तृणं |
| | | स्वाहा देवेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा । | ,, | देवाः |
| | १२ | माहिर्भूर्मा पृदाकुः । | ,, | रज्जुः |
| | | नमस्त आतानानर्वा प्रेहि० | ,, | यज्ञः |
| | १३ | देवीरापः शुद्धा वोढ्वᳪ० | ,, | आपः |
| | | सुपरिविष्टा वयं परिवेष्टारो० | ,, | आशीः |
| | १४ | वाचं ते शुन्धामि० | ,, | पशुः |
| | १५ | मनस्त आप्यायतां० | ,, | ,, |
| | | शमहोभ्यः । | ,, | लिङ्गोक्ता ( सुखं ) |
| | | ओषधे त्रायस्व । | ,, | तृणम् |
| | | स्वधिते मैनᳪ हिᳪसी । | ,, | असिः |
| | १६ | रक्षसां भागोऽसि । | ,, | लिङ्गोक्ता ( रक्षः ) |
| | | निरस्तᳪ रक्षः | ,, | ( रक्षः ) |
| | | इदमहᳪ रक्षोऽभितिष्ठामि० | ,, | ,, |

पृथिव्यं, वायो वायव्यमग्निराज्यस्याग्नेयꣳ, स्वाहाकृते वपाश्रपण्याविदमाप आपी महापंक्तिस्त्र्यवसाना, पावमानश्चान्त्यः पादः, सं ते हृदयꣳ, रेडसि वसा, प्रयुतं लिङ्गोक्तं, घृतं वैश्वदेवं, दिशः पञ्च दिश्यान्यैन्द्रः प्राणः पश्वङ्गप्राणदानं लिङ्गोक्तं, देवस्त्वाष्ट्री त्रिष्टुप् ॥ २४ ॥ [ य० अ०६ मं० १२--२० ]

समुद्रं लिङ्गोक्तानि द्वादश, दिवं ते स्वरुर्मापो हृदयशूलं, धाम्नोधाम्नो वारुणं, यदाहुर्वारुणी गायत्र्यनवसाना, सुमित्रिया न आपꣳ, हविष्मतीर्लिङ्गोक्तदेवताऽनुष्टुबग्नेर्वश्चत्वार्यापान्यमूरार्पीं गायत्रीं मेधातिथिर्हृदे सौम्यनुष्टुप्, सोम राजन्त्सौम्ये, शृणोतु लिङ्गोक्तदेवता त्रिष्टुब्, देवीराप आपी पंक्तिः, कार्षिराज्यमनुष्टुप्, समुद्रस्य समाप

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| | घृतेन द्यावापृथिवी० | प्रजापतिः | द्यावापृथिवी | |
| | वायो वेस्तोकानाम् । | ,, | वायुः | |
| | अग्निराज्यस्य वेतु स्वाहा । | ,, | अग्निः | |
| | स्वाहाकृते उर्ध्वनभसं० | ,, | वपाश्रपण्यौ | |
| १७ | इदमापः प्र वहतावद्यं० | ,, | आपः | महापंक्तिस्त्र्यवसाना |
| | आपो मा तस्मादेनसः० | ,, | पवमानः | ,, ,, |
| १८ | सं ते मनो मनसा० | ,, | हृदयम् | |
| | रेडस्यग्निष्ट्वा श्रीणा० | ,, | वसा | |
| | प्रयुतं द्वेषः । | ,, | लिङ्गोक्ता ( द्वेषः ) | |
| १९ | घृतं घृतपावानः पिबत० | ,, | विश्वेदेवाः | |
| | दिशः प्रदिश आदिश० | ,, | दिशः | |
| २० | ऐन्द्रः प्राणोऽअङ्गेऽअङ्गे० | ,, | लिङ्गोक्ता ( प्राणः ) | |
| | देव त्वष्टर्भूरि ते० | ,, | त्वष्टा | त्रिष्टुप् |
| २१ | समुद्रं गच्छ स्वाहा० | ,, | लिंगोक्ताः (समुद्रादीनि) | |
| | दिवं ते धूमो गच्छतु० | ,, | स्वरुः | |
| २२ | मापो मौषधीर्हिꣳसीः । | ,, | हृदयशूलम् | |
| | धाम्नो धाम्नो राजँस्ततो वरुण० | ,, | वरुणः | |
| | यदाहुरघ्न्या इति वरुणेति० | ,, | ,, | गायत्री अनवसाना |
| | सुमित्रिया न आप ओषधयः सन्तु० | ,, | आपः | |
| २३ | हविष्मतीरिमाऽआपो० | ,, | लिङ्गोक्ताः (अबादयः) | अनुष्टुप् |
| २४ | अग्नेर्वोऽपन्नगृहस्य० | ,, | आपः | |
| | अमूर्याऽउप सूर्य० | ,, मेधातिथिः | ,, | गायत्री |
| २५ | हृदे त्वा मनसे त्वा० | ,, | सोमः | अनुष्टुप् |
| २६ | सोम राजन्विश्वास्त्वं प्रजा० | ,, | ,, | |
| | शृणोत्वग्निः समिधा हवं मे | ,, | लिङ्गोक्ताः (अग्न्यादयः) | त्रिष्टुप् |

आपे, यमग्ने मधुच्छन्दा आग्नेयीं गायत्रीमाददे ग्रावा, निग्राभ्या आपमिन्द्राय त्वा पञ्च सौम्यानि, यत्ते सौमी विपरीता बृहती, श्वात्राः पथ्या बृहती, मा भेः सौम्यमर्द्धं द्यावापृथिव्यमर्द्धं, प्रागपाक्सौम्युष्णिक्, त्वमङ्ग गोतम ऐन्द्रीं पथ्याबृहतीम् ॥ २५ ॥
[ य० अ०६ मं० २१–३७ ]

इति० संहितायां षष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥

वाचस्पतये प्राणदेवत्या विराण्, मधुमतीर्लिङ्गोक्तं, यत्ते सौम्यꣳ, स्वाहोरु यजुषी लिङ्गोक्ते, स्वाङ्कृतोऽस्युपाꣳशुर्देवेभ्यस्त्वा दैवं, देवाꣳशो लिङ्गोक्तमाभिचारिकं, प्राणाय ग्रहो, व्यानायोपाꣳशुसवन, उपयामगृहीतोऽस्यन्तरैन्द्रमन्तस्ते मघवद्देवत्या त्रिष्टुबुदानाय

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| | २७ | देवीरापोऽअपां नपाद्यो व० | प्रजापतिः | आपः | पंक्तिः |
| | २८ | कार्षिरसि। | ,, | आज्यम् | अनुष्टुप् |
| | | समुद्रस्य त्वाक्षित्या उन्नयामि। | ,, | आपः | ,, |
| | | समापोऽअद्भिरग्मत० | ,, | ,, | ,, |
| | २९ | यमग्ने पृत्सु मर्त्यमवा० | ,, मधुच्छन्दाः | अग्निः | गायत्री |
| [अ. १। १०] | ३० | देवस्य त्वा सवितुः० | ,, | [ सविता ] | |
| | | आददे रावासि० | ,, | ग्रावा | |
| | | निग्राभ्या स्थ देवश्रुत० | ,, | आपः | |
| | ३१ | मनो मे तर्पयत० | ,, | | |
| | ३२ | इन्द्राय त्वा वसुमते० | ,, | सोमः | |
| | ३३ | यत्ते सोम दिवि ज्योति० | ,, | ,, | विपरीता बृहती |
| | ३४ | श्वात्रा स्थ वृत्रतुरो० | ,, | ( निग्राभ्याः ) | पथ्या बृहती |
| | ३५ | मा भेर्मा संविक्था ऊर्जं धत्स्व। | ,, | सोमः | |
| | | धिषणे वीड्वी सती वीडयेथा० | ,, | द्यावापृथिवी | |
| | ३६ | प्रागपागुदगधरा० | ,, | सोमः | उष्णिक् |
| | ३७ | त्वमङ्ग प्रशꣳसिषो० | ,, गोतमः | इन्द्रः | पथ्या बृहती |

अथ० संहितायां सप्तमोऽध्यायः।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| १ | वाचस्पतये पवस्व० | प्रजापतिः | प्राणः | विराट् |
| २ | मधुमतीर्न इषस्कृधि। | ,, | लिङ्गोक्ता | |
| | यत्ते सोमादाभ्यं नाम० | ,, | सोमः ( अग्निः, रक्षः ) | |
| | स्वाहा। उर्वन्तरिक्षमन्वेमि। | ,, | लिङ्गोक्ता | |
| ३ | स्वांकृतोऽसि विश्वेभ्यऽइन्द्रियेभ्यो० | ,, | उपांशुः ( ग्रहः ) | |
| | देवेभ्यस्त्वा मरीचिपेभ्यः। | ,, | देवाः | |
| | देवाꣳशो यस्मै त्वेडे० | ,, | लिङ्गोक्तं ( सोमांशुः ) | |
| | प्राणाय त्वा। | ,, | ग्रहः | |
| | व्यानाय त्वा। | ,, | उपांशुसवनः | |

ग्रह, आ वायो वसिष्ठो वायव्यां त्रिष्टुभमिन्द्रवायू मधुच्छन्दा ऐन्द्रवायवीं गायत्रीमयं वां गृत्समदो मैत्रावरुणीᳬं, राया वयं त्रसदस्युस्त्रिष्टुभं, या वां मेधातिथिराश्विनीं गायत्रीं, तं प्रत्नथाऽवत्सारः काश्यपो वैश्वदेवीं जगतीमच्छिन्नस्य सौम्यᳬं, सा प्रथमैन्द्री त्रिष्टुप्, तृम्पन्त्वयाडग्नील्लिङ्गोक्ते ॥ २६ ॥ [ य० अ० ७ मं० १-१५ ]

अयं वेनो वेनस्य त्रिष्टुप् सोमस्तुतिरधिदैवतमधियज्ञं च, मनो न त्रिष्टुप्सोमस्तुतिरधियज्ञानुवादिन्यपमृष्टः शण्डोऽपमृष्टो मर्क आभिचारिके, देवास्त्वा शुक्रामन्थिनावनाधृष्टासि दक्षिणोत्तरवेदिश्रोण्यौ, सुवीरः सुप्रजाः शुक्रामन्थिनौ, निरस्तो द्वे आभि-

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| | ४ | उपयामगृहीतोऽस्यन्तर्यच्छ० | प्रजापतिः | इन्द्रः | |
| | ५ | अन्तस्ते द्यावापृथिवी० | ,, | मघवा | त्रिष्टुप् |
| [अ. ७ मं. ३] | ६ | स्वांकृतोऽसि विश्वेभ्य० | ,, | [ उपांशुः (ग्रहः) ] | |
| ,, | | देवेभ्यस्त्वा मरीचिपेभ्यः | ,, | [ देवाः ] | |
| | | उदानाय त्वा । | ,, | ग्रहः | |
| | ७ | आ वायो भूष शुचिपा० | ,, वसिष्ठः | वायुः | त्रिष्टुप् |
| | ८ | इन्द्रवायूऽइमे सुता० | ,, मधुच्छन्दाः | इन्द्रवायू | गायत्री |
| | ९ | अयं वां मित्रावरुणा० | ,, गृत्समदः | मित्रावरुणौ | ,, |
| | १० | राया वयᳬं ससवाᳬंसो मदेम० | ,, त्रसदस्युः | ,, | त्रिष्टुप् |
| | ११ | या वां कशा मधुमत्यश्विना० | ,, मेधातिथिः | अश्विनौ | गायत्री |
| | १२ | तं प्रत्नथा पूर्वथा विश्वथेमथा० | ,, अवत्सारःकाश्यपः | विश्वेदेवाः | जगती |
| | १३ | सुवीरो वीरान्प्रजनयन्० | ,, | शुक्रम् | |
| | | निरस्तः शण्डः० | ,, | आभिचारिकम् | |
| | | शुक्रस्याधिष्ठानमसि । | ,, | शकलम् | |
| | १४ | अच्छिन्नस्य ते देव सोम० | ,, | सोमः | |
| | | सा प्रथमा संस्कृति० | ,, | इन्द्रः | त्रिष्टुप् |
| | १५ | स प्रथमो बृहस्पति० | ,, | ,, | ,, |
| | | तृम्पन्तु होत्रा मध्वा० | ,, | लिङ्गोक्ता | ,, |
| | | अयाडग्नीत् । | ,, | ,, | |
| | १६ | अयं वेनश्चोदयत्पृश्निगर्भा० | ,, | वेनः ( सोमः ) | त्रिष्टुप् |
| | १७ | मनो न येषु हवनेषु० | ,, | ,, | ,, |
| | | अपमृष्टो मर्कः । | ,, | आभिचारिकं | |
| | | देवास्त्वा मन्थिपाः० | ,, | शुक्रामन्थिनौ | |
| | | अनाधृष्टासि । | ,, | दक्षिणोत्तरवेदिश्रोण्यौ | |
| | १८ | सुप्रजाः प्रजाः प्रजनयन्० | ,, | मन्थी | |
| | | निरस्तो मर्कः । | ,, | आभिचारिकम् | |

चारिके, शुक्रस्य मन्थिनः शकलं, ये देवासः परुच्छेपो वैश्वदेवीं त्रिष्टुभमाग्रयणोऽसि लिङ्गोक्तदेवतम् ॥ २७ ॥ [ य० अ० ७ मं० १६–२० ]

सोमः पवते वैश्वदेवमिन्द्राय त्वा पञ्च लिङ्गोक्तानि, मूर्द्धानं भरद्वाजो वैश्वानरीं त्रिष्टुभं, ध्रुवोऽसि ध्रुवो, ध्रुवं ध्रुवेण बृहती पूर्वोऽर्द्धर्चो ध्रौव उत्तर ऐन्द्रो, यस्ते देवश्रवाः सौमीं त्रिष्टुभं यजुरन्तां, देवानां चात्वालदेवतं, प्राणाय मे लिङ्गोक्तदेवतान्येकादश, कोऽसि प्राजापत्योष्णिग्वर्धमाना, मघवे त्वा लिङ्गोक्तदेवतानि त्रयोदश ॥२८॥ [ य० अ० ७ मं० २१–३० ]

इन्द्राग्नी विश्वामित्र ऐन्द्राग्नीं गायत्रीमा घ त्रिशोक आग्नेन्द्रीमोमासो मधुच्छन्दा वैश्वदेवीं, विश्वे देवासो गृत्समद, इन्द्र मरुत्वश्चतस्रो विश्वामित्र ऐन्द्रामारुतीस्त्रिष्टुभो,

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| | मन्थिनोऽधिष्ठानमसि । | प्रजापतिः । | शकलम् | |
| १९ | ये देवासो दिव्येकादश स्थ० | ,, परुच्छेपः | विश्वेदेवाः | त्रिष्टुप् |
| २० | उपयामगृहीतोऽस्याग्रयणोऽसि० | ,, | लिङ्गोक्ता (आग्रयणः) | |
| २१ | सोमः पवते सोमः पवतेऽस्मै० | ,, | विश्वेदेवाः | |
| २२ | उपयामगृहीतोऽसीन्द्राय त्वा० | ,, | लिंगोक्ता ( ग्रहः ) | |
| २३ | मित्रावरुणाभ्यां त्वा देवाव्यं० | ,, | ,, ,, | |
| २४ | मूर्धानं दिवोऽअरतिं पृथिव्या० | ,, भरद्वाजः | वैश्वानरः | त्रिष्टुप् |
| २५ | उपयामगृहीतोऽसि ध्रुवोऽसि० | ,, | ध्रुवः | |
| | ध्रुवं ध्रुवेण मनसा० | ,, | ,, | बृहती |
| | अथा नऽइन्द्र इद्विशो० | ,, | इन्द्रः | ,, |
| २६ | यस्ते द्रप्सः स्कन्दति० | ,, देवश्रवाः | सोमः | (यजुरन्ता) त्रिष्टुप् |
| | देवानामुत्क्रमणमसि । | ,, | चात्वालः | |
| २७ | प्राणाय मे वर्चोदा वर्चसे० | ,, | लिंगोक्ता(उपांशुसवनादयः) | |
| २८ | आत्मनो मे वर्चोदा० | ,, | ,, ( आग्रयणादयः ) | |
| २९ | कोऽसि कतमोऽसि० | ,, | प्रजापतिः | उष्णिक् |
| ३० | उपयामगृहीतोऽसि मघवे त्वा० | ,, | लिंगोक्ता ( ग्रहाः ) | |
| ३१ | इन्द्राग्नीऽआगतꣳ सुतं० | ,, विश्वामित्रः | इन्द्राग्नी | गायत्री |
| ३२ | आ घा येऽअग्निमिन्धते० | ,, त्रिशोकः | अग्नीन्द्रौ | ,, |
| ३३ | ओमासश्चर्षणीधृतो० | ,, मधुच्छन्दाः | विश्वेदेवाः | ,, |
| ३४ | विश्वे देवास आगत० | ,, गृत्समदः | ,, | ,, |
| ३५ | इन्द्र मरुत्व इह पाहि सोमं० | ,, विश्वामित्रः | इन्द्रामरुतौ | त्रिष्टुप् |
| ३६ | मरुत्वन्तं वृषभं वावृधानं० | ,, ,, | ,, | ,, |
| | उपयामगृहीतोऽसि मरुतां त्वौजसे। | ,, | मरुत्वान् | |
| ३७ | सजोषा इन्द्र सगणो मरुद्भिः। | ,, ,, | इन्द्रामरुतौ | ,, |

मरुतां त्वा यजुर्मरुत्वतीयं, महाँ२ऽइन्द्रो भरद्वाजो माहेन्द्रीं त्रिष्टुभं, य ओजसा वत्सो गायत्रीमुदु त्यं प्रस्कण्वः सौरीं गायत्रीं, चित्रं कुत्स आङ्गिरसस्त्रिष्टुभꣳ, रूपेण वो दक्षिणाश्चतुर्णां, ब्राह्मणमद्य लिङ्गोक्तदेवतान्यष्टौ ॥ २९ ॥ [ य०अ०७ मं०३१-४८ ]

इति० संहितायां सप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥

विष्णो वैष्णवं, कदाचनादित्यदेवत्ये बृहत्यौ, यज्ञो देवानां कुत्सस्त्रिष्टुभं, विवस्वन्यजुः, श्रदस्मै जगत्याशीर्वामद्य भरद्वाजो बार्हस्पत्यः सावित्रीं त्रिष्टुभꣳ, सावित्रोऽसि सावित्रꣳ, सुशर्मासि वैश्वदेवं, बृहस्पतिसुतस्य लिङ्गोक्तमहं प्रजापतिरूपेणात्मा देवता

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| | ३८ | मरुत्वाँ२ऽइन्द्र वृषभो० | प्रजापतिः। विश्वामित्रः | इन्द्रामरुतौ | त्रिष्टुप् |
| | ३९ | महाँ२ऽ इन्द्रो नृवदा० | ,, भरद्वाजः | महेन्द्रः | ,, |
| | ४० | महाँ२ऽ इन्द्रो यऽओजसा० | ,, वत्सः | ,, | गायत्री |
| | ४१ | उदु त्यं जातवेदसं० | ,, प्रस्कण्वः | सूर्यः | ,, |
| | ४२ | चित्रं देवानामुदगादनीकं० | ,, कुत्स आंगिरसः | ,, | त्रिष्टुप् |
| [ अ. ५।३६ ] | ४३ | अग्ने नय सुपथा राये० | ,, अगस्त्यः | [ अग्निः ] | ,, |
| [ अ. ५।३७ ] | ४४ | अयं नो अग्निर्वरिव० | ,, | ,, | ,, |
| | ४५ | रूपेण वो रूपमभ्यागां० | ,, | दक्षिणा | |
| | ४६ | ब्राह्मणमद्य विदेयं० | ,, | लिंगोक्ता ( ब्राह्मणः ) | |
| | ४७ | अग्नये त्वा मह्यं० | ,, | ,, | |
| | | रुद्राय त्वा मह्यं० | ,, | ,, | |
| | | यमाय त्वा मह्यं० | ,, | ,, | |
| | ४८ | कोऽदात्कस्मा अदात्० | ,, | ,, ( कामः ) | |

अथ० संहितायामष्टमोऽध्यायः।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| १ | उपयाम०ऽस्यादित्येभ्यस्त्वा० | प्रजापतिः | ( सोमः ) | |
| | विष्णऽउरुगायैष० | ,, | विष्णुः | |
| २ | कदाचन स्तरीरसि० | ,, | आदित्यः | बृहती |
| ३ | कदाचन प्रयच्छस्युभे० | ,, | ,, | ,, |
| ४ | यज्ञो देवानां प्रत्येति० | ,, कुत्सः | ,, | त्रिष्टुप् |
| ५ | विवस्वन्नादित्यैष ते० | ,, | ,, | |
| | श्रदस्मै नरो वचसे दधातन० | ,, | आशीः ( नरः वा ) | जगती |
| ६ | वाममद्य सवितर्वाममु श्वो० | ,, भरद्वाजोबार्हस्पत्यः | सविता | त्रिष्टुप् |
| ७ | उपयाम० सावित्रोऽसि० | ,, | सविता | |
| ८ | ,, सुशर्मासि० | ,, | विश्वेदेवाः | |
| ९ | ,, बृहस्पतिसुतस्य० | ,, | लिंगोक्ता ( सोमः ) | |
| | अहं परस्तादहमवस्तात्० | ,, | आत्मा प्रजापतिरूपेण | त्रिष्टुप् |

त्रिष्टुबग्ना३इ पत्नीवन्नाग्नेयं, प्रजापतिः प्राजापत्यथं, हरिरस्यृक्सामे, हर्योर्यस्ते लिङ्गोक्ते, देवकृतस्याग्नेयानि षट् ॥ ३० ॥ [ य० अ०८ मं० १–१३ ]

समिन्द्राऽत्रिर्वैश्वदेवीं त्रिष्टुभं, धाता लिङ्गोक्तबहुदेवत्या, सुगा वो दैवी, याँ२ऽ आवहो वयमाग्नेय्यौ, यज्ञ यज्ञमेष ते लिङ्गोक्ते यजुषी, उरुथं हि शुनःशेपो वारुणीं त्रिष्टुभं, नमो वारुणमग्नेरनीकमाग्नेयी त्रिष्टुप्, समुद्रे ते सौमी विराड्, देवीरापः पंक्तिर्बृहती वा पूर्वोऽर्द्धर्च आप उत्तरः सौम्यो, देवानामाग्नेयमेजतु त्र्यवसाना महापंक्तिर्यस्यैते वशा,

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| | १० | अग्ना३ ऽ इ पत्नीवन्० | प्रजापतिः | अग्निः | |
| | | प्रजापतिर्वृषासि० | ,, | प्रजापतिः | |
| | ११ | उपयाम० हरिरसि० | ,, | ऋक्सामे | |
| | | हर्योर्धाना: स्थ० | ,, | लिंगोक्ता (धानाः) | |
| | १२ | यस्तेऽअश्वसनिर्भक्षो० | ,, | ,, (भक्षणीयं द्रव्यम्) | |
| | १३ | देवकृतस्यैनसोऽवयजन० | ,, | अग्निः | |
| [अ.२।२४] | १४ | सं वर्चसा पयसा० | ,, | त्वष्टा | त्रिष्टुप् |
| | १५ | समिन्द्र णो मनसा० | ,, अत्रिः | विश्वेदेवाः | त्रिष्टुप् |
| [अ.२।२४] | १६ | सं वर्चसा पयसा० | ,, | त्वष्टा | ,, |
| | १७ | धाता रातिः सवितेदं जुषन्ता० | ,, | लिङ्गोक्ताः (धात्रादयः) | त्रिष्टुप् |
| | १८ | सुगा वो देवाः सदना अकर्म० | ,, | देवाः | ,, |
| | १९ | याँ२ऽ आवह उशतो० | ,, | अग्निः | ,, |
| | २० | वयꣳ हि त्वा प्रयति यज्ञे० | ,, | ,, | ,, |
| [अ. २।२१] | २१ | देवा गातुविदो गातुं वित्वा | ,, मनसस्पतिः | वातः | विराट् |
| | २२ | यज्ञ यज्ञं गच्छ० | ,, | लिङ्गोक्ता (यज्ञः) | |
| | | एष ते यज्ञो यज्ञपते० | ,, | ,, ( यज्ञपतिः ) | |
| [अ. ६।१२] | २३ | माहिर्भूर्मा पृदाकुः | ,, | रज्जुः | |
| | | उरुꣳ हि राजा वरुणश्चकार० | ,, शुनःशेपः | वरुणः | त्रिष्टुप् |
| | | नमो वरुणायाभिष्ठितो० | ,, | ,, | |
| | २४ | अग्नेरनीकमपऽआविवेशापां० | ,, | अग्निः | ,, |
| | २५ | समुद्रे ते हृदयमप्स्वन्तः० | ,, | सोमः | विराट् |
| | २६ | देवीराप ऽ एष वो गर्भ० | ,, | आपः | पंक्तिः बृहती वा |
| | | देव सोमैष ते लोक० | ,, | सोमः | ,, ,, |
| [अ. ३।४८] | २७ | अवभृथ निचुम्पुण० | ,, | यज्ञः | |
| | | देवानाꣳ समिदसि । | ,, | अग्निः | |
| | २८ | एजतु दशमास्यो गर्भो० | ,, | (गर्भः) | त्र्यवसाना महापंक्तिः |
| | २९ | यस्यैते यज्ञियो गर्भो० | ,, | वशा | ( अनुष्टुप् ) |

पुरुदस्मो गर्भो, मरुतो यस्य गोतमो मारुतीं गायत्रीं, मही द्यौर्मेधातिथिर्द्यावापृथिव्या-मित्यग्निष्टोमः ॥ ३१ ॥ [ य० अ० ८ मं० १४–३२ ]

अथ षोडशी– आतिष्ठ गोतम ऐन्द्रीमनुष्टुभं, युक्ष्वा हि मधुच्छन्दा, इन्द्रमिद्गोतमो, यस्मान्नैन्द्री त्रिष्टुप् परब्रह्मरूपेण षोडशिन स्तुतिरिन्द्रश्चैन्द्रावारुणी षोडशिदेवत्या वा यजुरन्ताग्ने पवस्व वैखानस आग्नेयीं गायत्रीमुत्तिष्ठन् कुरुस्तुतिरैन्द्रीमदृश्रं प्रस्कण्वः सौरीं, तिस्रोऽपि यजुरन्ता, उदु त्यं देवानामार्षमाजिघ्रेडे कौसुरुबिन्दुर्गव्ये महापंक्तिप्रस्तार-पंक्ती, वि नः शासो भारद्वाज ऐन्द्रीमनुष्टुभं, वाचस्पतिं वैश्वकर्मणीं त्रिष्टुभं, विश्वकर्म-न्नैन्द्रीं वैश्वकर्मणीमग्नये त्वा देवार्षाण्यदाभ्यदेवत्यानि, त्रेशीनां त्वा सौम्यानि ॥ ३२ ॥ [ य० अ० ८ मं० ३३–५० ]

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| ३० | पुरुदस्मो विषुरूप० | प्रजापतिः | गर्भः | |
| ३१ | मरुतो यस्य हि क्षये० | ,, गोतमः | मरुतः | गायत्री |
| ३२ | मही द्यौः पृथिवी च न० | ,, मेधातिथिः | द्यावापृथिवी | ,, |

[ इत्यग्निष्टोमः । ]

( अथ षोडशी। अ० ८।३३—५० )

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| ३३ | आतिष्ठ वृत्रहन् रथं० | गोतमः | इन्द्रः | अनुष्टुप् |
| ३४ | युक्ष्वा हि केशिना हरी० | मधुच्छन्दाः | ,, | ,, |
| ३५ | इन्द्रमिद्धरी वहतो० | गोतमः | ,, | ,, |
| ३६ | यस्मान्न जातः परो० | ( विवस्वान् ) | ,, ( परब्रह्मरूपेण षोडशिनः स्तुतिः ) | |
| ३७ | इन्द्रश्च सम्राड् वरुणश्च० | ,, | इन्द्रावरुणौ षोडशी वा। | त्रिष्टुब्यजुरन्ता |
| ३८ | अग्ने पवस्व स्वपा० | वैखानसः | अग्निः | (यजुरन्ता) गायत्री |
| ३९ | उत्तिष्ठन्नोजसा सह० | कुरुस्तुतिः | इन्द्रः | ,, ,, |
| ४० | अदृश्रमस्य केतवो० | प्रस्कण्वः | सूर्यः | ,, ,, |
| ४१ | उदु त्यं जातवेदसं० | देवाः | ,, | ,, |
| ४२ | आजिघ्र कलशं मह्य० | कुसुरुबिन्दुः | गौः | महापंक्तिः |
| ४३ | इडे रन्ते हव्ये काम्ये० | ,, | ,, | प्रस्तारपंक्तिः |
| ४४ | वि न इन्द्र मृधो जहि० | शासो भारद्वाजः | इन्द्रः | अनुष्टुप् |
| ४५ | वाचस्पतिं विश्वकर्माणं० | ,, ,, | विश्वकर्मा | त्रिष्टुप् |
| ४६ | विश्वकर्मन्हविषा वर्धनेन० | ,, ,, | ,, ,, | ,, |
| ४७ | उपयाम० अग्नये त्वा० | देवाः | अदाभ्यं | |
| ४८ | त्रेशीनां त्वा पत्मन्नाधू० | ,, | सोमः | |
| ४९ | ककुभᳫं रूपं वृषभस्य० | ,, | ,, | |
| ५० | उशिक्त्वं देव सोमाग्नेः० | ,, | ,, | |

सत्रोस्थानं– देवानामार्षमिह रतिः पशुदैवतमुपसृजन्नुष्णिगाग्नेयी, सत्रस्य बृहती यजमानानामात्मस्तुतिर्युवं तं पुरुच्छेप ऐन्द्रीमत्यष्टिं त्र्यवसानामाद्योऽर्द्धर्च ऐन्द्रापार्वतः, परमेष्ठी नैमित्तिकान्याध्यायाद्वसिष्ठस्यार्षं लिङ्गोक्तदेवतानि चतुस्त्रिंशद्वयोर्वैष्णववारुणी त्रिष्टुब्, देवान्दिवमाशीर्लिङ्गोक्तदेवता, चतुस्त्रिंशद्धर्मदेवत्या पंक्तिस्त्रिष्टुब् वा, यज्ञस्य यज्ञदेवत्या त्रिष्टुबापवस्व सौमीं गायत्रीं नैध्रुविः कश्यपः ॥३३॥ [य०अ०८मं०५१–६३]

इति० संहितायामष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥

अथ वाजपेयो– बृहस्पतेरार्षमिन्द्रस्य च, देव सवितः सावित्री त्रिष्टुब्, ध्रुवसदमैन्द्राणि त्रीण्यपाꣳ रसदेवत्यानुष्टुब्, ग्रहा लिङ्गोक्तदेवतानुष्टुप्, सम्पृचौ यजुषी, इन्द्रस्य

[ सत्रोस्थानं । अ. ८ मं. ५१–५३ ]

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| ५१ | इह रतिरिह रमध्वं० | देवाः | पशुः | |
| | उपसृजन्धरुणं मात्रे० | ,, | अग्निः | उष्णिक् |
| ५२ | सत्रस्य ऋद्धिरस्यगन्म० | ,, | यजमानानामात्मस्तुतिः | बृहती |
| ५३ | युवं तमिन्द्रापर्वता० | ,, परुच्छेपः | इन्द्रापर्वतौ | त्र्यवसाना अत्यष्टिः |
| | दूरे चत्ताय० | ,, ,, | इन्द्रः | ,, ,, |

[ नैमित्तिकानि । अ. ८ मं ५४–६३ ]

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| ५४ | परमेष्ठ्यभिधीतः० | वसिष्ठः | लिंगोक्ता (प्रजापत्यादयः) | |
| ५५ | इन्द्रश्च मरुतश्च० | ,, | ,, ( इन्द्रादयः ) | |
| ५६ | प्रोह्यमाणः सोम० | ,, | ,, ( वरुणादयः ) | |
| ५७ | विश्वेदेवा अꣳशुषु० | ,, | ,, ( विश्वेदेवादयः ) | |
| ५८ | विश्वेदेवाश्चमसेषू० | ,, | ,, ,, | |
| ५९ | सन्नः सिन्धुरवभृथा० | ,, | ,, ( सिंध्वादयः ) | |
| | ययोरोजसा स्कभिता रजाꣳसि० | ,, | विष्णुवरुणौ | त्रिष्टुप् |
| ६० | देवान्दिवमगन्यज्ञः० | ,, | आशीः लिंगोक्ता ( यज्ञः ) | |
| ६१ | चतुस्त्रिꣳशत्तन्तवो ये० | ,, | घर्मः | पंक्तिः त्रिष्टुप् वा |
| ६२ | यज्ञस्य दोहो विततः० | ,, | यज्ञः | त्रिष्टुप् |
| ६३ | आपवस्व हिरण्यवदश्ववत्० | ,, नैध्रुविःकश्यपः। | सोमः | गायत्री |

अथ० संहितायां नवमोऽध्यायः ।

[ अथ वाजपेयः । अ. ९ मं. १—३४ ]

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| १ | देव सवितः प्रसुव० | बृहस्पतिः, इन्द्रः | सविता | त्रिष्टुप् |
| २ | ध्रुवसदं त्वा नृषदं० | ,, ,, | इन्द्रः | |
| | अप्सुषदं त्वा घृतसदं० | ,, ,, | ,, | |
| | पृथिवीसदं त्वाऽन्तरिक्षसदं० | ,, ,, | ,, | |
| ३ | अपाꣳ रसमुद्वयसं० | ,, ,, | रसः | अनुष्टुप् |
| ४ | ग्रहाऽऊर्जाहुतयो० | ,, ,, | लिङ्गोक्ता (ग्रहाः) | ,, |

रथो, वाजस्य पार्थिव्यतिजगत्यन्त्यः पादः सावित्रोऽप्स्वन्तरश्वदेवत्याऽनवसाना पुर उष्णिग्, वातो वा तिस्रोऽश्वस्तुतय उष्णिक्त्रिष्टुब्जगत्यो, वाजिनोऽश्वा, देवस्याहं लिङ्गोक्तानि, वाजिनोऽश्वा, एष स्य द्वे दधिक्रावा वामदेव्योऽश्वदेवत्ये जगत्यौ, शं नो वसिष्ठो विराजं, ते नो नाभानेदिष्ठो जगतीं, वाजेवाजे वसिष्ठस्त्रिष्टुभमा मा प्राजापत्यां, वाजिनोऽश्वाः ॥ ३४ ॥ [ य० अ० ९ मं० १–१९ ]

आपय आयुर्यज्ञेन प्राजापत्यानि, प्रजापतेः स्वरमृता यजमानोऽस्मे दिशो, नमः

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | संपृचौ स्थः सं मा भद्रेण पृंक्तम् । | बृहस्पतिः | इन्द्रः | | लिङ्गोक्ता (सोमग्रहः) | |
| | विपृचौ स्थो वि मा पाप्मना पृंक्तम् । | ,, | ,, | | ,, (सुराग्रहः) | |
| ५ | इन्द्रस्य वज्रोऽसि० | ,, | ,, | | रथः | |
| | वाजस्य नु प्रसवे मातरं मही० | ,, | ,, | | पृथिवी | अतिजगती |
| | तस्यां नो देवः सविता धर्म० | ,, | ,, | | सविता | ,, |
| ६ | अप्स्वन्तरमृतमप्सु० | ,, | ,, | | अश्वः | अनवसाना पुर उष्णिक् |
| ७ | वातो वा मनो वा गन्धर्वाः० | ,, | ,, | | ,, (अश्वस्तुतिः) | उष्णिक् |
| ८ | वातरंहा भव वाजिन्० | ,, | ,, | | ,, ,, | त्रिष्टुप् |
| ९ | जवो यस्ते वाजिन्० | ,, | ,, | | ,, ,, | जगती |
| | वाजिनो वाजजितो वाजꣳ० | ,, | ,, | | अश्वाः | |
| १० | देवस्याहꣳ सवितुः सवे० | ,, | ,, | | लिङ्गोक्तानि | |
| ११ | बृहस्पते वाजं जय० | ,, | ,, | | ,, | |
| १२ | एषा वः सा सत्या० | ,, | ,, | | ,, | |
| १३ | देवस्याहꣳ सवितुः सवे० | ,, | ,, | | ,, | |
| | वाजिनो वाजजितोऽध्वन० | ,, | ,, | | अश्वाः | |
| १४ | एष स्य वाजी क्षिपणिं० | ,, | ,, | दधिक्रावा वामदेव्यः | अश्वः | जगती |
| १५ | उत स्मास्य द्रवतस्तुरण्यतः० | ,, | ,, | ,, | ,, | ,, |
| १ | शं नो भवन्तु वाजिनो० | ,, | ,, | वसिष्ठः | ,, | विराड् |
| ४३ | ते नोऽअर्वन्तो हवनश्रुतो० | ,, | ,, | नाभानेदिष्ठः | ,, | जगती |
| ४४ | वि वाजेवाजेऽवत वाजिनो० | ,, | ,, | वसिष्ठः | ,, | त्रिष्टुप् |
| ४५ | वा आ मा वाजस्य प्रसवो० | ,, | ,, | ,, | प्रजापतिः | ,, |
| | वि वाजिनो वाजजितो वाजꣳ० | ,, | ,, | | अश्वाः | |
| २० | प्रापये स्वाहा० | ,, | ,, | | प्रजापतिः | |
| २१ | आयुर्यज्ञेन कल्पतां० | ,, | ,, | | ,, | |
| | प्रजापतेः प्रजा अभूम । स्वर्देवाऽअ० | ,, | ,, | | यजमानः | |
| | अमृताऽअभूम । | ,, | ,, | | ,, | |
| २२ | अस्मे वोऽअस्त्विन्द्रिय० | ,, | ,, | | दिशः | |

पृथिवीयमासन्दी, यन्ता सुन्वन्, वाजस्य प्राजापत्यं तृचं त्रैष्टुभꣳ, सोमं तृचं तापस आद्या वैश्वदेव्यनिरुक्तानुष्टुब्द्वितीया लिङ्गोक्तदेवता, तृतीयाऽग्नेयी, प्र नो लिङ्गोक्ता गायत्री, सरस्वत्यै सुन्वन्नग्निः सप्तदश लिङ्गोक्तदेवतानि ॥३५॥ [य०अ०९ मं०२०-३४]

अथ राजसूयो– वरुणस्यार्षं, एष ते पार्थिवमग्निनेत्रेभ्यो देवार्षाण्याध्यायादशाद्यानि दैवान्यग्ने सहस्व देवश्रवा देववातश्च भारतावाग्नेयीमनुष्टुभमुपाꣳशोस्त्रीणि रक्षोघ्नानि, सविता द्वे यजमानः ॥ ३६ ॥ [ य० अ०९ मं० ३५--४० ]

इति० संहितायां नवमोऽध्यायः ।

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| | | नमो मात्रे पृथिव्यै० | बृहस्पतिः इन्द्रः | पृथिवी | |
| | | इयं ते राट् । | ,, ,, | आसन्दी | |
| | | यन्तासि यमनो० | ,, ,, | सुन्वन्(यजमानः) | |
| | २३ | वाजस्येमं प्रसवः० | ,, ,, | प्रजापतिः | त्रिष्टुप् |
| | २४ | वाजस्येमां प्रसवः शिश्रिये० | ,, ,, | ,, | ,, |
| | २५ | वाजस्य नु प्रसव० | ,, ,, | ,, | ,, |
| | २६ | सोमꣳ राजानमवसे० | ,, ,, तापसः | विश्वेदेवाः | अनुष्टुप् ( अनिरुक्ता ) |
| | २७ | अर्यमणं बृहस्पतिमिन्द्रं० | ,, ,, ,, | लिङ्गोक्ता(अर्यमादयः) | ,, |
| | २८ | अग्नेऽअच्छा वदेह नः० | ,, ,, ,, | अग्निः | ,, |
| | २९ | प्र नो यच्छत्वर्यमा० | ,, ,, | लिङ्गोक्ता(अर्यमादयः) | गायत्री |
| [अ.१।मं१०] | ३० | देवस्य त्वा सवितु० | ,, ,, | सविता | |
| | | सरस्वत्यै वाचो यन्तु० | ,, ,, | सुन्वन् | |
| | ३१ | अग्निरेकाक्षरेण० | ,, ,, | लिङ्गोक्ता (अग्न्यादयः) | |
| | ३२ | पूषा पञ्चाक्षरेण० | ,, ,, | ,, (पूषादयः) | |
| | ३३ | मित्रो नवाक्षरेण० | ,, ,, | ,, (मित्रादयः) | |
| | ३४ | वसवस्त्रयोदशाक्षरेण० | ,, ,, | ,, (वस्वादयः) | |

[ इति वाजपेयमन्त्राः समाप्ताः ॥ ]

[ अथ राजसूयः । अ. ९ मं. ३५ आरभ्य अ० १० मं० ३० पर्यन्तम् ]

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| | ३५ | एष ते निर्ऋते भागस्तं० | वरुणः | पृथिवी | |
| | | अग्निनेत्रेभ्यो देवेभ्यः पुरःसद्भ्य० | ,, देवाः | देवाः | |
| | ३६ | ये देवा अग्निनेत्राः पुरःसदः० | ,, ,, | ,, | |
| | ३७ | अग्ने सहस्व पृतना० | ,, देवश्रवा देववातश्च भारतौ | अग्निः | अनुष्टुप् |
| [अ.१।मं.१०] | ३८ | देवस्य त्वा सवितुः० | ,, | सविता | |
| | | उपाꣳशोर्वीर्येण जुहोमि० | ,, | रक्षोघ्नानि | |
| | ३९ | सविता त्वा सवानाꣳ० | ,, | यजमानः | |

अपो देवा आपी त्रिष्टुप्, वृष्ण ऊर्मिर्लिङ्गोक्तानि, मधुमतीरनाधृष्टा आपे, सोमस्य चर्माग्नये लिङ्गोक्तान्यनिभृष्टमापषं, सधमादो वारुणी त्रिष्टुप्, क्षत्रस्य चतुर्णां तार्प्य-पाण्ड्वाधीवासोष्णीषाणीन्द्रस्य धनुर्मित्रस्य बाहू, त्वयायं धनुर्दवा षण्णामिषव, आविः प्राजापत्यं, पराणि लिङ्गोक्तानि ॥ ३७ ॥ [ य० अ० १० मं० १--९ ]

अवेष्टा मृत्युनाशनं, प्राचीं पञ्चानां यजमानः, प्रत्यस्तमासुरं, मृत्योरोजोऽसि रुक्मो,

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| ४० | इमं देवाऽअसपत्नꣳ सुवध्वं० | वरुणः | यजमानः | |
| | अथ० संहितायां दशमोऽध्यायः । | | | |
| १ | अपो देवा मधुमतीरगृभ्णन्० | वरुणः | आपः | त्रिष्टुप् |
| २ | वृष्णऽऊर्मिरसि० | ,, | लिङ्गोक्ता | |
| ३ | अर्थेत स्थ राष्ट्रदा० | ,, | ,, | |
| ४ | सूर्यत्वचस स्थ राष्ट्रदा० | ,, | ,, | |
| | मधुमतीर्मधुमतीभिः० | ,, | आपः | |
| | अनाधृष्टाः सीदत सहौजसो० | ,, | ,, | |
| ५ | सोमस्य त्विषिरसि तवेव मे० | ,, | चर्म | |
| | अग्नये स्वाहा सोमाय स्वाहा० | ,, | लिङ्गोक्ताः(अग्न्यादयः) | |
| [ अ.१ मं.१२ ] ६ | पवित्रे स्थो वैष्णव्यौ । | ,, | ,, | |
| [ ,, ,, ] | सवितुर्वः प्रसव० | ,, | आपः | |
| | अनिभृष्टमसि वाचो बन्धुः० | ,, | ,, | |
| ७ | सधमादो द्युम्निनीरापऽएता० | ,, | वरुणः | त्रिष्टुप् |
| ८ | क्षत्रस्योल्बमसि । | ,, | तार्प्यम् | |
| | क्षत्रस्य जराय्वसि । | ,, | पाण्ड्वम् | |
| | क्षत्रस्य योनिरसि । | ,, | अधीवासं | |
| | क्षत्रस्य नाभिरसि । | ,, | उष्णीषम् | |
| | इन्द्रस्य वार्त्रघ्नमसि । | ,, | धनुः | |
| | मित्रस्यासि वरुणस्यासि । | ,, | बाहू | |
| | त्वयाऽयं वृत्रं वधेत् । | ,, | धनुः | |
| | दवासि रुजासि० | ,, | इषवः | |
| ९ | आविर्मर्याः । | ,, | प्रजापतिः | |
| | आवित्तोऽअग्निर्गृहपतिः० | ,, | लिङ्गोक्ताः(अग्न्यादयः) | |
| १० | अवेष्टा दन्दशूकाः । | ,, | मृत्युनाशनम् | |
| | प्राचीमारोह गायत्री त्वावतु० | ,, | यजमानः | |
| ११ | दक्षिणामारोह० | ,, | ,, | |
| १२ | प्रतीचीमारोह० | ,, | ,, | |
| १३ | उदीचीमारो० | ,, | ,, | |

हिरण्यरूपौ मैत्रावरुणी त्रिष्टुब् यजुरन्ता, सोमस्य सुन्वन्, प्रपर्वतस्यापी त्रिष्टुब्, विष्णोस्त्रीणि लिङ्गोक्तानि सुन्वन्, प्रजापते न प्राजापत्या त्रिष्टुब्यजुर्मध्यायममुष्य यजू, रुद्र यद् रौद्रम् ॥ ३८ ॥ [ य० अ० १० मं० १०--२० ]

इन्द्रस्य लिङ्गोक्तानि, मा ते संवरणः प्राजापत्य ऐन्द्रीं त्रिष्टुभमग्नये लिङ्गोक्तानि, पृथिवि मातर्भूमिर्हꣳसो वामदेवः सौरीꣳ सप्रपञ्चपरब्रह्माभिधायिनीमतिजगतीमियच्छतमानावूर्गसि शाखेन्द्रस्य बाहू, स्योनास्यासन्दी, क्षत्रस्याधीवासꣳ, स्योनाꣳ सुन्वन्, निषसाद शुनःशेपो वारुणीं गायत्रीमभिभूरस्यक्षा यजमानो वा, ब्रह्मँस्त्वमामन्त्रणानि

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| | १४ | ऊर्ध्वामारोह० | वरुणः | यजमानः | |
| | | प्रत्यस्तं नमुचेः शिरः । | ,, | असुरः | |
| [अ.१० मं.५] | १५ | सोमस्य त्विषिरसि० | ,, | चर्म | |
| | | मृत्योः पाहि । | ,, | रुक्मः | |
| | | ओजोऽसि सहोऽस्यमृतमसि । | ,, | ,, | |
| | १६ | हिरण्यरूपाऽउषसो विरोक० | ,, | मित्रावरुणौ | यजुरन्ता त्रिष्टुप् |
| | १७ | सोमस्य त्वा द्युम्ने० | ,, | सुन्वन् | |
| [अ.९मं.४०] | १८ | इमं देवाऽअसपत्नꣳ० | ,, | यजमानः | अत्यष्टिः |
| | १९ | प्र पर्वतस्य वृषभस्य पृष्ठा० | ,, | आपः | त्रिष्टुप् |
| | | विष्णोर्विक्रमणमसि । ० | ,, | लिङ्गोक्ता (यजमानः) | |
| | २० | प्रजापते न त्वदेता० | ,, | प्रजापतिः | त्रिष्टुप् (यजुर्मध्या) |
| | | रुद्र यत्ते क्रिवि परं नाम० | ,, | रुद्रः | |
| | २१ | इन्द्रस्य वज्रोऽसि० | ,, | लिङ्गोक्ता (रथादयः) | |
| | २२ | मा तऽइन्द्र ते वयं० | ,, संवरणः प्राजापत्यः | इन्द्रः | त्रिष्टुप् |
| | २३ | अग्नये गृहपतये स्वाहा० | ,, | लिङ्गोक्ता (अग्न्यादयः) | |
| | | पृथिवि मातर्मा मा हिꣳसी० | ,, | भूमिः | |
| | २४ | हꣳसः शुचिषद्वसुरन्तरिक्ष० | ,, वामदेवः | सूर्यः | अतिजगती |
| | २५ | इयदस्यायुरस्यायुर्मयि धेहि० | ,, | शतमानौ | |
| | | ऊर्गस्यूर्जं मयि धेहि । | ,, | शाखा | |
| | | इन्द्रस्य वां वीर्यकृतो बाहू० | ,, | बाहू | |
| | २६ | स्योनासि सुषदासि० | ,, | आसन्दी | |
| | | क्षत्रस्य योनिरसि० | ,, | अधीवासम् | |
| | | स्योनामासीद० | ,, | सुन्वन् | |
| | २७ | निषसाद धृतव्रतो० | ,, शुनःशेपः | वरुणः | गायत्री |
| | २८ | अभिभूरस्येतास्ते० | ,, | अक्षाः यजमानः वा | |
| | | ब्रह्मँस्त्वं ब्रह्मासि० | ,, | लिङ्गोक्तानि (ब्रह्मादयः ) | |

पञ्च लिङ्गोक्तानीन्द्रस्य स्फ्योऽग्निः पृथुराग्नेयꣳ, स्वाहाकृता अक्षाः, सवित्रा लिङ्गोक्त-देवतम् ॥ ३९ ॥ [ य० अ० १० मं० २१--३० ]

अथ चरकसौत्रामण्यश्विनोरार्षमश्विभ्यां त्रीणि लिङ्गोक्तानि, वायुः सौमी गायत्री, कुविदृचꣳ सुकीर्तिः काक्षीवत आद्या सौम्यनिरुक्ता त्रिष्टुब्युवमनुष्टुप्, पुत्रमिव त्रिष्टुबश्विसरस्वतीन्द्रदेवत्ये अश्विसरस्वतीन्द्रदेवत्ये ॥४०॥ [ य० अ० १० मं० ३१--३४ ]

इति० संहितायां दशमोऽध्यायः ॥ १० ॥

## इति सर्वानुक्रमसूत्रे प्रथमोऽध्यायः ।

## अथ द्वितीयोऽध्यायः ।

अथाग्निं प्रजापतिरपश्यत् साध्या वापश्यन्त्सोऽग्निः पञ्चचितिकः, प्रथमा चितिः प्रजापतेर्द्वितीया देवानां, तृतीयेन्द्राग्न्योर्विश्वकर्मणश्चतुर्थ्यृषीणां, पञ्चमी परमेष्ठिनोऽथ प्रतिकर्मदर्शिनो, युञ्जानोऽष्टौ सावित्राणि सवितापश्यदाद्या तृतीया चानुष्टुप्, चतुर्थी

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| | इन्द्रस्य वज्रोऽसि० | वरुणः | स्फ्यः | |
| २९ | अग्निः पृथुर्धर्मणस्पति० | ,, | अग्निः | |
| | स्वाहाकृताः सूर्यस्य० | ,, | अक्षाः | |
| ३० | सवित्रा प्रसवित्रा० | ,, | लिङ्गोक्ता (सवित्रादयः) | |

[ इति राजसूयः समाप्तः । ]

[ अथ चरकसौत्रामणी । अ. १० मं. ३१—३४ ]

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| ३१ | अश्विभ्यां पच्यस्व० | अश्विनौ | लिङ्गोक्ता ( सुरा ) | |
| | वायुः पूतः पवित्रेण० | ,, | सोमः | गायत्री |
| ३२ | कुविदङ्ग यवमन्तो० | ,, सुकीर्तिः काक्षीवतः | ,, | अनिरुक्ता त्रिष्टुप् |
| ३३ | युवꣳ सुराममश्विना० | ,, ,, | ,, अश्विसरस्वतीन्द्राः | अनुष्टुप् |
| ३४ | पुत्रमिव पितरावश्विनो० | ,, ,, | ,, ,, | त्रिष्टुप् |

## इति सर्वानुक्रमणीये प्रथमोऽध्यायः ॥

## अथ सर्वानुक्रमसूत्रे द्वितीयोऽध्यायः ।

अथ० संहितायां एकादशोऽध्यायः ।

[ अथ अग्निचयनमंत्राः– अ. ११ आरभ्य अ. १८ समाप्ति पर्यन्तं । ऋषयः प्रजापतिः साध्याः वा ]

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| १ | युञ्जानः प्रथमं मन० | प्रजापतिः साध्याः सविता | सविता | अनुष्टुप् |
| २ | युक्तेन मनसा वयं० | ,, ,, ,, | ,, | गायत्री |
| ३ | युक्त्वाय सविता देवान्० | ,, ,, ,, | ,, | अनुष्टुप् |
| ४ | युञ्जते मनउत युञ्जते० | ,, ,, ,, | ,, | जगती |

षष्ठ्यौ जगत्यौ, द्वितीया गायत्री, पञ्चमी त्रिष्टुबिमं नो यजुरन्ते गायत्र्यनवसानाऽऽददेऽग्निर्हस्तेऽनुष्टुब् यजुरन्ता ॥ १ ॥ [ य० अ० ११ मं० १--११ ]

प्रतूर्त्तन्नाभानेदिष्ठ आश्वीमास्तारपंक्तिर्युञ्जाथां कुश्रिर्गार्दभीं गायत्रीं, योगे–योगे शुनःशेप आर्जीं, प्रतूर्वंस्त्रिष्टुब्विराड्रूपा यजुर्गर्भोरु यजुः, पृथिव्यास्त्रीण्याग्नेयान्यन्वग्निरा ग्नेयीं त्रिष्टुभं पुरोधस, आगत्य मयोभुव आश्वीमनुष्टुभमाक्रम्यानुष्टुब्द्यौस्ते बृहत्युत्क्राम विराडुदक्रमीत्त्रिष्टुबा त्वा द्वे गृत्समद आग्नेय्यौ, परि सोमको गायत्रीं, परि त्वा पायुरनुष्टुभं, त्वमग्ने गृत्समदो जगतीम् ॥ २ ॥ [ य० अ० ११ मं० १२--२७ ]

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ५ | युजे वां ब्रह्म पूर्व्यं० | प्रजापतिः | साध्याः, | सविता | सविता | त्रिष्टुप् |
| ६ | यस्य प्रयाणमन्वन्य० | ,, | ,, | ,, | ,, | जगती |
| ७ | देव सवितः प्रसुव० | ,, | ,, | ,, | ,, | |
| ८ | इमं नो देव सवित० | ,, | ,, | ,, | ,, | |
| | ऋचा स्तोमꣳ समर्धय० | ,, | ,, | ,, | ,, | गायत्री अनवसाना |
| ९ | देवस्य त्वा सवितुः । | ,, | ,, | | ,, | |
| | आददे गायत्रेण छन्दसा० | ,, | ,, | | अग्निः | |
| १० | अग्निरसि नार्यसि० | ,, | ,, | | ,, | |
| ११ | हस्त आधाय सविता० | ,, | ,, | | ,, | अनुष्टुप् यजुरन्ता |
| | आनुष्टुभेन छन्दसाङ्गिरस्वत् । | ,, | ,, | | ,, | |
| १२ | प्रतूर्त्तं वाजिन्नाद्रव० | ,, | ,, | नाभानेदिष्ठः | अश्वः | आस्तारपंक्तिः |
| १३ | युञ्जाथाꣳ रासभं युव० | ,, | ,, | कुश्रिः | गर्दभः | गायत्री |
| १४ | योगे योगे तवस्तरं० | ,, | ,, | शुनःशेपः | अजः | ,, |
| १५ | प्रतूर्वन्नेह्यवक्रामन्नशस्ती० | ,, | ,, | | (अश्वः) | त्रिष्टुप् विराड्रूपा |
| १६ | पृथिव्याः सधस्थादग्निं० | ,, | ,, | | अग्निः | |
| १७ | अन्वग्निरुषसामग्र० | ,, | ,, | पुरोधसः | ,, | त्रिष्टुप् |
| १८ | आगत्य वाज्यध्वानꣳ० | ,, | ,, | मयोभुवः | अश्वः | अनुष्टुप् |
| १९ | आक्रम्य वाजिन्पृथिवी० | ,, | ,, | | ,, | ,, |
| २० | द्यौस्ते पृष्ठं पृथिवी० | ,, | ,, | | ,, | बृहती |
| २१ | उत्क्राम महते सौभगाया० | ,, | ,, | | ,, | विराट् |
| २२ | उदक्रमीद् द्रविणोदा० | ,, | ,, | | ,, | त्रिष्टुप् |
| २३ | आ त्वा जिघर्मि मनसा० | ,, | ,, | गृत्समदः | अग्निः | ,, |
| २४ | आ विश्वतः प्रत्यञ्चं जिघ० | ,, | ,, | ,, | | ,, |
| २५ | परि वाजपतिः कवि० | ,, | ,, | सोमकः | ,, | गायत्री |
| २६ | परि त्वाग्ने पुरं वयं० | ,, | ,, | पायुः | ,, | अनुष्टुप् |
| २७ | त्वमग्ने द्युभिस्त्वमाशुशुक्षणि० | ,, | ,, | गृत्समदः | ,, | जगती |

पृथिव्या आग्नेयमपां पुष्करपर्णꣳ स्वराट्पंक्तिः, शर्म द्वे अनुष्टुभौ कृष्णाजिनपुष्करपर्णे, पुरीष्योऽग्निस्त्वामग्ने तृचं भरद्वाज आग्नेयं गायत्रꣳ, सीद होतर्देवश्रवा देववातश्च त्रिष्टुभं, नि होता गृत्समदः, सꣳसीदस्व प्रस्कण्वो बृहतीम् ॥ ३ ॥ [ य० अ० ११ मं० २७--३७ ]

अपो देवीः सिन्धुद्वीप आर्पीं न्यंकुसारिणीꣳ, सं ते त्रिष्टुप् पार्थिवोऽर्द्धो वायव्योऽर्धः, सुजातोऽनुष्टुबाग्नेय्युदु तिष्ठ विश्वमनाः पथ्याबृहतीमूर्ध्वः कण्व उपरिष्टाद्बृहतीꣳ, स जातास्त्रितस्त्रिष्टुभꣳ, स्थिरो रासभेय्यनुष्टुबुष्णिग्वा, शिवो भवाजी पथ्याबृहती, प्रैतु लिङ्गोक्ता महापंक्तिस्त्र्यवसानाग्ने गायत्र्येकपदाग्नेय्यृतमग्निमाग्नेये, ओषधयस्त्रिष्टुबनुष्टुभावोषधिदेव-

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| [अ.१मं.१०]२८ | देवस्य त्वा सवितुः प्रसवे० | प्रजापतिः | साध्याः | | सविता | |
| | पृथिव्याः सधस्थादग्निं० | ,, | ,, | | अग्निः | |
| २९ | अपां पृष्ठमसि योनिरग्नेः० | ,, | ,, | | पुष्करपर्णम् | स्वराट् पंक्ति |
| ३० | शर्म च स्थो वर्म च स्थो | ,, | ,, | | कृष्णाजिनपुष्करपर्णे | अनुष्टुप् |
| ३१ | संवसाथाꣳ स्वर्विदा० | ,, | ,, | | ,, | ,, |
| ३२ | पुरीष्योऽसि विश्वभरा० | ,, | ,, | | अग्निः | ,, |
| | त्वामग्ने पुष्करादध्यथर्वा० | ,, | ,, | भारद्वाजः | ,, | गायत्री |
| ३३ | तमु त्वा दध्यङ्ङृषिः० | ,, | ,, | ,, | ,, | ,, |
| ३४ | तमु त्वा पाथ्यो वृषा० | ,, | ,, | ,, | ,, | ,, |
| ३५ | सीद होतः स्व उ लोके० | ,, | ,, | देवश्रवा देववातश्च | ,, | त्रिष्टुप् |
| ३६ | नि होता होतृषदने० | ,, | ,, | गृत्समदः | ,, | ,, |
| ३७ | सꣳसीदस्व महाँऽअसि० | ,, | ,, | प्रस्कण्वः | ,, | बृहती |
| ३८ | अपो देवीरुपसृज० | ,, | ,, | सिन्धुद्वीपः | आपः | न्यंकुसारिणी |
| ३९ | सं ते वायुर्मातरिश्वा दधातु० | ,, | ,, | | पृथिवी | त्रिष्टुप् |
| | यो देवानां चरसि प्राणथेन० | ,, | ,, | | वायुः | ,, |
| ४० | सुजातो ज्योतिषा सह० | ,, | ,, | | अग्निः | अनुष्टुप् |
| ४१ | उदु तिष्ठ स्वध्वराव० | ,, | ,, | विश्वमनाः | ,, | पथ्याबृहती |
| ४२ | ऊर्ध्वऽऊ षु ण ऊतये० | ,, | ,, | कण्वः | ,, | उपरिष्टाद्बृहती |
| ४३ | स जातो गर्भोऽअसि० | ,, | ,, | त्रितः | ( अश्वः ) | त्रिष्टुप् |
| ४४ | स्थिरो भव वीड्वङ्ग० | ,, | ,, | | रासभः | अनुष्टुबुष्णिग्वा |
| ४५ | शिवो भव प्रजाभ्यो० | ,, | ,, | | अजः | पथ्याबृहती |
| ४६ | प्रैतु वाजी कनिक्रद० | ,, | ,, | | लिङ्गोक्ता | महापंक्तिः त्र्यवसाना |
| | अग्न आयाहि वीतये । | ,, | ,, | | अग्निः | एकपदा गायत्री |
| ४७ | ऋतꣳ सत्य० । | ,, | ,, | | ,, | |

त्ये, व्यस्यन्नाग्नेयोऽर्द्धर्चो, वि पाजसोत्कीलः कात्य आग्नेयीं त्रिष्टुभम् ॥ ४ ॥ [ य० अ० ११ मं० ३८--४९ ]

आपो ह्यापथं सिन्धुद्वीपस्तृचं गायत्रं, मित्र उपरिष्टाद्बृहती मैत्री, रुद्रा अनुष्टुब् रौद्री, सथंसृष्टां द्वे सिनीवालीदेवत्ये, उखामादित्या, मखस्य मृत्पिण्डो, वसवस्त्वा लिङ्गोक्तानि सर्वत्रादित्यै रास्नादितिरौखं, कृत्वायादित्योष्णिगदितिरावटं, देवानां पत्न्यौखानि, मित्रस्य विश्वामित्रो मैत्रीं गायत्रीं, देवस्त्वा सावित्री बृहत्युत्थाय पूर्वोऽर्द्धर्च औष, उत्तरो मैत्रः ॥ ५ ॥ [ य० अ० ११ मं ५०–६५ ]

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | अग्निं पुरीष्यमङ्गिरस्वच्छरामः । | प्रजापतिः | साध्याः | | अग्निः | |
| | ओषधयः प्रतिमोदध्वं० | ,, | ,, | | ओषधयः | त्रिष्टुप् |
| | व्यस्यन्विश्वा अनिरा० | ,, | ,, | | अग्निः | ,, |
| ४८ | ओषधयः प्रति गृभ्णीत० | ,, | ,, | | ओषधयः | अनुष्टुप् |
| ४९ | वि पाजसा पृथुना शोशुचानो० | ,, | ,, | उत्कीलःकात्यः | अग्निः | त्रिष्टुप् |
| ५० | आपो हि ष्ठा मयोभुवस्ता० | ,, | ,, | सिन्धुद्वीपः | आपः | गायत्री |
| ५१ | यो वः शिवतमो रस० | ,, | ,, | ,, | ,, | ,, |
| ५२ | तस्माऽअरं गमाम वो० | ,, | ,, | ,, | ,, | ,, |
| ५३ | मित्रः सꣳसृज्य पृथिवीं० | ,, | ,, | | मित्रः | उपरिष्टाद्बृहती |
| ५४ | रुद्राः सꣳसृज्य पृथिवीं० | ,, | ,, | | रुद्राः | अनुष्टुप् |
| ५५ | सꣳसृष्टां वसुभी रुद्रैः० | ,, | ,, | | सिनीवाली | ,, |
| ५६ | सिनीवाली सुकपर्दा० | ,, | ,, | | ,, | ,, |
| ५७ | उखां कृणोतु शक्त्या० | ,, | ,, | | अदितिः | अनुष्टुप् |
| | मखस्य शिरोऽसि । | ,, | ,, | | मृत्पिण्डः | |
| ५८ | वसवस्त्वा कृण्वन्तु० | ,, | ,, | | लिङ्गोक्ता(उखा) | |
| ५९ | अदित्यै रास्नासि । | ,, | ,, | | रास्ना | |
| | अदितिष्टे बिलं गृभ्णातु । | ,, | ,, | | उखा | |
| | कृत्वाय सा महीमुखां० | ,, | ,, | | अदितिः | उष्णिक् |
| ६० | वसवस्त्वा धूपयन्तु० | ,, | ,, | | लिंगोक्ता (उखा) | |
| ६१ | अदितिष्ट्वा देवी० | ,, | ,, | | अवटः | |
| | देवानां त्वा पत्नी० | ,, | ,, | | उखा | |
| ६२ | मित्रस्य चर्षणीधृतो० | ,, | ,, | विश्वामित्रः | मित्रः | गायत्री |
| ६३ | देवस्त्वा सवितोद्वपतु० | ,, | ,, | | सविता | बृहती |
| ६४ | उत्थाय बृहती भवोदु० | ,, | ,, | | उषा (उखा) | ,, |
| | मित्रैतां तऽउखां० | ,, | ,, | | मित्रः | ,, |
| ६५ | वसवस्त्वाच्छृन्दन्तु० | ,, | ,, | | लिंगोक्ता(उखा) | |

आकूर्ति लिङ्गोक्तान्यौद्भ्रभणानि, मा स्वौख्यौ गायत्रीत्रिष्टुभावग्निश्च पाद आग्नेयो, द्रवं नः सोमाहुतिराग्नेयीं गायत्रीं, परस्या विरूप आङ्गिरसः, परमस्या आरुणिरनुष्टुभं, यदग्ने द्वे जमदग्निरहरहर्नाभानेदिष्ठस्त्रिष्टुभौ, याः सेना अनुष्टुभः, सर्वा आग्नेय्योऽन्त्यो-परिष्टाद्बृहती ॥ ६ ॥ [ य० अ० ११ मं० ६६–८३ ]

इति० संहितायां एकादशोऽध्यायः ।

दृशानो वत्सप्रीस्त्रिष्टुभꣳ रौक्मीं, नक्तोषासा कुत्स आग्नेयीं, विश्वा श्यावाश्वः सावित्रीं जगतीꣳ, सुपर्णः कृतिश्चतुरवसाना गारुत्मी विषघ्नी, विष्णोर्लिङ्गोक्तान्यक्रन्दद्वत्सप्री-

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | ६६ | आकूतिमग्निं प्रयुजꣳ स्वाहा० | प्रजापतिः | साध्याः | | लिङ्गोक्ता(अग्न्यादयः) | |
| [ अ.४ मं८ ] | ६७ | विश्वो देवस्य नेतु० | ,, | ,, | स्वस्त्यात्रेयः | सविता | अनुष्टुप् |
| | ६८ | मा सु भित्था मा सु० | ,, | ,, | | उखा | गायत्री |
| | | अग्निश्चेदं करिष्यथः । | ,, | ,, | | अग्निः | ,, |
| | ६९ | दृꣳहस्व देवि पृथिवि० | ,, | ,, | | उखा | त्रिष्टुप् |
| | ७० | द्रवन्नः सर्पिरासुतिः० | ,, | ,, | सोमाहुतिः | अग्निः | गायत्री |
| | ७१ | परस्याऽअधि संवतो० | ,, | ,, | विरूप आंगिरसः | ,, | ,, |
| | ७२ | परमस्याः परावतो० | ,, | ,, | आरुणिः | अग्निः | अनुष्टुप् |
| | ७३ | यदग्ने कानि-कानि चि० | ,, | ,, | जमदग्निः | ,, | ,, |
| | ७४ | यदत्त्युपजिह्विका० | ,, | ,, | ,, | ,, | ,, |
| | ७५ | अहरहरप्रयावं० | ,, | ,, | नाभानेदिष्ठः | ,, | त्रिष्टुप् |
| | ७६ | नाभा पृथिव्याः समिधान० | ,, | ,, | ,, | ,, | ,, |
| | ७७ | याः सेना अभीत्वरी० | ,, | ,, | | ,, | अनुष्टुप् |
| | ७८ | दꣳष्ट्राभ्यां मलिम्लून्० | ,, | ,, | | ,, | ,, |
| | ७९ | ये जनेषु मलिम्लव० | ,, | ,, | | ,, | ,, |
| | ८० | योऽअस्मभ्यमराती० | ,, | ,, | | ,, | ,, |
| | ८१ | सꣳशितं मे ब्रह्म० | ,, | ,, | | ,, | ,, |
| | ८२ | उदेषां बाहू अतिर० | ,, | ,, | | ,, | ,, |
| | ८३ | अन्नपतेऽन्नस्य नो देहि० | ,, | ,, | | ,, | उपरिष्टाद्बृहती |

अथ० संहितायां द्वादशोऽध्यायः ।

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | दृशानो रुक्मऽउर्व्या० | प्रजापतिः | साध्याः | वत्सप्रीः | रुक्मम् | त्रिष्टुप् |
| २ | नक्तोषासा समनसा विरूपे० | ,, | ,, | कुत्सः | अग्निः | ,, |
| ३ | विश्वा रूपाणि प्रतिमुञ्चते० | ,, | ,, | श्यावाश्वः | सविता | जगती |
| ४ | सुपर्णोऽसि गुरुत्मान्० | ,, | ,, | | गरुत्मान् | कृतिः चतुरवसाना |
| ५ | विष्णोः क्रमोऽसि सपत्नहा० | ,, | ,, | | लिङ्गोक्ता(उख्याग्निः) | |
| ६ | अक्रन्ददग्निः स्तनयन्निव० | ,, | ,, | वत्सप्रीः | अग्निः | त्रिष्टुप् |

राग्नेयीं त्रिष्टुभमग्न ऊर्ध्वबृहत्यग्ने महाबृहती, पुनर्गायत्र्यावा त्वा ध्रुवोऽनुष्टुभमुदुत्तमं शुनःशेपो वारुणीं त्रिष्टुभमग्ने त्रित आग्नेयीं, हंस उक्ता जगतीह यजुरन्ताऽन्ते बृहद्यजुः, सीद त्वमाग्नेयी त्रिष्टुबन्तरग्नेऽनुष्टुभौ ॥ ७ ॥ [ य० अ० १२ मं० १–१७ ]

दिवस्पर्याग्नेयं त्रैष्टुभं द्वादशर्चं वत्सप्रीर्भालन्दनः, समिधाग्निं विरूपाक्ष आङ्गिरस आग्नेयं गायत्रमुदु त्वा तापसोऽनुष्टुभं, प्रेदनुष्टुप्, प्र-प्रायमाग्नेयीं वसिष्ठस्त्रिष्टुभमापो देवी-

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | ७ | अग्नेऽभ्यावर्तिन्नभि० | प्रजापतिः | साध्याः | अग्निः | ऊर्ध्वबृहती |
| | ८ | अग्नेऽअङ्गिरः शतं ते | ,, | ,, | ,, | महाबृहती |
| | ९ | पुनरूर्जा निवर्तस्व० | ,, | ,, | ,, | गायत्री |
| | १० | सह रय्या निवर्तस्व० | ,, | ,, | ,, | ,, |
| | ११ | आ त्वाहार्षमन्तरभू० | ,, | ,, ध्रुवः | ,, | अनुष्टुप् |
| | १२ | उदुत्तमं वरुणपाशमस्म० | ,, | ,, शुनःशेपः | वरुणः | त्रिष्टुप् |
| | १३ | अग्ने बृहन्नुषसामूर्ध्वो० | ,, | ,, त्रितः | अग्निः | ,, |
| [अ.१०मं.२४] | १४ | हꣳसः शुचिषद्वसु० | ,, | ,, वामदेव | सूर्यः | जगती यजुरंता |
| | १५ | सीद त्वं मातुरस्याऽउपस्थे० | ,, | ,, | अग्निः | त्रिष्टुप् |
| | १६ | अन्तरग्ने रुचा त्व० | ,, | ,, | ,, | अनुष्टुप् |
| | १७ | शिवो भूत्वा मह्यमग्ने० | ,, | ,, | ,, | ,, |
| | १८ | दिवस्परि प्रथमं जज्ञे अग्नि० | ,, | ,, वत्सप्रीर्भालन्दनः | ,, | त्रिष्टुप् |
| | १९ | विद्मा ते अग्ने त्रेधा त्रयाणि० | ,, | ,, ,, ,, | ,, | ,, |
| | २० | समुद्रे त्वा नृमणा० | ,, | ,, ,, ,, | ,, | ,, |
| | २१ | अक्रन्ददग्निः स्तनयन्निव० | ,, | ,, ,, ,, | ,, | ,, |
| | २२ | श्रीणामुदारो धरुणो रयीणां० | ,, | ,, ,, ,, | ,, | ,, |
| | २३ | विश्वस्य केतुर्भुवनस्य गर्भ० | ,, | ,, ,, ,, | ,, | ,, |
| | २४ | उशिक्पावकोऽअरतिः० | ,, | ,, ,, ,, | ,, | ,, |
| | २५ | दृशानो रुक्मऽउर्व्या० | ,, | ,, ,, ,, | ,, | ,, |
| | २६ | यस्तेऽअद्य कृणवद्भद्रशोचे० | ,, | ,, ,, ,, | ,, | ,, |
| | २७ | आ तं भज सौश्रवसेष्वग्न० | ,, | ,, ,, ,, | ,, | ,, |
| | २८ | त्वामग्ने यजमाना अनु० | ,, | ,, ,, ,, | ,, | ,, |
| | २९ | अस्ताव्यग्निर्नराꣳ सुशेवो० | ,, | ,, ,, ,, | ,, | ,, |
| [अ.३। मं.१ ] | ३० | समिधाग्निं दुवस्यत० | ,, | ,, विरूपाक्ष आंगिरसः | ,, | गायत्री |
| | ३१ | उदु त्वा विश्वे देवा० | ,, | ,, तापसः | ,, | अनुष्टुप् |
| | ३२ | प्रेदग्ने ज्योतिष्मान्याहि० | ,, | ,, | ,, | ,, |
| [अ.१२।६,२१] | ३३ | अक्रन्ददग्निः स्तनयन्निव० | ,, | ,, वत्सप्रीः | ,, | त्रिष्टुप् |
| | ३४ | प्र-प्रायमग्निर्भरतस्य शृण्वे० | ,, | ,, वसिष्ठः | ,, | ,, |
| | ३५ | आपो देवीः प्रतिगृभ्णीत० | ,, | ,, | आपः | ,, |

राप्यप्स्वग्ने विरूप आग्नेयीं गायत्रीं, गर्भो असि तिस्रोऽनुष्टुभो, बोधा मे दीर्घतमा-
स्त्रिष्टुभᳫं, स बोधि सोमाहुतिराग्नेयीं यजुरन्तां गायत्रीं यजुर्वैश्वकर्मणं, पुनस्त्वा त्रिष्टु-
बाग्नेयी ॥ ८ ॥ [ य० अ० १२ मं० १८--४४ ]

अपेत लिङ्गोक्तबहुदेवत्या, संज्ञानमूषदेवत्यमग्नेः सिकताश्रितः परिश्रितोऽयᳫं सः पञ्चर्चमाग्नेयं त्रैष्टुभं विश्वामित्रश्चतुर्थ्यनुष्टुबयं तेऽनुष्टुप्, चिदैष्टके, लोकं लिङ्गोक्ताऽनुष्टुप्, ता अस्यापीं प्रियमेध ऐन्द्र, इन्द्रं जेता माधुच्छन्दस ऐन्द्रीᳫं, समितं चतस्रो ह्यग्निदेवत्या

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | ३६ | अप्स्वग्ने सधिष्टव० | प्रजापतिः | साध्याः | विरूपः | अग्निः | गायत्री |
| | ३७ | गर्भोऽअस्योषधीनां० | ,, | ,, | | ,, | अनुष्टुप् |
| | ३८ | प्रसद्य भस्मना योनि० | ,, | ,, | | ,, | ,, |
| | ३९ | पुनरासद्य सदन० | ,, | ,, | | ,, | ,, |
| [अ.१२मं९] | ४० | पुनरूर्जा निवर्तस्व | ,, | ,, | | ,, | गायत्री |
| [अ.१२मं१०] | ४१ | सह रय्या निवर्तस्वा० | ,, | ,, | | ,, | ,, |
| | ४२ | बोधा मेऽअस्य वचसो यविष्ठ० | ,, | ,, | दीर्घतमाः | ,, | त्रिष्टुप् |
| | ४३ | स बोधि सूरिर्मघवा० | ,, | ,, | सोमाहुतिः | ,, | गायत्री ( यजुरन्ता ) |
| | | विश्वकर्मणे स्वाहा० | ,, | ,, | ,, | विश्वकर्मा | |
| | ४४ | पुनस्त्वादित्या रुद्रा वसवः० | ,, | ,, | | अग्निः | त्रिष्टुप् |
| | ४५ | अपेत वीत वि च सर्पतातो० | ,, | ,, | | लिङ्गोक्ता बह्वयो देवताः | ,, |
| | ४६ | संज्ञानमसि कामधरणं मयि० | ,, | ,, | | ऊषः | |
| | | अग्नेर्भस्मास्यग्नेः पुरीषमसि । | ,, | ,, | | सिकता | |
| | | चित स्थ परिचित० | ,, | ,, | | परिश्रितः | |
| | ४७ | अयᳫंसोऽअग्निर्यस्मिन्० | ,, | ,, | विश्वामित्रः | अग्निः | त्रिष्टुप् |
| | ४८ | अग्ने यत्ते दिवि वर्चः० | ,, | ,, | ,, | ,, | ,, |
| | ४९ | अग्ने दिवोऽअर्णमच्छा० | ,, | ,, | ,, | ,, | ,, |
| | ५० | पुरीष्यासोऽअग्नयः० | ,, | ,, | ,, | ,, | अनुष्टुप् |
| | ५१ | इडामग्ने पुरुदँसᳫं सनिᳫं० | ,, | ,, | ,, | ,, | त्रिष्टुप् |
| [अ.३।१४] | ५२ | अयं ते योनिर्ऋत्वियो० | ,, | ,, | देवश्रवा-देववातौ भारतौ | ,, | अनुष्टुप् |
| | ५३ | चिदसि तया देवतयाङ्गि० | ,, | ,, | | इष्टका | |
| | | परिचिदसि तया० | ,, | ,, | | ,, | |
| | ५४ | लोकं पृण छिद्रं पृण० | ,, | ,, | | लिङ्गोक्ता(लोकंपृणा) | अनुष्टुप् |
| | ५५ | ताऽअस्य सूददोहसः० | ,, | ,, | प्रियमेधः ऐन्द्रः | आपः | ,, |
| | ५६ | इन्द्रं विश्वाऽअवीवृधन्० | ,, | ,, | जेता माधुच्छंदसः | इन्द्रः | ,, |

उष्णिगुपरिष्टाद्बृहत्युष्णिक्पंक्तयो, मातेवोखास्तुतिस्त्रिष्टुप् ॥९॥ [य०अ०१२मं०४५-६१]

असुन्वन्तं नैर्ऋतं तृचं त्रैष्टुभं, यं ते यजमानदेवत्या, नमो विराड् भूतिदेवत्यैकपदा, निवेशन ऐन्द्रीं त्रिष्टुभं विश्वावसुर्देवगन्धर्वः, सीरा द्वे सीरदेवत्ये बुधः सौम्यो गायत्रीत्रिष्टुभौ, शुनं चतस्रः सीतादेवत्याः कुमारहारितो द्वे त्रिष्टुभौ तृतीया पंक्तिश्चतुर्थ्यनुष्टुब्, विमुच्यध्वमानडुही गायत्री, सजूर्लिङ्गोक्तदेवतम् ॥१०॥ [य० अ०१२मं०६२–७४]

या ओषधीः सप्तविंशतिमनुष्टुभ ओषधिस्तुतिमाथर्वणो भिषङ्, मुञ्चन्तु बन्धुद्वा-

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | ५७ | समितᳪ सङ्कल्पेथाᳪ० | प्रजापतिः | साध्याः | | द्वौ अग्नी | उष्णिक् |
| | ५८ | सं वां मनाᳪसि सं व्रता० | ,, | ,, | | ,, | उपरिष्टाद्बृहती |
| | ५९ | अग्ने त्वं पुरीष्यो० | ,, | ,, | | ,, | उष्णिक् |
| [अ.५।३] | ६० | भवतं नः समनसौ० | ,, | ,, | | ,, | पंक्तिः |
| | ६१ | मातेव पुत्रं पृथिवी० | ,, | ,, | | उखा | त्रिष्टुप् |
| | ६२ | असुन्वन्तमयजमानमिच्छ० | ,, | ,, | | निर्ऋतिः | ,, |
| | ६३ | नमः सु ते निर्ऋते० | ,, | ,, | | ,, | ,, |
| | ६४ | यस्यास्ते घोर आसन्० | ,, | ,, | | ,, | ,, |
| | ६५ | यं ते देवी निर्ऋतिराबबन्ध० | ,, | ,, | | यजमानः | त्रिष्टुप् |
| | | नमो भूत्यै येदं चकार । | ,, | ,, | | भूतिः | एकपदा विराट् |
| | ६६ | निवेशनः सङ्गमनो वसूनां० | ,, | ,, | विश्वावसुः देवगंधर्वः | इन्द्रः | त्रिष्टुप् |
| | ६७ | सीरा युञ्जन्ति कवयो० | ,, | ,, | बुधः सौम्यः | सीरः | गायत्री |
| | ६८ | युनक्त सीरा वि युगा तनुध्वं० | ,, | ,, | ,, ,, | ,, | त्रिष्टुप् |
| | ६९ | शुनᳪ सु फाला विकृषन्तु० | ,, | ,, | कुमारहारितः | सीता | ,, |
| | ७० | घृतेन सीता मधुना समज्यतां० | ,, | ,, | ,, | ,, | ,, |
| | ७१ | लाङ्गलं पवीरवत्० | ,, | ,, | ,, | ,, | पंक्तिः |
| | ७२ | कामं कामदुघे धुक्ष्व० | ,, | ,, | ,, | ,, | अनुष्टुप् |
| | ७३ | विमुच्यध्वमघ्न्या० | ,, | ,, | | अनडुत् | गायत्री |
| | ७४ | सजूरब्दोऽअयवोभिः० | ,, | ,, | | लिङ्गोक्ता(अब्दादयः) | |
| | ७५ | या ओषधीः पूर्वा जाता० | ,, | ,, | आथर्वणो भिषक् | ओषधयः | अनुष्टुप् |
| | ७६ | शतं वोऽअम्ब धामानि० | ,, | ,, | ,, ,, | ,, | ,, |
| | ७७ | ओषधीः प्रतिमोदध्वं | ,, | ,, | ,, ,, | ,, | ,, |
| | ७८ | ओषधीरिति मातर० | ,, | ,, | ,, ,, | ,, | ,, |
| | ७९ | अश्वत्थे वो निषदनं० | ,, | ,, | ,, ,, | ,, | ,, |
| | ८० | यत्रौषधीः समग्मत० | ,, | ,, | ,, ,, | ,, | ,, |
| | ८१ | अश्वावतीᳪ सोमावती० | ,, | ,, | ,, ,, | ,, | ,, |
| | ८२ | उच्छुष्मा ओषधीनाᳪ | ,, | ,, | ,, ,, | ,, | ,, |

दशानारभ्याधीता, मा मा हिरण्यगर्भः कार्यी त्रिष्टुभमभ्यावर्तस्वोष्णिगाग्नेय्यग्ने यद्गायत्रीषं त्रिष्टुबग्ने तव पावकोऽग्निराग्नेयथ्ठ षड्टचं, प्रथमे विष्टारपंक्ती तिस्रः सतोबृहत्य उपरिष्टाज्ज्योतिः षष्ठ्याप्यायस्व गोतमः सौम्यो गायत्रीत्रिष्टुबुष्णिह, आ तेऽवत्सारस्तु-

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ८३ | इष्कृतिर्नाम वो माता० | प्रजापतिः | साध्याः | आथर्वणोभिषक् | | | ओषधयः | अनुष्टुप् |
| ८४ | अति विश्वाः परिष्ठा० | ,, | ,, | ,, | ,, | | ,, | ,, |
| ८५ | यदिमा वाजयन्नह० | ,, | ,, | ,, | ,, | | ,, | ,, |
| ८६ | यस्यौषधीः प्रसर्पथा० | ,, | ,, | ,, | ,, | | ,, | ,, |
| ८७ | साकं यक्ष्म प्रपत० | ,, | ,, | ,, | ,, | | ,, | ,, |
| ८८ | अन्या वोऽअन्या० | ,, | ,, | ,, | ,, | | ,, | ,, |
| ८९ | याः फलिनीर्या० | ,, | ,, | ,, | ,, | | ,, | ,, |

[ अथ अनारभ्याधीताः मन्त्राः ९०–१०१ ]

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ९० | मुञ्चन्तु मा शपथ्या० | ,, | ,, | ,, | ,, | बन्धुः | ,, | ,, |
| ९१ | अवपतन्तीरवदन्० | ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | ,, |
| ९२ | या ओषधीः सोमराज्ञीर्बह्वीः० | ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | ,, |
| ९३ | या ओषधीः सोमराज्ञीर्विष्ठिताः० | ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | ,, |
| ९४ | याश्चेदमुपशृण्वन्ति० | ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | ,, |
| ९५ | मा वो रिषत्खनिता० | ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | ,, |
| ९६ | ओषधयः समवदन्त० | ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | ,, |
| ९७ | नाशयित्री बलासस्या० | ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | ,, |
| ९८ | त्वां गन्धर्वाऽअखनँस्त्वा० | ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | ,, |
| ९९ | सहस्व मेऽअरातीः० | ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | ,, |
| १०० | दीर्घायुस्तऽओषधे० | ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | ,, |
| १०१ | त्वमुत्तमास्योषधे० | ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | ,, |

[ इत्यनारभ्याधीताः मन्त्राः समाप्ताः ]

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| १०२ | मा मा हिꣳसीज्जनिता० | ,, | ,, | हिरण्यगर्भः | कः | त्रिष्टुप् |
| १०३ | अभ्यावर्तस्व पृथिवि० | ,, | ,, | | अग्निः | उष्णिक् |
| १०४ | अग्ने यत्ते शुक्रं० | ,, | ,, | | ,, | गायत्री |
| १०५ | इषमूर्जमहमित० | ,, | ,, | | आशीः | त्रिष्टुप् |
| १०६ | अग्ने तव श्रवो वयो० | ,, | ,, | पावकोऽग्निः | अग्निः | विष्टारपंक्तिः |
| १०७ | पावकवर्चाः शुक्रवर्चा० | ,, | ,, | ,, | ,, | ,, |
| १०८ | ऊर्जो नपाज्जातवेदः० | ,, | ,, | ,, | ,, | सतोबृहती |
| १०९ | इरज्यन्नग्ने प्रथयस्व० | ,, | ,, | ,, | ,, | ,, |
| ११० | इष्कर्तारमध्वरस्य प्रचेतसं० | ,, | ,, | ,, | ,, | ,, |
| १११ | ऋतावानं महिषं विश्वदर्शत० | ,, | ,, | ,, | ,, | उपरिष्टाज्ज्योतिः |
| ११२ | आप्यायस्व समेतु ते० | ,, | ,, | गोतमः | सोमः | गायत्री |

भ्यं ता द्वे विरूपस्तिस्रो गायत्र्य आग्नेय्यः ॥ ११ ॥ [ य० अ० १२ मं० ७५--११७ ]

इति० संहितायां द्वादशोऽध्यायः ।

मयि ककुबाग्नेयी, ब्रह्मादित्यदेवत्या त्रिष्टुब्भिरण्यगर्भो हिरण्यगर्भः कायीं त्रिष्टुभं, द्रप्सो देवश्रवा आदित्यो, नमोऽस्तु सार्प्यं तृचमानुष्टुभं, कृणुष्व पञ्च प्रतिसरा राक्षोघ्ना, देवानामार्षंँ, सर्वास्त्रिष्टुभ आग्नेयीर्वामदेवश्चापश्यदग्नेष्ट्वा यजुराग्नेयमिन्द्रस्यैन्द्रं, भुवस्त्रिशिरा आग्नेयीं त्रिष्टुभम् ॥ १२ ॥ [ य० अ० १३ मं० १–१५ ]

ध्रुवास्यूर्ध्वबृहती, प्रजापतिरनुष्टुब्भूरसि प्रस्तारपंक्तिरासाँ स्वयमातृण्णा देवता विश्वस्मा इत्येतस्य च यजुषः, काण्डात्काण्डादानुष्टुभं द्व्यृचमग्निना दृष्टं दूर्वेष्टकदैवतं,

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | ११३ | सं ते पयाँ्ँसि समु यन्तु० | प्रजापतिः | साध्याः | गोतमः | सोमः | त्रिष्टुप् |
| | ११४ | आप्यायस्व मदिन्तम० | ,, | ,, | ,, | ,, | उष्णिक् |
| | ११५ | आ ते वत्सो मनो० | ,, | ,, | अवत्सारः | अग्निः | गायत्री |
| | ११६ | तुभ्यं ताऽअङ्गिरस्तम० | ,, | ,, | विरूपः | ,, | ,, |
| | ११७ | अग्निः प्रियेषु धामसु० | ,, | ,, | ,, | ,, | ,, |
| | | अथ० संहितायां त्रयोदशोऽध्यायः । | | | | | |
| | १ | मयि गृह्णाम्यग्रेऽअग्निँ्ँ० | प्रजापतिः | साध्याः | | अग्निः | ककुप् |
| [अ.११ मं२९] | २ | अपां पृष्ठमसि० | ,, | ,, | | पुष्करपर्णं | स्वराट्पंक्तिः |
| | ३ | ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्तात्० | ,, | ,, | | आदित्यः | त्रिष्टुप् |
| | ४ | हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे० | ,, | ,, | हिरण्यगर्भः | कः | ,, |
| | ५ | द्रप्सश्चस्कन्द पृथिवी० | ,, | ,, | देवश्रवाः | आदित्यः | ,, |
| | ६ | नमोऽस्तु सर्पेभ्यो० | ,, | ,, | | सर्पाः | अनुष्टुप् |
| | ७ | याऽइषवो यातुधानानां० | ,, | ,, | | ,, | ,, |
| | ८ | ये वामी रोचने दिवो० | ,, | ,, | | ,, | ,, |
| [ राक्षोघ्नाः प्रतिसराः । मं. ९–१३ ] | | | | | | | |
| | ९–१३ | कृणुष्व० ॥ ९ ॥–ऊर्ध्वो भव० ॥१३॥ | ,, | ,, | देवाः, वामदेवः | अग्निः | त्रिष्टुप् |
| [ अ.३।१२ ] | १४ | अग्निर्मूर्धा दिवः ककुत्पतिः० | ,, | ,, | विरूपः | ,, | गायत्री |
| | | इन्द्रस्य त्वौजसा सादयामि । | ,, | ,, | | इन्द्रः | |
| | १५ | भुवो यज्ञस्य रजसश्च नेता० | ,, | ,, | त्रिशिराः | अग्निः | त्रिष्टुप् |
| | १६ | ध्रुवासि धरुणास्तृता० | ,, | ,, | | स्वयमातृण्णा | ऊर्ध्वबृहती |
| | १७ | प्रजापतिष्ट्वा सादयत्वपां० | ,, | ,, | | ,, | अनुष्टुप् |
| | १८ | भूरसि भूमिरस्यदिति० | ,, | ,, | | ,, | प्रस्तारपंक्तिः |
| | १९ | विश्वस्मै प्राणायापानाय० | ,, | ,, | | ,, | |
| | २० | काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्ती० | ,, | ,, | अग्निः | दूर्वेष्टका | अनुष्टुप् |
| | २१ | या शतेन प्रतनोषि० | ,, | ,, | ,, | ,, | ,, |

यास्त आग्नेयं द्व्यृचमानुष्टुभमिन्द्राग्निभ्यां दृष्टं, विराडयं लोकः, स्वराडसौ लोकः, प्रजापतिष्ट्वा वैश्वज्योतिषं, मधुश्चर्तुदैवतमषाढासि सवितापश्यद्देवा वाऽपश्यन्निष्टका-दैवतम् ॥ १३ ॥ [ य० अ० १३ मं० १६-२६ ]

मधुवाता वैश्वदेवं तृचं गायत्रं गोतमोऽपां गम्भन्पंक्तिस्त्रीन्त्समुद्रांस्त्रिष्टुप् कौर्म्यं द्व्यृचं, ध्रुवासि त्रिष्टुबिषे बृहत्यौषं द्व्यृचमग्ने युक्ष्वाग्नेयं द्व्यृचं गायत्रमाद्यायां भरद्वाजो द्वितीयस्यां विरूपः, सम्यक् त्रिष्टुब् लिङ्गोक्तदेवतर्चे त्वा बृहत्यग्निर्ज्योतिषोष्णिगादित्यं गर्भं पञ्चर्चमाग्नेयं त्रैष्टुभमिमं मा पञ्चर्चमाग्नेयं त्रैष्टुभमेव द्वे द्वे चान्ते यजुषी, त्वं यविष्ठोशनाः काव्य आग्नेयीमनिरुक्तां गायत्रीमपां त्वा विंशतिरैष्टकान्ययं पुरः पश्चाश-

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | २२ | यास्तेऽअग्ने सूर्ये रुचो० | प्रजापतिः | साध्याः | इन्द्राग्नी | अग्निः | अनुष्टुप् |
| | २३ | या वो देवाः सूर्ये रुचो० | ,, | ,, | ,, | ,, | ,, |
| | २४ | विराड् ज्योतिरधारयत् । | ,, | ,, | | अयं लोकः | |
| | | स्वराड् ज्योतिरधारयत् । | ,, | ,, | | असौ लोकः | |
| | | प्रजापतिष्ट्वा सादयन्तु० | ,, | ,, | | विश्वज्योतिः | |
| | २५ | मधुश्च माधवश्च० | ,, | ,, | | ऋतुः | |
| | २६ | अषाढासि सहमाना० | ,, | ,, | सविता देवा वा | इष्टका | |
| | २७ | मधु वाताऽऋतायते० | ,, | ,, | गोतमः | विश्वेदेवाः | गायत्री |
| | २८ | मधु नक्तमुतोषसो० | ,, | ,, | ,, | ,, | ,, |
| | २९ | मधुमान्नो वनस्पति० | ,, | ,, | ,, | ,, | ,, |
| | ३० | अपां गम्भन्त्सीद० | ,, | ,, | | कूर्मः(प्रजापतिरादित्यो वा) | पंक्तिः |
| | ३१ | त्रीन्त्समुद्रान्त्समसृपत्० | ,, | ,, | | ,, | त्रिष्टुप् |
| [अ.८मं.३२] | ३२ | मही द्यौः पृथिवी च न० | ,, | ,, | मेधातिथिः | द्यावापृथिवी | गायत्री |
| [ अ.६ मं४ ] | ३३ | विष्णोः कर्माणि पश्यत० | ,, | ,, | ,, | विष्णुः | ,, |
| | ३४ | ध्रुवासि धरुणेतो जज्ञे० | ,, | ,, | | उषा (उखा) | त्रिष्टुप् |
| | ३५ | इषे राये रमस्व० | ,, | ,, | | ,, ,, | बृहती |
| | ३६ | अग्ने युक्ष्वा हि ये० | ,, | ,, | भरद्वाजः | अग्निः | गायत्री |
| | ३७ | युक्ष्वा हि देवहूतमाँ२ऽ० | ,, | ,, | विरूपः | ,, | ,, |
| | ३८ | सम्यक्स्रवन्ति सरितो न० | ,, | ,, | | लिङ्गोक्ता | त्रिष्टुप् |
| | ३९ | ऋचे त्वा रुचे त्वा० | ,, | ,, | | (हिरण्यशकलं) | बृहती |
| | ४० | अग्निर्ज्योतिषा० | ,, | ,, | | ,, | उष्णिक् |
| | ४१–४५ | आदित्यं गर्भं० ॥४१॥–यो अग्नि०॥४५॥ | ,, | ,, | | अग्निः | त्रिष्टुप् |
| [अ.७मं.४२] | ४६ | चित्रं देवानामुदगादनीकं० | ,, | ,, | कुत्सःआङ्गिरसः | सूर्यः | ,, |
| | ४७–५१ | इमं मा० ॥ ४७ ॥–अजो ह्यग्ने०॥५१॥ | ,, | ,, | | अग्नि | (यजुरन्ता) ,, |
| | ५२ | त्वं यविष्ठ दाशुषो० | ,, | ,, | उशनाः काव्यः | ,, | अनिरुक्ता गायत्री |

त्प्राणभृद्देवत्यानि, लोकं ता इन्द्रं, तिस्रः प्रतीकोक्ता, एवꣳ सर्वत्र ॥१४॥ [ य०अ०१३ मं० २७–५८ ]

इति० संहितायां त्रयोदशोऽध्यायः ।

अथ द्वितीया चितिः– ध्रुवक्षितिः पञ्चाश्विन्यस्तासां प्रथमा विराट् चतस्रस्त्रिष्टुभो यजुरन्ताः शुक्रश्चर्तव्यꣳ सजूः पञ्च विश्वेषां देवानामार्षं ता एव देवताः, प्राणं मे पञ्च वायव्यान्यपः पञ्चापानि, मूर्द्धा वय एकोनविꣳशतिर्लिङ्गोक्तानि ॥१५॥ [ य०अ०१४ मं० १–१० ]

अथ तृतीयेन्द्राग्नी अनुष्टुप् पूर्वोऽर्द्धर्चे ऐन्द्राग्न उत्तरः स्वयमातृण्णादेवतो, विश्वकर्मा वायव्यꣳ, राज्ञ्यसि पञ्च दिग्देवत्यानि, विश्वकर्मा वायव्यं, नभश्चेषश्चर्तव्ये, आयुर्मे दश लिङ्गोक्तदेवतानि, मा छन्दश्च षट्त्रिꣳशन्मूर्धानुष्टुब्, यन्त्री परोष्णिक् चतुर्दश यजूꣳषि

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ५३ | अपां त्वेमन्त्सादयाम्यपां० | प्रजापतिः | साध्याः | | इष्टकाः(अपस्याः) | |
| | गायत्रेण त्वा छन्दसा० | ,, | ,, | | ,, (छन्दस्याः) | |
| ५४–५८ | अयं पुरो० ॥५४॥—इयमुपरि०॥५८॥ | ,, | ,, | | प्राणभृतः(इष्टकाः) | |

अथ० संहितायां चतुर्दशोऽध्यायः ।

[ अथ द्वितीया चितिः । मंत्र १—१० ]

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | ध्रुवक्षितिर्ध्रुवयोनिर्ध्रुवासि० | प्रजापतिः, | साध्याः, | देवाः, | अश्विनौ | विराट् |
| २–५ | कुलायिनी०॥२॥–अदित्यास्त्वा० ॥ ५ ॥ | ,, | ,, | ,, | ,, | त्रिष्टुप् (यजुरन्ता) |
| ६ | शुक्रश्च शुचिश्च० | ,, | ,, | ,, | ऋतुः | |
| ७ | सजूर्ऋतुभिः सजूर्विधाभिः० | ,, | ,, | ,, विश्वेदेवाः | विश्वेदेवाः | |
| ८ | प्राणं मे पाह्यपानं मे० | ,, | ,, | ,, | वायुः | |
| | अपः पिन्वौषधीर्जिन्व० | ,, | ,, | ,, | आपः | |
| ९ | मूर्धा वयः प्रजापतिश्छन्दः० | ,, | ,, | ,, | लिङ्गोक्ताः | |
| १० | अनड्वान्वयः पंक्तिश्छन्दो० | ,, | ,, | ,, | ,, | |

[ अथ तृतीया चितिः मं० ११—२२ ]

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ११ | इन्द्राग्नीऽअव्यथमाना० | ,, | ,, | इन्द्राग्नी, विश्वकर्मा | | इन्द्राग्नी | अनुष्टुप् |
| | पृष्ठेन द्यावापृथिवी० | ,, | ,, | ,, | ,, | स्वयमातृण्णा | |
| १२ | विश्वकर्मा त्वा सादयतु० | ,, | ,, | ,, | ,, | वायुः | |
| १३ | राज्ञ्यसि प्राची दिक्० | ,, | ,, | ,, | ,, | दिशः | |
| १४ | विश्वकर्मा त्वा सादय० | ,, | ,, | ,, | ,, | वायुः | |
| १५ | नभश्च नभस्यश्च० | ,, | ,, | ,, | ,, | ऋतवः | |
| १६ | इषश्चोर्जश्च शारदा० | ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | |

प्राणदेवत्यानि ॥ १६ ॥ [ य० अ० १४ मं० ११-२२ ]

अथ चतुर्थ्याशुरष्टादशाग्नेर्दशैकया सप्तदश सर्वाणि लिङ्गोक्तदेवतानि, सहश्चर्तव्यम् ॥ १७ ॥ [ य० अ० १४ मं० २३-३१ ]

इति० संहितायां चतुर्दशोऽध्यायः ।

अथ पञ्चम्यग्ने जातानाग्नेय्यौ त्रिष्टुभौ, षोडशी चतुश्चत्वारिंशो लिङ्गोक्ते, अग्नेस्त्रिष्टुबेवश्चत्वारिंशद्रश्मिनैकोनत्रिंशद्राज्यासि पश्चायं पुरः पञ्चैतानि सर्वाणि लिङ्गोक्तदेवतानि ॥ १८ ॥ [ य० अ० १५ मं० १-१९ ]

अग्निर्मूर्धाग्नेयोऽनुवाकः, प्रथमस्तृचो गायत्रो, द्वितीयस्त्रैष्टुभो भुवस्तृतीयो जागतोऽ-

---

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १७-२० | | आयुर्मे ०॥१७॥-अग्निर्देवता०॥२०॥ | प्रजापतिः | साध्याः | इन्द्राग्नी | विश्वकर्मा | लिङ्गोक्ताः | |
| | २१ | मूर्धासि राड् ध्रुवासि० | ,, | ,, | ,, | ,, | प्राणः | अनुष्टुप् |
| | २२ | यन्त्री राड् यन्त्र्यसि० | ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | परोष्णिक् |

[ अथ० चतुर्थी चितिः । मं० २३-३१ ]

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | २३ | आशुस्त्रिवृद्भान्तः० | ,, | ,, | ऋषयः | | लिङ्गोक्ताः (त्रिवृदायः) | |
| | २४ | अग्नेर्भागोऽसि० | ,, | ,, | ,, | ,, | (इष्टकाः) | |
| | २५ | वसूनां भागोऽसि० | ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | |
| | २६ | यवानां भागोऽसि० | ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | |
| | २७ | सहश्च सहस्यश्च० | ,, | ,, | ,, | | ऋतवः | |
| २८-३१ | | एकया० ॥२८॥-नवविंशं०॥३१॥ | ,, | ,, | ,, | | लिङ्गोक्ता | |

अथ० संहितायां पञ्चदशोऽध्यायः ।

[ अथ पञ्चमी चितिः । ]

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | १ | अग्ने जातान्प्रणुदा नः० | प्रजापतिः, | साध्याः, | परमेष्ठी | | अग्निः | त्रिष्टुप् |
| | २ | सहसा जातान्प्रणुदा नः | ,, | ,, | ,, | | ,, | ,, |
| | ३ | षोडशी स्तोम० चतुश्चत्वा० | ,, | ,, | ,, | | लिङ्गोक्ताः(इष्टकाः) | |
| | | अग्नेः पुरीषमस्यप्सो० | ,, | ,, | ,, | | ,, | त्रिष्टुप् |
| ४-१९ | | एवच्छन्दो ०॥४॥-अयमुपर्य०॥१९॥ | ,, | ,, | ,, | | ,, | |
| [अ.३ मं.१२] | २० | अग्निर्मूर्धा दिवः ककुत्पतिः | ,, | ,, | ,, | | अग्निः | गायत्री |
| | २१ | अयमग्निः सहस्रिणो० | ,, | ,, | ,, | विरूपः | ,, | ,, |
| [अ.११।३२] | २२ | त्वामग्ने पुष्करादध्यथर्वा० | ,, | ,, | ,, | | ,, | ,, |
| [अ.१३।१५] | २३ | भुवो यज्ञस्य रजसश्च नेता० | ,, | ,, | ,, | | ,, | त्रिष्टुप् |
| | २४ | अबोध्यग्निः समिधा० | ,, | ,, | ,, | बुधगविष्ठिरौ | ,, | ,, |
| | २५ | अवोचाम कवये मेध्याय० | ,, | ,, | ,, | | ,, | ,, |
| [अ.३ मं.१५] | २६ | अयमिह प्रथमो धायि० | ,, | ,, | ,, | | ,, | जगती |
| | २७ | जनस्य गोपा अजनिष्ट० | ,, | ,, | ,, | सुतंभरः | ,, | ,, |

यमिह, चतुर्थ आनुष्टुभः सखायः सं, पञ्चमः प्रगाथ एना वस्तत्र पूर्वा बृहती सतोबृहत्युत्तरा, ताभ्यां तिस्रो बृहत्यः सम्पादिताः, षष्ठ औष्णिहोऽग्ने वाजस्य, सप्तमः पुनः काकुभः प्रगाथो भद्रो नस्तत्र पूर्वा ककुप् सतोबृहत्युत्तरा, ताभ्यां तिस्रः ककुभः संपादिता, अष्टमः पांक्तोऽग्निं तं, पदपांक्तो नवमोऽग्ने तमग्निᳪ होतारमतिच्छन्दास्त्र्यवसानाग्ने त्वं द्वैपदस्तृचः ॥ १९ ॥ [ य० अ० १५ मं० २०–५१ ]

अयमग्निर्विरूपोऽबोधि बुधगविष्ठिरौ, जनस्य सुतंभरः, सखाय इषः, सᳪसमित् संवननस्त्वां प्रस्कण्व, एना वो वसिष्ठोऽग्ने वाजस्य गोतमो, भद्रो नः सौभरिरग्निं तं कुमारवृषौ, येनाष्टावाग्नेय्यः षट् त्रिष्टुभो द्वे अनुष्टुभौ, तपश्चर्तव्यं, परमेष्ठी सौरं, प्रोथ-

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| २८ | त्वामग्नेऽअङ्गिरसो गुहा० | प्रजापतिः | साध्याः | परमेष्ठी | अग्निः | जगती |
| २९ | सखायः सं वः सम्यञ्च० | ,, | ,, | ,, इषः | ,, | अनुष्टुप् |
| ३० | सᳪसमिद्युसे वृषन्० | ,, | ,, | ,, संवननः | ,, | ,, |
| ३१ | त्वां चित्रश्रवस्तम० | ,, | ,, | ,, प्रस्कण्वः | ,, | ,, |
| ३२ | एना वो अग्निं नमसो० | ,, | ,, | ,, वसिष्ठः | ,, | प्रगाथः |
| ३३ | विश्वस्य दूतममृतं० | ,, | ,, | ,, | ,, | ,, |
| ३४ | स दुद्रवत्स्वाहुतः० | ,, | ,, | ,, | ,, | ,, |
| ३५ | अग्ने वाजस्य गोमत० | ,, | ,, | ,, गोतमः | ,, | उष्णिक् |
| ३६ | स ईधानो वसुष्कवि० | ,, | ,, | ,, | ,, | ,, |
| ३७ | क्षपो राजन्नुत त्मना० | ,, | ,, | ,, | ,, | ,, |
| ३८ | भद्रो नो अग्निराहुतो० | ,, | ,, | ,, सौभरिः | ,, | काकुभः प्रगाथः |
| ३९ | भद्रा उत प्रशस्तयो० | ,, | ,, | ,, | ,, | ,, ,, |
| ४० | येना समत्सु सासहो० | ,, | ,, | ,, | ,, | ,, ,, |
| ४१ | अग्निं तं मन्ये यो वसु० | ,, | ,, | ,, कुमारवृषौ | ,, | पंक्तिः |
| ४२ | सोऽअग्निर्यो वसुर्गृणे० | ,, | ,, | ,, | ,, | ,, |
| ४३ | उभे सुश्चन्द्र सर्पिषो० | ,, | ,, | ,, | ,, | ,, |
| ४४ | अग्ने तमद्याश्वं न० | ,, | ,, | ,, | ,, | पदपंक्तिः |
| ४५ | अधा ह्यग्ने क्रतो० | ,, | ,, | ,, | ,, | ,, |
| ४६ | एभिर्नोऽअर्कैर्भवा० | ,, | ,, | ,, | ,, | ,, |
| ४७ | अग्निᳪ होतारं मन्ये० | ,, | ,, | ,, | अग्निः | अतिच्छन्दाः त्र्यवसाना |
| [अ.३।२५-२६] ४८ | अग्ने त्वं नोऽअन्तम० | ,, | ,, | ,, बन्ध्वादयः | ,, | द्विपदा विराट् |
| ४९–५४ | येन ऋषय०॥४९–उद्बुध्यस्व०॥५४॥ | ,, | ,, | ,, | ,, | त्रिष्टुप् |
| ५५ | येन वहसि सहस्रं० | ,, | ,, | ,, | ,, | अनुष्टुप् |
| ५६ | अयं ते योनिर्ऋत्वियो० | ,, | ,, | ,, | ,, | ,, |

दश्वो वसिष्ठस्त्रिष्टुभमाग्नेयीमायोर्द्वे स्वयमातृण्णदेवते, सहस्रस्य पञ्चाग्नेयानि ॥ २० ॥ [ य० अ० १५ मं० २१–६५ ]

इति० संहितायां पञ्चदशोऽध्यायः।

रौद्रोऽध्यायः-- परमेष्ठिन आर्षं देवानां वा प्रजापतेर्वाद्योऽनुवाकः षोडशर्चं एकरुद्रदेवत्यः, प्रथमा गायत्री तिस्रोऽनुष्टुभस्तिस्रः पंक्तयः, सप्तानुष्टुभो, द्वे जगत्यौ, मा नो द्वे कुत्सः ॥ २१ ॥ [ य० अ० १६ मं० १--१६ ]

अन्त्यानुवाके सप्तैकरुद्रस्तुतिराद्योपरिष्टाद्बृहती, द्वितीया जगती कुत्सस्य, तृतीया

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | ५७ | तपश्च तपस्यश्च० | प्रजापातिः | साध्याः | परमेष्ठी | ऋतवः | |
| | ५८ | परमेष्ठी त्वा सादयतु० | ,, | ,, | ,, | सूर्यः | |
| [अ.१२।५४] | ५९ | लोकं पृण छिद्रं पृण० | ,, | ,, | ,, | लिङ्गोक्ता(लोकंपृणा) | अनुष्टुप् |
| [अ.१२।५५] | ६० | ताऽअस्य सूददोहसः० | ,, | ,, | ,, प्रियमेधः | आपः | ,, |
| [अ.१२ मं.५६] | ६१ | इन्द्रं विश्वाऽअवीवृधन्० | ,, | ,, | ,, ऐन्द्रः जेता माधुच्छंदसः | इन्द्रः | ,, |
| | ६२ | प्रोथदश्वो न यवसे० | ,, | ,, | ,, वसिष्ठः | अग्निः | त्रिष्टुप् |
| | ६३ | आयोष्ट्वा सदने सादयामि० | ,, | ,, | ,, | स्वयमातृण्णा | |
| | ६४ | परमेष्ठी त्वा सादयतु० | ,, | ,, | ,, | ,, | |
| | ६५ | सहस्रस्य प्रमासि० | ,, | ,, | ,, | अग्निः | |

अथ० संहितायां षोडशोऽध्यायः।

[ रौद्रोऽध्यायः। ]

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | नमस्ते रुद्र मन्यव० | परमेष्ठी | देवाः | प्रजापतिः वा | एकरुद्रः | गायत्री |
| २ | या ते रुद्र शिवा तनू० | ,, | ,, | ,, | ,, | अनुष्टुप् |
| ३ | यामिषुं गिरिशन्त हस्ते० | ,, | ,, | ,, | ,, | ,, |
| ४ | शिवेन वचसा त्वा० | ,, | ,, | ,, | ,, | ,, |
| ५ | अध्यवोचदधिवक्ता० | ,, | ,, | ,, | ,, | पंक्तिः |
| ६ | असौ यस्ताम्रोऽअरुण० | ,, | ,, | ,, | ,, | ,, |
| ७ | असौ योऽवसर्पति० | ,, | ,, | ,, | ,, | ,, |
| ८–१४ | नमोऽस्तु०॥८॥–नमस्त आयु०॥१४॥ | ,, | ,, | ,, | ,, | अनुष्टुप् |
| १५ | मा नो महान्तमुत० | ,, | ,, | ,, कुत्सः | ,, | जगती |
| १६ | मा नस्तोके तनये० | ,, | ,, | ,, ,, | ,, | ,, |
| १७–४६ | नमो हिर०॥१७॥–नमः पर्णाय०॥४६॥ | ,, | ,, | ,, | बहुरुद्राः | ,, |
| | नमो वः किरिकेभ्यो० | ,, | ,, | ,, | अग्निवायुसूर्याः | |
| ४७ | द्रापे अन्धसस्पते दरिद्रं० | ,, | ,, | ,, | एकरुद्रः | उपरिष्टाद्बृहती |

नुष्टुब्, द्वे त्रिष्टुभौ, द्वे अनुष्टुभावसंख्याता बहुरुद्रदेवत्या, दशानुष्टुभो मन्त्रा अवतानसंज्ञकास्ततोऽन्त्यानि त्रीणि यजूंषि बहुरुद्रदेवत्यानि प्रत्यवरोहसंज्ञका मन्त्राः ॥ २२ ॥

मध्ये सर्वाणि यजूंषि, हिरण्यबाहव इति तिस्रोऽशीतयो रुद्राणां, तेषामुभयतो नमस्कारा अन्ये, अन्यतरतोनमस्कारा अपरे, जाता नाम रुद्राः सभाभ्य इत्यादयो, नमो वः किरिकेभ्य इत्यग्निवायुसूर्यहृदयभूताः पञ्च व्याहृतयो बहुरुद्रदेवत्याः ॥ २३ ॥ [ य० अ० १६ मं० १७--६६ ]

इति० संहितायां षोडशोऽध्यायः ।

अश्मन्मारुतमश्मँस्तेऽश्मा, मय्याशीर्यं द्विष्म आभिचारिकमिमा म आग्नेयमृतवो बृहती पंक्तिर्वा, समुद्रस्य द्वे गायत्र्यावुपज्मन् जगती त्रिष्टुब् वापामिदं बृहत्यग्ने पावक वसूयवः, स नो मेधातिथिरेते आग्नेय्यौ गायत्र्यौ, पावकया जगतीं भरद्वाजो, नमस्ते

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ४८ | इमा रुद्राय तवसे | परमेष्ठी | देवाः | प्रजापतिः वा, कुत्सः एकरुद्रः | जगती |
| ४९ | या ते रुद्र शिवा तनूः० | ,, | ,, | ,, ,, | अनुष्टुप् |
| ५० | परि नो रुद्रस्य हेति० | ,, | ,, | ,, ,, | त्रिष्टुप् |
| ५१ | मीढुष्टम शिवतम० | ,, | ,, | ,, ,, | ,, |
| ५२ | विकिरिद्र विलोहित० | ,, | ,, | ,, ,, | अनुष्टुप् |
| ५३ | सहस्राणि सहस्रशो० | ,, | ,, | ,, ,, | ,, |
| [ अवतानसंज्ञका मन्त्राः । अ० १६ मं ५४–६३ ] | | | | | |
| ५४-६३ | असंख्याता०॥५४॥–य एताव०॥६३॥ | ,, | ,, | ,, बहुरुद्राः | ,, |
| [ प्रत्यवरोहसंज्ञका मंत्राः । अ० १६ मं० ६४–६६ ] | | | | | |
| ६४–६६ | नमोऽस्तु० ॥६४॥–नमोऽस्तु०॥६६॥ | ,, | ,, | ,, ,, | ,, |

अथ० संहितायां सप्तदशोऽध्यायः ।

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| १ | अश्मन्नूर्जं पर्वते० | प्रजापतिः, | साध्याः | मरुतः | ,, |
| | अश्मँस्ते क्षुत् । | ,, | ,, | अश्मा | |
| | मयि त ऊर्क् । | ,, | ,, | आशीः | |
| | यं द्विष्मस्तं ते शुगृच्छतु । | ,, | ,, | ( शुक् ) | |
| २ | इमा मेऽअग्न इष्टका० | ,, | ,, | अग्निः | |
| ३ | ऋतवः स्थ ऋतावृध० | ,, | ,, | ,, | बृहती पंक्तिर्वा |
| ४ | समुद्रस्य त्वावकयाग्ने० | ,, | ,, | अग्निः | गायत्री |
| ५ | हिमस्य त्वा जरायुणाऽग्ने० | ,, | ,, | ,, | ,, |
| ६ | उप ज्मन्नुप वेतसे० | ,, | ,, | ,, | जगती त्रिष्टुप् वा |
| ७ | अपामिदं न्ययनꣳ० | ,, | ,, | ,, | बृहती |
| ८ | अग्ने पावक रोचिषा० | ,, | ,, वसूयवः | ,, | गायत्री |

बृहतीमाग्नेयीमृषिसुता लोपामुद्रा ॥ २४ ॥ [ य० अ० १७ मं० १--११ ]

नृषदे पञ्चाग्नेयानि, ये देवा जगत्यौ प्राणदेवत्ये, प्राणदा बृहती पंक्तिर्वाग्नेय्यग्निस्तिग्मेनाग्नेयीं गायत्रीं भरद्वाजो, य इमा वैश्वकर्मणीस्त्रिष्टुभो विश्वकर्मा भौवनः ॥ २५ ॥ [ य० अ० १७ मं० १२--३२ ]

आशुरैन्द्रीर्द्वादश त्रिष्टुभोऽप्रतिरथोऽवसृष्टानुष्टुबिषुदेवत्या प्रेत योद्धॄंस्तौत्यनुष्टुबसौ या मारुती, त्रिष्टुब्यत्र लिङ्गोक्तदेवता पंक्तिर्मर्माणि लिङ्गोक्तैव त्रिष्टुबुदेनं तिस्रोऽनुष्टुभ आद्याग्नेयी, द्वितीयैन्द्री, तृतीया लिङ्गोक्तदेवता, पञ्च दिशः पञ्चयज्ञाग्निसाधनत्वादिन्य आद्ये द्वे त्रिष्टुभौ, तृतीया पंक्तिर्बृहती वा, चतुर्थी बृहत्येवान्त्या त्रिष्टुब् विमानो

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | ९ | स नः पावक दीदिवो० | प्रजापतिः | साध्याः मेधातिथिः | अग्निः | गायत्री |
| | १० | पावकया यश्चितयन्त्या० | ,, | ,, भरद्वाजः | ,, | जगती |
| | ११ | नमस्ते हरसे शोचिषे० | ,, | ,, ऋषिसुता लोपामुद्रा | ,, | बृहती |
| | १२ | नृषदे वेडप्सुषदे० | ,, | ,, | ,, | |
| | १३ | ये देवा देवानां० | ,, | ,, | प्राणाः | जगती |
| | १४ | ये देवा देवेष्वधि० | ,, | ,, | ,, | ,, |
| | १५ | प्राणदा अपानदा० | ,, | ,, | अग्निः | बृहती पंक्तिर्वा |
| | १६ | अग्निस्तिग्मेन शोचिषा० | ,, | ,, भरद्वाजः | ,, | गायत्री |
| | १७–३२ | यऽइमा०॥१७॥–विश्वकर्मा०॥३२॥ | ,, | ,, विश्वकर्मा भौवनः | विश्वकर्मा | त्रिष्टुप् |
| | ३३–४४ | आशुःशिशानो०॥३३–अमीषां०॥४४॥ | ,, | ,, अप्रतिरथः | इन्द्रः | ,, |
| | ४५ | अवसृष्टा परातप० | ,, | ,, | इषुः | अनुष्टुप् |
| | ४६ | प्रेता जयता नर इन्द्रो० | ,, | ,, | योद्धारः | ,, |
| | ४७ | असौ या सेना मरुतः० | ,, | ,, | मरुतः | त्रिष्टुप् |
| | ४८ | यत्र बाणाः सम्पतन्ति० | ,, | ,, | लिङ्गोक्ता (इन्द्रादयः) | पंक्तिः |
| | ४९ | मर्माणि ते वर्मणा छाद० | ,, | ,, | ,, (क्षत्रियः) | त्रिष्टुप् |
| | ५० | उदेनमुत्तरां नयाग्ने० | ,, | ,, | अग्निः | अनुष्टुप् |
| | ५१ | इन्द्रेमं प्रतरां नय० | ,, | ,, | इन्द्रः | ,, |
| | ५२ | यस्य कुर्मो गृहे हवि० | ,, | ,, | लिङ्गोक्ता | ,, |
| [अ.१२ मं.३१] | ५३ | उदु त्वा विश्वे देवा० | ,, | ,, तापसः | अग्निः | ,, |
| | ५४ | पञ्च दिशो दैवीर्यज्ञमवन्तु० | ,, | ,, | (दिशः) | त्रिष्टुप् |
| | ५५ | समिद्धेऽअग्नावधि मामहान० | ,, | ,, | (अग्नि) | ,, |
| | ५६ | दैव्याय धर्त्रे जोष्ट्रे० | ,, | ,, | ,, | पंक्तिः बृहती वा |
| | ५७ | वीतꣳ हविः शमितꣳ० | ,, | ,, | (हविर्यज्ञः) | बृहती |
| | ५८ | सूर्यरश्मिर्हरिकेशः पुरस्तात्० | ,, | ,, | (अग्निः) | त्रिष्टुप् |
| | ५९ | विमान एष दिवो० | ,, | ,, विश्वावसुः | आदित्यः | ,, |

द्वे आदित्यदेवत्ये, आद्या विश्वावसोर्द्वितीयाप्रतिरथस्य, देवहूर्विधृतिरनुष्टुब् यज्ञदेवत्या, वाजस्यैन्द्र्यनुष्टुबुद्ग्राभमैन्द्राग्न्यनुष्टुबेव ॥ २६ ॥ [ य० अ० १७ मं० ३३–६४ ]

क्रमध्वं पञ्चाग्नेय्य आद्यानुष्टुप्, ततस्त्रिष्टुप्, ततो बृहती पिपीलिकमध्या, ततोऽनुष्टुप्, त्रिष्टुबन्त्याग्ने सहस्राक्ष विराडाग्नेयी, सुपर्णो द्वे पंक्तित्रिष्टुभौ, ताꣳ सवितुः सावित्रीं त्रिष्टुभं [पुरस्ताज्ज्योतिषं] कण्वो ददर्श, विधेमाग्नेयीं गृत्समदस्त्रिष्टुभमस्यास्त्रिस्थानोऽग्निर्देवता, प्रेद्धो विराडाग्नेयी वसिष्ठस्य, चित्तिं वैश्वकर्मण्यतिजगती, सप्त त आग्नेयी त्रिष्टुप्सप्तऋषीणाम् ॥ २७ ॥ [ य० अ० १७ मं० ६५–७९ ]

शुक्रज्योतिः षण्मारुत्य आद्या चतुर्थी चोष्णिग्द्वितीया तृतीया च गायत्री, पञ्चमी

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | ६० | उक्षा समुद्रोऽअरुणः० | प्रजापतिः, | साध्याः अप्रतिरथः | आदित्यः | त्रिष्टुप् |
| [अ.१२।५६] | ६१ | इन्द्रं विश्वाऽअवीवृधन्० | ,, | ,, जेता माधुच्छन्दसः | इन्द्रः | अनुष्टुप् |
| | ६२ | देवहूर्यज्ञ आ च वक्षत्० | ,, | ,, विधृतिः | यज्ञः | ,, |
| | ६३ | वाजस्य मा प्रसव० | ,, | ,, | इन्द्रः | ,, |
| | ६४ | उद्ग्राभं च निग्राभं च० | ,, | ,, | इन्द्राग्नी | ,, |
| | ६५ | क्रमध्वमग्निना नाक० | ,, | ,, | अग्निः | ,, |
| | ६६ | प्राचीमनु प्रदिशं प्रेहि० | ,, | ,, | ,, | त्रिष्टुप् |
| | ६७ | पृथिव्याऽअहमुदन्तरिक्ष० | ,, | ,, | ,, | बृहती पिपीलिकमध्या |
| | ६८ | स्वर्यन्तो नापेक्षन्त० | ,, | ,, | ,, | अनुष्टुप् |
| | ६९ | अग्ने प्रेहि प्रथमो० | ,, | ,, | ,, | त्रिष्टुप् |
| [अ.१२ मं.२] | ७० | नक्तोषासा समनसा० | ,, | ,, कुत्सः | अग्निः | ,, |
| | ७१ | अग्ने सहस्राक्ष शतमूर्ध० | ,, | ,, | ,, | विराट् |
| | ७२ | सुपर्णोऽसि गरुत्मान्० | ,, | ,, | ,, | पंक्तिः |
| | ७३ | आजुह्वानः सुप्रतीकः० | ,, | ,, | ,, | त्रिष्टुप् |
| | ७४ | ताꣳ सवितुर्वरेण्यस्य० | ,, | ,, कण्वः | सविता | ,, |
| | ७५ | विधेम ते परमे जन्मन्नग्ने० | ,, | ,, गृत्समदः | त्रिस्थानोऽग्निः | ,, |
| | ७६ | प्रेद्धोऽअग्ने दीदिहि० | ,, | ,, वसिष्ठः | अग्निः | विराट् |
| [अ.१५।४४] | ७७ | अग्ने तमद्याश्वं न स्तोमैः० | ,, | ,, | ,, | पदपंक्तिः |
| | ७८ | चित्तिं जुहोमि मनसा० | ,, | ,, | विश्वकर्मा | अतिजगती |
| | ७९ | सप्त ते अग्ने समिधः सप्त० | ,, | ,, सप्त ऋषयः | अग्निः | त्रिष्टुप् |
| | ८० | शुक्रज्योतिश्च चित्रज्योतिश्च० | ,, | ,, | मरुतः | उष्णिक् |
| | ८१ | ईदृङ् चान्यादृङ् च० | ,, | ,, | ,, | गायत्री |
| | ८२ | ऋतश्च सत्यश्च० | ,, | ,, | ,, | ,, |
| | ८३ | ऋतजिच्च सत्यजिच्च० | ,, | ,, | ,, | उष्णिक् |
| | ८४ | ईदृक्षास एतादृक्षास० | ,, | ,, | ,, | जगती |

जगती, षष्ठी गायत्र्युष्णिग्वेन्द्रं दैवीर्मारुतमिमं त्रयोदशर्चं आग्नेयस्त्रैष्टुभोऽनुवाको यज्ञस्तुतिर्घृतस्तुतिर्वा वसोर्धाराभिवादिनी वा, घृतं मिमिक्षे गृत्समदः, समुद्राद्वामदेवश्चत्वारि शृङ्गा यज्ञपुरुषदेवत्य ऋषभो मन्त्रः ॥ २८ ॥ [ य० अ० १७ मं० ६५--९९ ]

इति० संहितायां सप्तदशोऽध्यायः ।

वाजश्च मे देवानामार्षमेतैर्यजुर्भिर्यजमानोऽग्नेः कामान्याचते, वाजप्रसवीयं सप्तर्चं विश्वे त्रैष्टुभं वैश्वदेवं लुशोधानाको, वाजो नस्तिस्रोऽन्नदेवत्या आद्यानुष्टुब्द्वे त्रिष्टुभौ, सं मा विराजावाग्नेय्यौ, सरस्वत्यै लिङ्गोक्तदेवतम् ॥२९॥ [ य० अ०१८ मं०१--३७ ]

ऋताषाड्गन्धर्वाप्सरसः, स नः प्राजापत्या प्रस्तारपंक्तिः, समुद्रोऽसि वायव्यानि

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ८५ | स्वतवाँश्च प्रघासी च० | प्रजापतिः | साध्याः | मरुतः | गायत्री उष्णिग्वा |
| ८६ | इन्द्रं दैवीर्विशो मरुतो० | ,, | ,, | ,, | |
| ८७ | इमꣳ स्तनमूर्जस्वन्तं० | ,, | ,, | अग्निः | त्रिष्टुप् |
| ८८ | घृतं मिमिक्षे घृतमस्य० | ,, | ,, गृत्समदः | ,, | ,, |
| ८९ | समुद्रादूर्मिर्मधुमाँ० | ,, | ,, वामदेवः | ,, | ,, |
| ९० | वयं नाम प्रब्रवामा० | ,, | ,, | ,, | ,, |
| ९१ | चत्वारि शृङ्गा त्रयोऽअस्य० | ,, | ,, | ,, यज्ञपुरुषः | ,, |
| ९२-९९ | त्रिधा हितं०॥९२-धामं ते०॥९९ | ,, | ,, | ,, | ,, |

अथ० संहितायां अष्टादशोऽध्यायः।

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| १-२९ | वाजश्च मे०॥१-आयुर्यज्ञेन०॥ २९ ॥ | प्रजापतिः | साध्याः | देवाः | ,, |
| [ अथ वाजप्रसवीयम् ३०—३६ ] | | | | | |
| [अ.९मं.५] ३० | वाजस्य नु प्रसवे मातरं० | ,, | ,, | पृथिवी | अतिजगती |
| ३१ | विश्वेऽअद्य मरुतो विश्व० | ,, | ,, लुशोधानाकः | विश्वेदेवाः | त्रिष्टुप् |
| ३२ | वाजो नः सप्त प्रदिश० | ,, | ,, | अन्नम् | अनुष्टुप् |
| ३३ | वाजो नो अद्य प्रसुवाति० | ,, | ,, | ,, | त्रिष्टुप् |
| ३४ | वाजः पुरस्तादुत मध्यतो० | ,, | ,, | ,, | ,, |
| ३५ | सं मा सृजामि पयसा | ,, | ,, | अग्निः | विराट् |
| ३६ | पयः पृथिव्यां पय० | ,, | ,, | ,, | ,, |
| [अ.१मं.१०] ३७ | देवस्य त्वा सवितुः० | ,, | ,, | सविता | |
| | सरस्वत्यै वाचो यन्तु० | ,, | ,, | लिङ्गोक्ता (यजमानः) | |
| ३८ | ऋताषाडृतधामाग्निर्गन्धर्व० | ,, | ,, | गंधर्वः | |
| | तस्यौषधयोऽप्सरसो० | ,, | ,, | अप्सरसः | |
| ३९ | सꣳहितो विश्वसामा० | ,, | ,, | गन्धर्वः | |
| | तस्य मरीचयोऽप्सरस० | ,, | ,, | अप्सरसः | |
| ४० | सुषुम्णः सूर्यरश्मिश्चन्द्रमा० | ,, | ,, | गन्धर्वः | |

त्रीणि, रुचमाग्नेय्यनुष्टुप्, तत्त्वा वारुणीं त्रिष्टुभथं शुनःशेपः, स्वर्णाग्नेयानि पञ्चाग्निं युनज्म्याग्नेय्यास्तिस्र आद्ये द्वे त्रिष्टुभौ पंक्तिस्तृतीया, दिवो द्वे आग्नेय्यौ परोष्णिङ्महापदपंक्ती, इष्टो यज्ञो द्व्यृचं यजमानाग्निदेवत्यं गालव, आद्योष्णिग्द्वितीया गायत्री ॥ ३०॥

[ य० अ० १८ मं० ३८--५७ ]

यदाकूतादष्टर्चमाग्नेयं, विश्वकर्मणस्तृतीया दैवी वाद्या जगती तिस्रस्त्रिष्टुभश्चतस्रोऽनुष्टुभोऽग्निरस्म्यग्न्यद्वैतवादिनीं त्रिष्टुभं देवश्रवा देववातश्च भारतावृचो यजुर्ये अग्नयोऽ-

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | तस्य नक्षत्राण्यप्सरसो० | प्रजापतिः | साध्याः | | अप्सरसः | |
| | ४१ | इषिरो विश्वव्यचा वातो० | ,, | ,, | | गन्धर्वः | |
| | | तस्यापोऽप्सरसऽऊर्जो० | ,, | ,, | | अप्सरसः | |
| | ४२ | भुज्युः सुपर्णो यज्ञो गंधर्व० | ,, | ,, | | गन्धर्वः | |
| | | तस्य दक्षिणा अप्सरस० | ,, | ,, | | अप्सरसः | |
| | ४३ | प्रजापतिर्विश्वकर्मा मनो० | ,, | ,, | | गन्धर्वः | |
| | | तस्यऽऋक्सामान्यप्सरसो० | ,, | ,, | | अप्सरसः | |
| | ४४ | स नो भुवनस्य पते० | ,, | ,, | | प्रजापतिः | प्रस्तारपंक्तिः |
| | ४५ | समुद्रोऽसि नभस्वा० | ,, | ,, | | वायुः | |
| [अ.१३।२२] | ४६ | यास्तेऽअग्ने सूर्ये रुचो० | ,, | ,, | इन्द्राग्नी | अग्निः | अनुष्टुप् |
| [अ.१३।२३] | ४७ | या वो देवाः सूर्ये रुचो० | ,, | ,, | ,, | ,, | ,, |
| | ४८ | रुचं नो धेहि ब्राह्मणेषु० | ,, | ,, | | अग्निः | ,, |
| | ४९ | तत्त्वा यामि ब्रह्मणा० | ,, | ,, | शुनःशेपः | वरुणः | त्रिष्टुप् |
| | ५० | स्वर्ण घर्मः स्वाहा० | ,, | ,, | | अग्निः | |
| | ५१ | अग्निं युनज्मि मनसा० | ,, | ,, | | ,, | ,, |
| | ५२ | इमौ ते पक्षावजरौ० | ,, | ,, | | ,, | ,, |
| | ५३ | इन्दुर्दक्षः श्येनऽऋतावा० | ,, | ,, | | ,, | पंक्तिः |
| | ५४ | दिवो मूर्धासि पृथिव्या० | ,, | ,, | | ,, | परोष्णिक् |
| | ५५ | विश्वस्य मूर्धन्नधि तिष्ठसि० | ,, | ,, | | ,, | महापदपंक्तिः |
| | ५६ | इष्टो यज्ञो भृगुभि० | ,, | ,, | गालवः | यजमानः | उष्णिक् |
| | ५७ | इष्टोऽअग्निराहुतः० | ,, | ,, | ,, | अग्निः | गायत्री |
| | ५८ | यदाकूतात्समसुस्रोद्धृदो वा | ,, | ,, | विश्वकर्मा | अग्निः | जगती |
| | ५९ | एतꣲ सधस्थं परि ते० | ,, | ,, | ,, | ,, | त्रिष्टुप् |
| | ६० | एतं जानाथ परमे व्योमन्० | ,, | ,, | ,, | ,, देवाः वा | ,, |
| [अ.१५।५४] | ६१ | उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति० | ,, | ,, | ,, | ,, | ,, |
| [अ.१५।५५] | ६२ | येन वहसि सहस्रं० | ,, | ,, | ,, | ,, | अनुष्टुप् |
| | ६३ | प्रस्तरेण परिधिना० | ,, | ,, | ,, | ,, | ,, |
| | ६४ | यद्दत्तं यत्परादानं० | ,, | ,, | ,, | ,, | ,, |

नुष्टुबाग्नेयी ॥ ३१ ॥ [ य० अ० १८ मं० ५८--६७ ]

वार्त्रहत्याय सप्तर्चमिन्द्रोऽपश्यदाद्ये द्वे वार्त्रघ्न्यौ गायत्रीत्रिष्टुभौ विश्वामित्रस्य च, वि नोऽनुष्टुम्मृगो न त्रिष्टुप् , प्रथमाᳬ शासो भारद्वाजो, द्वितीयां जय ऐन्द्रो, द्वे वैश्वानर्यौ गायत्रीत्रिष्टुभौ, पृष्टो दिवि कुत्सस्य चाश्याम द्वे त्रिष्टुभावाग्नेय्यौ कामवत्यावश्याम भरद्वाजस्य च, वयं ते कात्यस्योत्कीलस्य च, धामच्छदनुष्टुब्वैश्वदेवी ॥ ३२ ॥ [ य० अ० १८ मं० ६८–७७ ]

इति० संहितायामष्टादशोऽध्यायः ।

अथ सौत्रामणी--प्रजापतेरार्षमाश्विनोः सरस्वत्याश्च, स्वाद्वीं त्वानुष्टुप्सुरासोमदेवत्या, सोमोऽसि चत्वारि सौराणि, परीतो भारद्वाजः सौमीं बृहतीं, वायोस्तृचो गायत्रः सोम्य

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | ६५ | यत्र धाराऽअनपेता० | प्रजापतिः | साध्याः | विश्वकर्मा | अग्निः | अनुष्टुप् |
| | ६६ | अग्निरस्मि जन्मना जात० | ,, | ,, | देवश्रवा देववातश्च भारतौ | ,, | त्रिष्टुप् |
| | ६७ | ऋचो नामास्मि० | ,, | ,, | | (आत्मा) | |
| | | येऽग्नयः पाञ्चजन्या० | ,, | ,, | | अग्निः | अनुष्टुप् |
| | ६८ | वार्त्रहत्याय शवसे० | ,, | ,, | इन्द्रः, विश्वामित्रः | वृत्रहा (इन्द्रः) | गायत्री |
| | ६९ | सहदानुं पुरुहूत क्षियन्तं० | ,, | ,, | ,, ,, | ,, ,, | त्रिष्टुप् |
| [ अ.८।४४ ] | ७० | वि न इन्द्र मृधो जहि० | ,, | ,, | ,, भारद्वाजः शासः | ,, ,, | अनुष्टुप् |
| | ७१ | मृगो न भीमः कुचरो० | ,, | ,, | ,, जयः ऐन्द्रः | ,, ,, | त्रिष्टुप् |
| | ७२ | वैश्वानरो न ऊतय० | ,, | ,, | ,, | वैश्वानरः | गायत्री |
| | ७३ | पृष्टो दिवि पृष्टोऽअग्निः० | ,, | ,, | ,, कुत्सः | ,, | त्रिष्टुप् |
| | ७४ | अश्याम तं काममग्ने० | ,, | ,, | ,, भरद्वाजः | अग्निः | ,, |
| | ७५ | वयं तेऽअद्य ररिमा० | ,, | ,, | कात्य उत्कीलः | ,, | ,, |
| | ७६ | धामच्छदग्निरिन्द्रो० | ,, | ,, | | विश्वेदेवाः | अनुष्टुप् |
| [अ.१३।५२] | ७७ | त्वं यविष्ठ दाशुषो० | ,, | ,, | उशनाः काव्यः | अग्निः | गायत्री |

अथ० संहितायामेकोनविंशोऽध्यायः ।

[ अथ सौत्रामणी अ. १९— अ. २१ ]

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | स्वाद्वीं त्वा स्वादुना० | प्रजापतिः, | अश्विनौ, | सरस्वती, | सुरासोमः | अनुष्टुप् |
| | सोमोऽस्यश्विभ्यां पच्यस्व० | ,, | ,, | ,, | सूर्यः | |
| २ | परीतो षिञ्चता सुतꣳ० | ,, | ,, | ,, भारद्वाजः | सोमः | बृहती |
| ३ | वायोः पूतः पवित्रेण प्रत्य० | ,, | ,, | ,, आभूतिः | ,, | गायत्री |
| | वायोः पूतः पवित्रेण प्राङ्० | ,, | ,, | ,, ,, | ,, | ,, |
| ४ | पुनाति ते परिस्रुतꣳ० | ,, | ,, | ,, ,, | ,, | ,, |

आभूतेर्ब्रह्म क्षत्रं त्रिष्टुप् सुरासोमदेवत्या, नाना हि जगती सुरासोमदेवत्या, तेजोऽसि पयोदेवत्यान्योजोऽसि सुरादेवत्यानि, या व्याघ्रंꣳ हैमवर्चेरनुष्टुब् विषूचिकास्तुतिर्यदापिपेषाग्नेयी बृहती, सम्पृच स्थ पयोग्रहा, विपृच स्थ सुराग्रहा, देवा यज्ञं ब्राह्मणानुवाको विꣳशतिरनुष्टुभः सोमसम्पत् ॥ ३३ ॥ [ अ० १९ मं० १–३१ ]

सुरावन्तं चतुर्ऋचं त्रैष्टुभमश्विसरस्वतीन्द्रदेवत्यं, पितृभ्यःसप्त पित्र्याणि, पुनन्तु मा नवर्चं पावमानमाद्ये द्वे पित्र्ये अनुष्टुभौ, प्रजापतिस्तृतीयां वैखानस आग्नेयीं गायत्रीं, चतुर्थी लिङ्गोक्तदेवतानुष्टुप्, पञ्चम्याग्नेयी गायत्री, षष्ठ्याग्नेयीं ब्राह्मी वा गायत्री, ब्राह्मस्तृतीयः पादः, सौमी सप्तमी सावित्र्यष्टमी, नवमी त्रिष्टुब् वैश्वदेवी, ये समाना

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ५ | ब्रह्म क्षत्रं पवते० | प्रजापतिः | अश्विनौ | सरस्वती | सुरासोमः | त्रिष्टुप् |
| [ अ.१०।३२ ] ६ | कुविदङ्ग यवमन्तो यवं० | ,, | ,, | ,, सुकीर्तिः काक्षीवतः | सोमः | अनिरुक्ता त्रिष्टुप् |
| ७ | नाना हि वां देवहितꣳ० | ,, | ,, | ,, | सुरासोमः | जगती |
| ८ | उपयामगृहीतो० | ,, | ,, | ,, | | |
| ९ | तेजोऽसि तेजो मयि० | ,, | ,, | ,, | पयः | |
| | ओजोऽस्योजो मयि० | ,, | ,, | ,, | सुरा | |
| १० | या व्याघ्रं विषूचिकोभौ० | ,, | ,, | ,, हैमवर्चिः | विषूचिका | अनुष्टुप् |
| ११ | यदापिपेष मातरं० | ,, | ,, | ,, | अग्निः | बृहती |
| | सम्पृच स्थ सं मा० | ,, | ,, | ,, | पयोग्रहाः | |
| | विपृच स्थ वि मा० | ,, | ,, | ,, | सुराग्रहाः | |
| [ ब्राह्मणानुवाकः— मं० १२—३१ ] | | | | | | |
| १२–३१ | देवा यज्ञ० ॥१२– एतावद्रूपं० ॥३१॥ | ,, | ,, | ,, | सोमसम्पत् | अनुष्टुप् |
| [ इति ब्राह्मणानुवाकः । ] | | | | | | |
| ३२–३५ | सुरावन्तं० ॥३२॥– यदत्र० ॥३५॥ | ,, | ,, | ,, | अश्विसरस्वतीन्द्राः | त्रिष्टुप् |
| ३६ | पितृभ्यः स्वधायिभ्यः० | ,, | ,, | ,, | पितरः | |
| ३७ | पुनन्तु मा पितरः० | ,, | ,, | ,, | ,, | अनुष्टुप् |
| | पुनन्तु मा पितामहाः० | ,, | ,, | ,, | ,, | ,, |
| ३८ | अग्न आयूꣳषि पवस० | ,, | ,, | ,, प्रजापतिः वैखानसः | अग्निः | गायत्री |
| ३९ | पुनन्तु मा देवजनाः० | ,, | ,, | ,, | लिङ्गोक्ता | अनुष्टुप् |
| ४० | पवित्रेण पुनीहि मा० | ,, | ,, | ,, | अग्निः | गायत्री |
| ४१ | यत्ते पवित्रमर्चिष्यग्ने० | ,, | ,, | ,, | ,, | ,, |
| | ब्रह्म तेन पुनातु मा । | ,, | ,, | ,, | ब्रह्म | ,, |
| ४२ | पवमानः सोऽअद्य० | ,, | ,, | ,, | सोमः | ,, |

अनुष्टुभौ पित्र्याद्या द्वितीया यजमानाशीर्द्वे सृती त्रिष्टुब्देवयानपितृयाणौ पन्थानौ ब्रवीतीदꣳ हविस्त्र्यवसानाष्टिर्यजमानाशीः ॥३४॥ [ य० अ० १९ मं० ३२–४८ ]

उदीरतां त्रयोदशर्चं पित्र्यं त्रैष्टुभꣳ शङ्खः, एकादशी तु जगत्याच्या जानुर्दशर्चोऽनुवाको, नव पित्र्या, दशम्यैन्द्री गायत्री, तृतीयाचतुर्थीनवम्योऽनुष्टुभस्त्रिष्टुभ इतराः, सोमो राजाष्टर्चमश्विसरस्वतीन्द्रा अपश्यन्नाद्यास्तिस्रो महाबृहत्य उपान्त्या च, चतुर्थ्यन्ते अतिजगत्यौ, शेषे अतिशक्कर्यौ त्र्यवसाने, सीसेन तन्त्रमश्विसरस्वतीन्द्रदेवत्याः षोडश

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ४३ | उभाभ्यां देव सवितः० | प्रजापतिः | अश्विनौ | सरस्वती | | सविता | गायत्री |
| ४४ | वैश्वदेवी पुनती देव्यागा० | ,, | ,, | ,, | | विश्वेदेवाः | त्रिष्टुप् |
| ४५ | ये समानाः समनसः० | ,, | ,, | ,, | | पितरः | अनुष्टुप् |
| ४६ | ये समानाः समनसो० | ,, | ,, | ,, | | यजमानाशीः(श्रीः) | ,, |
| ४७ | द्वे सृतीऽअश्रृणवं० | ,, | ,, | ,, | | देवयानपितृयाणौ | त्रिष्टुप् |
| ४८ | इदꣳ हविः प्रजननं० | ,, | ,, | ,, | | यजमानाशीः | त्र्यवसाना अष्टिः |
| ४९–५८ | उदीरता०॥४९– आयन्तु नः०॥५८॥ | ,, | ,, | ,, | शंखः | पितरः | त्रिष्टुप् |
| ५९ | अग्निष्वात्ताः पितर एह० | ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | जगती |
| ६० | येऽअग्निष्वात्ता येऽअनग्नि० | ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | त्रिष्टुप् |
| ६१ | अग्निष्वात्तानृतुमतो हवामहे० | ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | ,, |
| ६२ | आच्या जानु दक्षिणतो | ,, | ,, | ,, | | ,, | ,, |
| ६३ | आसीनासो अरुणीनामु० | ,, | ,, | ,, | | ,, | ,, |
| ६४ | यमग्ने कव्यवाहन० | ,, | ,, | ,, | | ,, | अनुष्टुप् |
| ६५ | योऽअग्निः कव्यवाहनः० | ,, | ,, | ,, | | ,, | ,, |
| ६६ | त्वमग्नऽईडितः कव्यवाहना० | ,, | ,, | ,, | | ,, | त्रिष्टुप् |
| ६७ | ये चेह पितरो ये च नेह० | ,, | ,, | ,, | | ,, | ,, |
| ६८ | इदं पितृभ्यो नमोऽअस्त्वद्य० | ,, | ,, | ,, | | ,, | ,, |
| ६९ | अधा यथा नः पितरः० | ,, | ,, | ,, | | ,, | ,, |
| ७० | उशन्तस्त्वा निधीमह्युशन्तः० | ,, | ,, | ,, | | ,, | अनुष्टुप् |
| ७१ | अपां फेनेन नमुचेः० | ,, | ,, | ,, | | इन्द्रः | गायत्री |
| ७२ | सोमो राजामृतꣳ सुत० | ,, | ,, | ,, | इन्द्रः | (ग्रहाः) | महाबृहती |
| ७३ | अद्भ्यः क्षीरं व्यपिबत्० | ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | ,, |
| ७४ | सोममद्भ्यो व्यपिबत्० | ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | ,, |
| ७५ | अन्नात्परिस्रुतो रसं० | ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | अतिजगती |
| ७६ | रेतो मूत्रं वि जहाति० | ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | त्र्यवसाना अतिशक्करी |
| ७७ | दृष्ट्वा रूपे व्याकरोत्० | ,, | , | ,, | ,, | ,, | ,, |
| ७८ | वेदेन रूपे व्यपिबत्० | ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | महाबृहती |

जगत्यः ॥ ३५ ॥ [ अ० १९ मं० ४९-९५ ]

इति० संहितायां एकोनविंशोऽध्यायः ।

क्षत्रस्य योनिर्द्विपदा गायत्र्यासन्दीदेवताका, मा त्वा कृष्णाजिनं, मृत्यो रुक्मावश्विनोर्भैषज्येन लिङ्गोक्तदेवतानि त्रीणि, कोऽसि प्राजापत्या गायत्री, शिरो मे पञ्चर्चामिन्द्रशरीरावयवदेवताकं, तृतीया गायत्र्यन्त्या महापंक्तिस्त्र्यवसानानुष्टुभोऽन्याः, प्रतिक्षत्रे वैश्वदेवं, त्रया देवा दैवी पंक्तिस्त्र्यवसाना, प्रथमा द्वितीयैर्वैश्वदेवमाशीर्लिङ्गं, लोमान्यनुष्टुब् लिङ्गोक्तदेवता ॥ ३६ ॥ [ य० अ० २० मं० १-१३ ]

यद्देवास्तिस्रोऽग्निवायुसूर्यदेवत्या अनुष्टुभःकूष्माडीर्यद्ग्रामे लिङ्गोक्तदेवतं, समुद्रे ते

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | ७९ | दृष्ट्वा परिस्रुतो रसꣳ० | प्रजापतिः | अश्विनौ | सरस्वती | इन्द्रः (ग्रहाः) | अतिजगती |
| | ८०-९५ | सीसेन तन्त्रं०॥८०- तेजः पशू०॥९५॥ | ,, | ,, | ,, | अश्विसरस्वतीन्द्राः | जगती |

अथ० संहितायां विंशोऽध्यायः ।

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | १ | क्षत्रस्य योनिरसि० | प्रजापतिः, | अश्विनौ, | सरस्वती | आसन्दी | द्विपदा गायत्री |
| | | मा त्वा हिꣳसी० | ,, | ,, | ,, | कृष्णाजिनम् | |
| [ अ.१०।२७ ] | २ | निषसाद धृतव्रतो० | ,, | ,, | ,, वरुणः,शुनःशेपः | वरुणः | गायत्री |
| | | मृत्योः पाहि विद्योत्पाहि । | ,, | ,, | ,, | रुक्मौ | |
| | ३ | देवस्य त्वा सवितुः० | ,, | ,, | ,, | सविता | |
| | | अश्विनोर्भैषज्येन० | ,, | ,, | ,, | लिङ्गोक्ता | |
| | ४ | कोऽसि कतमोऽसि० | ,, | ,, | ,, | प्रजापतिः | गायत्री |
| | ५ | शिरो मे श्रीर्यशो मुखं० | ,, | ,, | ,, | इन्द्रशरीरावयवाः | अनुष्टुप् |
| | ६ | जिह्वा मे भद्रं वाङ् महो० | ,, | ,, | ,, | ,, | ,, |
| | ७ | बाहू मे बलमिन्द्रियꣳ० | ,, | ,, | ,, | ,, | गायत्री |
| | ८ | पृष्टीर्मे राष्ट्रमुदर० | ,, | ,, | ,, | ,, | अनुष्टुप् |
| | ९ | नाभिर्मे चित्तं विज्ञानं० | ,, | ,, | ,, | ,, | त्र्यवसाना महापंक्ति |
| | १० | प्रति क्षत्रे प्रति तिष्ठामि० | ,, | ,, | ,, | विश्वेदेवाः | |
| | ११ | त्रया देवा एकादश० | ,, | ,, | ,, | देवाः | त्र्यवसाना पंक्तिः |
| | १२ | प्रथमा द्वितीयैर्द्वितीया० | ,, | ,, | ,, | विश्वेदेवाः | |
| | १३ | लोमानि प्रयतिर्मम० | ,, | ,, | ,, | लिङ्गोक्ता | अनुष्टुप् |
| | १४ | यद्देवा देवहेडनं० | ,, | ,, | ,, | अग्निः | कूष्माण्डी अनुष्टुप् |
| | १५ | यदि दिवा यदि नक्त० | ,, | ,, | ,, | वायुः | ,, |
| | १६ | यदि जाग्रद्यदि स्वप्न० | ,, | ,, | ,, | सूर्यः | ,, |
| | १७ | यद्ग्रामे यदरण्ये० | ,, | ,, | ,, | लिङ्गोक्ता | |
| [अ.६मं.२२] | १८ | यदापोऽअघ्न्याऽइति० | ,, | ,, | ,, | आपः | |
| | १९ | समुद्रे ते हृदयमप्स्वन्तः | ,, | ,, | ,, | आपः | द्विपदा विराट् |

द्विपदा विराडापी, द्रुपदादिवानुष्टुबाप्युद्वयꣳ सौर्यनुष्टुप्प्रस्कण्वस्यापो अद्याग्नेयी पंक्तिरेधोऽसि समिद्देवत्ये यजुषी, समाववर्त्यनिरुक्ता गायत्री, वैश्वानर ज्योतिर्यजुरभ्यादधाम्याग्नेयं तृचमानुष्टुभमाश्वतराश्विरꣳशुना सौर्यनुष्टुप्, सिञ्चन्ति परि सौर्यैन्द्री चानुष्टुब्धानावन्तमैन्द्री गायत्री विश्वामित्रस्य च, बृहदिन्द्राय बृहती नृमेधपुरुषमेधयोरध्वर्यो गायत्री ॥ ३७ ॥ [ य० अ० २० मं० १४–३१ ]

यो भूतानामात्मप्रवादा पंक्तिर्नारायणीया कौण्डिन्यस्य, प्राणपा मे द्वे अनुष्टुबुपरिष्टाद्बृहत्यौ लिङ्गोक्तदेवते, समिद्ध इन्द्र एकादशाप्रीस्त्रिष्टुभ आङ्गिरस इध्मस्तनूनपान्नराशꣳस, इडो, बर्हिर्द्वार,उषासानक्ता, दैव्या होतारा, तिस्रो देवीस्त्वष्टा, वनस्पतिः, स्वाहाकृतय

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| २० | द्रुपदादिव मुमुचानः० | प्रजापतिः | अश्विनौ | सरस्वती | आपः | अनुष्टुप् |
| २१ | उद्वयं तमसस्परि० | ,, | ,, | ,, प्रस्कण्वः | सूर्यः | ,, |
| २२ | अपोऽअद्यान्वचारिषं० | ,, | ,, | ,, | अग्निः | पंक्तिः |
| २३ | ऐधोऽस्येधिषीमहि० | ,, | ,, | ,, | समित् | |
| | समाववर्ति पृथिवी० | ,, | ,, | ,, | अग्निः | अनिरुक्ता गायत्री |
| | वैश्वानर ज्योतिर्भूयासं० | ,, | ,, | ,, | ( वैश्वानरः ) | |
| २४ | अभ्यादधामि समिधं० | ,, | ,, | ,, आश्वतराश्विः | अग्निः | अनुष्टुप् |
| २५ | यत्र ब्रह्म च क्षत्रं च० | ,, | ,, | ,, ,, | ,, | ,, |
| २६ | यत्रेन्द्रश्च वायुश्च० | ,, | ,, | ,, ,, | ,, | ,, |
| २७ | अꣳशुना ते अꣳशुः | ,, | ,, | ,, | सूर्यः | ,, |
| २८ | सिञ्चन्ति परि षिञ्च० | ,, | ,, | ,, | ,, इन्द्रः | ,, |
| २९ | धानावन्तं करम्भिणं० | ,, | ,, | ,, विश्वामित्रः | ,, | गायत्री |
| ३० | बृहदिन्द्राय गायत० | ,, | ,, | ,, नृमेधपुरुषमेधौ | (इन्द्रः) | बृहती |
| ३१ | अध्वर्योऽअद्रिभिः सुतꣳ० | ,, | ,, | ,, | ,, | गायत्री |
| ३२ | यो भूतानामधिपतिः० | ,, | ,, | ,,नारायणःकौण्डिन्यः | आत्मा | पंक्तिः |
| ३३ | उपयामगृहीतोऽस्यश्विभ्यां० | ,, | ,, | ,, | | |
| | एष ते योनिरश्विभ्यां त्वा० | ,, | ,, | ,, | (प्रजापतिः) | (बृहती) |
| ३४ | प्राणपा मे अपानपा० | ,, | ,, | ,, | लिङ्गोक्ता (ग्रहः) | अनुष्टुप् |
| ३५ | अश्विनकृतस्य ते० | ,, | ,, | ,, | ,, | उपरिष्टाद्बृहती |
| ३६ | समिद्धऽइन्द्रऽउषसा० | ,, | ,, | ,, | इध्मः | त्रिष्टुप् |
| ३७ | नराशꣳसः प्रति शूरो० | ,, | ,, | ,, | तनूनपात् ,नराशंसः | ,, |
| ३८ | ईडितो देवैर्हरिवाँ० | ,, | ,, | ,, | इडः | ,, |
| ३९ | जुषाणो बर्हिर्हरिवाँ० | ,, | ,, | ,, | बर्हिः | ,, |
| ४० | इन्द्रं दुरः कवष्यः० | ,, | ,, | ,, | द्वारः | ,, |
| ४१ | उषासानक्ता बृहती० | ,, | ,, | ,, | उषासानक्ता | ,, |

इत्येता आप्रीदेवता, आ यातु सप्त त्रिष्टुभ ऐन्द्र्य, आ मन्द्रैर्बृहत्यायातु वामदेवस्त्रातारं गर्ग, आ मन्द्रैर्विश्वामित्र,एवेद्वसिष्ठः ॥ ३८ ॥ [ य० अ० २० मं० ३२–५४ ]

अथ हौत्रं-त्रिपशोः, समिद्धो अग्निराप्रीर्द्वादश विदर्भिरश्विसरस्वतीन्द्रदेवत्या अनुष्टुभोऽश्विना हविस्तिस्रोऽनुष्टुभ एकैकाश्विसरस्वतीन्द्रदेवत्या, य इन्द्र इन्द्रसवितृवरुणदेवत्यास्तिस्रोऽनुष्टुभोऽश्विना गोभिस्तिस्रोऽनुष्टुभो, युवं पुत्रमिवानुष्टुप्त्रिष्टुभौ, यस्मिन्नश्वास आग्नेय्यौ जगतीत्रिष्टुभावश्विना तेजसैकादशर्चेध्रंशस्त्रं गोमद्गृत्समदस्तृचमाश्विनं गायत्रं,

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ४२ | दैव्या मिमाना मनुषः० | प्रजापतिः | अश्विनौ सरस्वती | अंगिरसः | दैव्यौ हौतारौ | त्रिष्टुप् |
| ४३ | तिस्रो देवीर्हविषा वर्धमा० | ,, | ,, | ,, | ,, | तिस्रो देव्यः | ,, |
| ४४ | त्वष्टा दधच्छुष्ममिन्द्राय० | ,, | ,, | ,, | ,, | त्वष्टा | ,, |
| ४५ | वनस्पतिरवसृष्टो न पाशै० | ,, | ,, | ,, | ,, | वनस्पतिः | ,, |
| ४६ | स्तोकानामिन्दुं प्रति शूर० | ,, | ,, | ,, | ,, | स्वाहाकृतयः | ,, |
| ४७ | आ यात्विन्द्रोऽवस० | ,, | ,, | ,, | वामदेवः | इन्द्रः | ,, |
| ४८ | आ नऽइन्द्रो दूरादा न० | ,, | ,, | ,, | | ,, | ,, |
| ४९ | आ नऽइन्द्रो हरिभि० | ,, | ,, | ,, | | ,, | ,, |
| ५० | त्रातारमिन्द्रमवितार० | ,, | ,, | ,, | गर्गः | ,, | ,, |
| ५१ | इन्द्रः सुत्रामा स्ववाँ२ऽअ० | ,, | ,, | ,, | | ,, | ,, |
| ५२ | तस्य वयꣳ सुमतौ० | ,, | ,, | ,, | | ,, | ,, |
| ५३ | आ मन्द्रैरिन्द्र हरिभि० | ,, | ,, | ,, | विश्वामित्रः | ,, | बृहती |
| ५४ | एवेदिन्द्रं वृषणं वज्रबाहुं० | ,, | ,, | ,, | वसिष्ठः | ,, | ,, |

[ अथ हौत्रं अ. २० । ५५—९० ]

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ५५–६९ | समिद्धो० ॥५५॥– तमिन्द्रं० ॥६९॥ | ,, | ,, | ,, | विदर्भिः | अश्विसरस्वतीन्द्राः | अनुष्टुप् |
| ७० | यऽइन्द्रऽइन्द्रियं दधुः० | ,, | ,, | ,, | | इन्द्र-सवितृ-वरुणाः | ,, |
| ७१ | सविता वरुणो दध० | ,, | ,, | ,, | | ,, | ,, |
| ७२ | वरुणः क्षत्रमिन्द्रियं० | ,, | ,, | ,, | | ,, | ,, |
| ७३ | अश्विना गोभिरिन्द्रिय० | ,, | ,, | ,, | | अश्विसरस्वतीन्द्राः | ,, |
| ७४ | ता नासत्या सुपेशसा० | ,, | ,, | ,, | | ,, | ,, |
| ७५ | ता भिषजा सुकर्मणा० | ,, | ,, | ,, | | ,, | ,, |
| ७६ | युवꣳ सुराममश्विना० | ,, | ,, | ,, | | ,, | ,, |
| ७७ | पुत्रमिव पितरावश्विनो० | ,, | ,, | ,, | | ,, | त्रिष्टुप् |
| ७८ | यस्मिन्नश्वासऽऋषभास० | ,, | ,, | ,, | | अग्निः | जगती |
| ७९ | अहाव्यग्ने हविरास्ये० | ,, | ,, | ,, | | ,, | त्रिष्टुप् |
| ८० | अश्विना तेजसा चक्षुः० | ,, | ,, | ,, | | अश्विसरस्वतीन्द्राः | अनुष्टुप् |
| ८१ | गोमदू षु णासत्या० | ,, | ,, | ,, | गृत्समदः | अश्विनौ | गायत्री |
| ८२ | न यत्परो नान्तर० | ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | ,, |

पावका नो मधुच्छन्दाः सारस्वतमिन्द्रायाह्वैन्द्रं मधुच्छन्दा एवानुक्तमानुष्टुभमश्वि-
सरस्वतीन्द्रदेवत्यम् ॥ ३९ ॥ [ य० अ० २० मं० ५५–९० ]

इति० संहितायां विंशोऽध्यायः ।

इमं मे गायत्रीत्रिष्टुभौ वारुण्यौ शुनःशेपस्त्वं नस्त्रिष्टुभावाग्निवारुण्यौ वामदेवो, महीमू षु त्रिष्टुबादित्या, सुत्रामाणं गयःप्लातः, सुनावं नौः स्वर्ग्या गायत्र्या नो मैत्रावरुणीं गायत्रीं विश्वामित्रः, प्र बाहवा वासिष्ठस्त्रिष्टुभं, समिद्धो अग्निरेकादशाप्रमानुष्टुभं

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | ८३ | ता नऽआ वोढमश्विना० | प्रजापतिः | अश्विनौ | सरस्वती | गृत्समदः | | अश्विनौ | गायत्री |
| | ८४ | पावका नः सरस्वती० | ,, | ,, | ,, | मधुच्छन्दाः | | सरस्वती | ,, |
| | ८५ | चोदयित्री सूनृतानां० | ,, | ,, | ,, | ,, | | ,, | ,, |
| | ८६ | महोऽअर्णः सरस्वती० | ,, | ,, | ,, | ,, | | ,, | ,, |
| | ८७ | इन्द्रा याहि चित्रभानो० | ,, | ,, | ,, | ,, | | इन्द्रः | ,, |
| | ८८ | इन्द्रा याहि धियेषितो० | ,, | ,, | ,, | ,, | | ,, | ,, |
| | ८९ | इन्द्रा याहि तूतुजान० | ,, | ,, | ,, | ,, | | ,, | ,, |
| | ९० | अश्विना पिबतां मधु० | ,, | ,, | ,, | | | अश्विसरस्वतीन्द्राः | अनुष्टुप् |
| | | अथ० संहितायां एकविंशोऽध्यायः । | | | | | | | |
| | १ | इमं मे वरुण श्रुधी० | प्रजापतिः | अश्विनौ, | सरस्वती, | शुनःशेपः | | वरुणः | गायत्री |
| [ अ.१९।४९ ] | २ | तत्त्वा यामि ब्रह्मणा० | ,, | ,, | ,, | ,, | | ,, | त्रिष्टुप् |
| | ३ | त्वं नोऽअग्ने वरुणस्य० | ,, | ,, | ,, | वामदेवः | | अग्निः वरुणः | ,, |
| | ४ | स त्वं नो अग्नेऽवमो० | ,, | ,, | ,, | ,, | | ,, ,, | ,, |
| | ५ | महीमू षु मातरꣳ सुव्रता० | ,, | ,, | ,, | | | अदितिः | ,, |
| | ६ | सुत्रामाणं पृथिवीं द्यामने० | ,, | ,, | ,, | गयःप्लातः | | ,, | ,, |
| | ७ | सुनावमा रुहेयमस्रवन्ती० | ,, | ,, | ,, | | | स्वर्ग्या नौः | गायत्री |
| | ८ | आ नो मित्रावरुणा० | ,, | ,, | ,, | विश्वामित्रः | | मित्रावरुणौ | ,, |
| | ९ | प्र बाहवा सिसृतं जीवसे० | ,, | ,, | ,, | वसिष्ठः | | ,, | त्रिष्टुप् |
| [ अ.९।१६ ] | १० | शं नो भवन्तु वाजिनो० | ,, | ,, | ,, | ,, | | अश्वः | विराट् |
| [ अ.९।१८ ] | ११ | वाजेवाजेऽवत वाजिनो० | ,, | ,, | ,, | ,, | | ,, | त्रिष्टुप् |
| | १२ | समिद्धोऽअग्निः समिधा० | ,, | ,, | ,, | स्वस्त्यात्रेयः | | इध्मः | अनुष्टुप् |
| | | | | | | | इन्द्रः वयोधाः | | |
| | १३ | तनूनपाच्छुचिव्रत० | ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | तनूनपात् | ,, |
| | | | | | | | | नराशंसो वा | |
| | १४ | इडाभिरग्निरीड्यः० | ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | इडः | ,, |
| | १५ | सुबर्हिरग्निः पूषण्वान्० | ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | बर्हिः | ,, |
| | १६ | दुरो देवीर्दिशो मही० | ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | द्वारः | ,, |
| | १७ | उषे यह्वी सुपेशसा० | ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | उषासानक्ता | ,, |

स्वस्त्यात्रेयस्यार्षं वयोधा इन्द्रो देवता, वसन्तेन ऋतुना षड्चमानुष्टुभं लिङ्गोक्तदेवतꣳ, होता यक्षद् द्वादशाप्रीः प्रैषा अश्विसरस्वतीन्द्रदेवत्या, आश्विनौ छागस्य सप्त लिङ्गोक्त-देवताः प्रैषा, वनस्पतिमभियूपोऽग्निꣳ स्विष्टकृदग्निर्देवं बर्हिरेकादशानुयाजप्रैषा अश्विसर-स्वतीन्द्रदेवत्या, अग्निमद्य सूक्तवाकप्रैषो लिङ्गोक्तदेवतो लिङ्गोक्तदेवतः ॥ ४० ॥ [ य० अ० २१ मं० १-६१ ]

इति० संहितायामेकविंशोऽध्यायः ।

## इति सर्वानुक्रमसूत्रे द्वितीयोऽध्यायः ।

## अथ तृतीयोऽध्यायः ।

अथाश्वमेधश्चतुरोऽध्यायान्प्रजापतिरपश्यत् , तेजोऽसि सौवर्णं निष्कमिमामगृभ्ण-न्त्संवत्सरो यज्ञपुरुषास्त्रिष्टुभमभिधा लिङ्गोक्तानि, यो अर्वन्तं गायत्र्यर्धेनाश्वस्तुतिः परोऽर्द्धो

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १८ | दैव्या होतारा भिष० | प्रजापतिः | अश्विनौ | सरस्वती | ,, | ,, | दैव्यौ होतारौ | अनुष्टुप् |
| १९ | तिस्रऽइडा सरस्वती० | ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | तिस्रो देव्यः | ,, |
| २० | त्वष्टा तुरीपोऽअद्भुत० | ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | त्वष्टा | ,, |
| २१ | शमिता नो वनस्पतिः० | ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | वनस्पतिः | ,, |
| २२ | स्वाहा यज्ञं वरुणः० | ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | स्वाहाकृतयः | ,, |
| २३-२८ | वसन्तेन०॥२३॥- शैशिरेण० ॥२८॥ | ,, | ,, | ,, | | ,, | लिङ्गोक्ता | ,, |
| २९--४० | होता ०॥२९॥- होता यक्षदग्नि०॥४०॥ | ,, | ,, | ,, | | | अश्विसरस्वतीन्द्राः | |
| ४१-४५ | होता०॥४१॥- होता यक्षदिन्द्र०॥४५॥ | ,, | ,, | ,, | | | लिङ्गोक्ता | |
| ४६ | होता यक्षद्वनस्पति० | ,, | ,, | ,, | | | यूपः | |
| ४७ | होता यक्षदग्निꣳ० | ,, | ,, | ,, | | | स्विष्टकृदग्निः | |
| ४८-५८ | देवं बर्हिः०॥४८॥-देवोऽअग्निः०॥५८॥ | ,, | ,, | ,, | | | अश्विसरस्वतीन्द्राः | |
| ५९-६१ | अग्निमद्य०॥५९॥- त्वामद्य०॥६१॥ | ,, | ,, | ,, | | | लिङ्गोक्ता | |

## इति सर्वानुक्रमसूत्रे द्वितीयोऽध्यायः ।

## अथ सर्वानुक्रमसूत्रे तृतीयोऽध्यायः ।

अथ० संहितायां द्वाविंशोऽध्यायः । [ अथ अश्वमेधः । अ० २२- अ०२५ ]

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| १ | तेजोऽसि शुक्रममृत० | प्रजापतिः | | सौवर्ण निष्कं | |
| २ | इमामगृभ्णन्रशनामृतस्य० | ,, | संवत्सरो यज्ञपुरुषः | (रशना) | त्रिष्टुप् |
| ३-४ | अभिधा असि०॥३॥- स्वगा त्वा०॥४॥ | ,, | | लिङ्गोक्ता | |
| ५ | प्रजापतये त्वा जुष्टं० | ,, | | ,, | |
| | योऽर्वन्तं जिघांसति० | ,, | | अश्वः | गायत्री |

लिङ्गोक्तोऽग्नये लिङ्गोक्तान्येव, हिङ्कारायेत्यश्वस्यैकान्नपञ्चाशच्चेष्टितानि, हिरण्यपाणिं पञ्चर्चॅं सावित्रं गायत्रमाद्यां मेधातिथिरग्निॅं स्तोमेनाग्नेयं तृचं गायत्रॅं सुतंभरो विश्वामित्रो विरूपो यथासंख्यमजीजनो हि पावमानीं कृतिं पिपीलिकमध्यामनुष्टुभं त्र्यरुणत्रसदस्यू, विभूरश्वदैवतं, देवा दैवमिह रन्तिराग्नेयानि चत्वारि, कायौद्ब्रभणानि लिङ्गोक्तान्याब्रह्मँ ल्लिङ्गोक्तान्येवाध्यायात् ॥ १ ॥ [ य० अ० २२ मं० १-३४ ]

इति० संहितायां द्वाविंशोऽध्यायः ।

प्रजापतये प्राजापत्यं, यस्ते दैवं, यः प्राणतस्त्रिष्टुप्कायी हिरण्यगर्भस्य, युञ्जन्ति मधुच्छन्दा आदित्यदेवत्यां गायत्रीं, युञ्जन्त्यस्याश्वस्तुतिर्यद्वातो बृहती, वसवस्त्वा

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | परो मर्तः परः श्वा० | प्रजापतिः | | लिङ्गोक्ता | गायत्री |
| | ६ | अग्नये स्वाहा सोमाय० | ,, | | ,, (अग्न्यादयः) | |
| | ७-८ | हिङ्काराय स्वाहा०॥७॥- यते स्वाहा०॥८॥ | ,, | | अश्वः | |
| [अ.३ मं.३५] | ९ | तत्सवितुर्वरेण्यं० | ,, | विश्वामित्रः | सविता | ,, |
| | १० | हिरण्यपाणिमूतये० | ,, | मेधातिथिः | ,, | ,, |
| | ११-१४ | देवस्य चेततो०॥११॥- देवस्य स०॥१४ | ,, | | ,, | ,, |
| | १५ | अग्निॅं स्तोमेन बोधय० | ,, | सुतंभरः | अग्निः | ,, |
| | १६ | स हव्यवाडमर्त्यो० | ,, | विश्वामित्रः | ,, | ,, |
| | १७ | अग्निं दूतं पुरो दधे० | ,, | विरूपः | ,, | ,, |
| | १८ | अजीजनो हि पवमान० | ,, | त्र्यरुणत्रसदस्यू | पवमानः | पिपीलिकमध्या कृतिः अनुष्टुप् |
| | १९ | विभूर्मात्रा प्रभूः पित्रा० | ,, | | अश्वः | |
| | | देवाऽआशापालाऽएतं० | ,, | | देवाः | |
| | | इह रन्तिरिह रमता० | ,, | | अग्निः | |
| | २० | काय स्वाहा कस्मै स्वाहा० | ,, | | लिङ्गोक्ता | |
| [अ.४ मं.८] | २१ | विश्वो देवस्य नेतु० | ,, | स्वस्त्यात्रेयः | सविता | अनुष्टुप् |
| | २२-३४ | आ ब्रह्मन्०॥२२-एकस्मै स्वाहा०॥३४॥ | ,, | | लिङ्गोक्ता | |

अथ० संहितायां त्रयोविंशोऽध्यायः ।

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| [अ.१३।४] | १ | हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे० | प्रजापतिः, | हिरण्यगर्भः | कः | त्रिष्टुप् |
| | २ | उपयामगृहीतोऽसि प्रजापतये० | ,, | | प्रजापतिः | |
| | | यस्तेऽहन्त्संवत्सरे महिमा० | ,, | | देवाः | |
| | ३ | यः प्राणतो निमिषतो महित्वैक० | ,, | हिरण्यगर्भः | कः | त्रिष्टुप् |
| [अ.२३।२] | ४ | उपयामगृहीऽसि प्रजापतये० | ,, | | प्रजापतिः | |
| | | यस्ते रात्रौ संवत्सरे महिमा० | ,, | | देवाः | |
| | ५ | युञ्जन्ति ब्रध्नमरुषं० | ,, | मधुच्छन्दाः | आदित्याः | गायत्री |

लिङ्गोक्तानि, लाजी ३ नश्वदेवत्यं, कः स्विचतस्रोऽनुष्टुभः प्रश्नप्रतिप्रश्नभूता ब्रह्मोद्ये होतुर्ब्रह्मणश्च, वायुष्ट्वा लिङ्गोक्तानि, सꣳशितस्तिस्रोऽश्वदेवत्या अनुष्टुब्विराट्त्रिष्टुभोऽग्निः पशुराश्वानि त्रीण्यम्बेऽनुष्टुबश्वस्तुतिर्गणानां त्वा चत्वारि लिङ्गोक्तानि ॥ २ ॥

[ य० अ० २३ मं० १–२० ]

उत्सक्थ्या गायत्र्याश्वी, यका दशर्चमानुष्टुभं, द्वितीया तूपरिष्टाद्बृहत्यध्वर्य्वादीनां कुमार्यादिभिरश्लीलभाषणं ता एव देवता, दधिक्राव्णो दधिक्रावा वामदेव्यः सुरभिमती-

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| | ६ | युञ्जन्त्यस्य काम्या हरी० | प्रजापतिः | अश्वः | गायत्री |
| | ७ | यद्वातोऽअपोऽअगनीगन्० | ,, | ,, | बृहती |
| | ८ | वसवस्त्वाञ्जन्तु गायत्रेण छन्दसा० | ,, | लिङ्गोक्ता | |
| | | लाजी३ञ्छाची३ न्यव्ये० | ,, | अश्वः | |
| | ९ | कः स्विदेकाकी चरति० | ,, | प्रश्नः | अनुष्टुप् |
| | १० | सूर्यऽएकाकी चरति० | ,, | प्रतिप्रश्नः | ,, |
| | ११ | का स्विदासीत्पूर्वचित्ति०ः | ,, | प्रश्नः | ,, |
| | १२ | द्यौरासीत्पूर्वचितिः० | ,, | प्रतिप्रश्नः | ,, |
| | १३ | वायुष्ट्वा पचतैरवत्वसित० | ,, | लिङ्गोक्ता (अश्वः) | |
| | १४ | सꣳशितो रश्मिना रथः० | ,, | अश्वः | अनुष्टुप् |
| | १५ | स्वयं वाजिंस्तन्वं कल्पयस्व० | ,, | ,, | विराट् |
| | १६ | न वाऽउ एतन्म्रियसे न रिष्यसि० | ,, | ,, | त्रिष्टुप् |
| | १७ | अग्निः पशुरासीत्तेनायजन्त० | ,, | ,, | |
| [अ.२२।२३] | १८ | प्राणाय स्वाहापानाय स्वाहा० | ,, | लिङ्गोक्ता | |
| | | अम्बेऽअम्बिकेऽम्बालिके० | ,, | ,, | अनुष्टुप् |
| | १९ | गणानां त्वा गणपतिꣳ० | ,, | ,, | |
| | २० | ताऽउभौ चतुरः पदः० | ,, | ,, | |
| | २१ | उत्सक्थ्याऽ अवगुदं देहि० | ,, | अश्वः | गायत्री |
| | २२ | यकासकौ शकुन्तिका० | ,, | कुमारी | अनुष्टुप् |
| | २३ | यकोऽसकौ शकुन्तक० | ,, | अध्वर्युः | उपरिष्टाद्बृहती |
| | २४ | माता च ते पिता च तेऽग्रं० | ,, | महिषी | अनुष्टुप् |
| | २५ | माता च ते पिता च तेऽग्रे० | ,, | ब्रह्मा | ,, |
| | २६ | ऊर्ध्वामेनामुच्छ्रापय० | ,, | वावाता | ,, |
| | २७ | ऊर्ध्वमेनमुच्छ्रयताद्० | ,, | उद्गाता | ,, |
| | २८ | यदस्या अꣳहुभेद्या० | ,, | परिवृक्ता | ,, |
| | २९ | यद्देवासो ललामगुं० | ,, | होता | ,, |
| | ३० | यद्धरिणो यवमत्ति० | ,, | पालागली | ,, |
| | ३१ | यद्धरिणो यवमत्ति० | ,, | क्षत्ता | ,, |

मनुष्टुभमाश्वीं गायत्रीं पङ्क्तमाश्वमुष्णिगाद्याश्चतस्रोऽनुष्टुभोऽन्त्या त्रिष्टुप्, कस्त्वा पङ्क्तमाश्वमाद्या गायत्री पश्चानुष्टुभः, कः स्विदष्टादशर्चं ब्रह्मोद्यं होत्रादीनां प्रश्नप्रतिप्रश्नभूतमाद्याश्चतस्रोऽनुष्टुभः का स्विदाद्याश्चतस्रश्चान्त्या दश त्रिष्टुभः, सुभूरनुष्टुब् लिङ्गोक्तदेवता, होता यक्षत्प्राजापत्यः प्रैषः, प्रजापते हिरण्यगर्भः प्राजापत्यां त्रिष्टुभम् ॥ ३ ॥ [ य० अ० २३ मं० २१–६५ ]

इति० संहितायां त्रयोविंशोऽध्यायः ।

अश्वस्तूपर इत्यादयः पशवोऽध्यायेनोक्ता देवता वा पर्यङ्ग्यास्तथा रोहितादयो गुणयुक्ता आरण्याश्च कपिञ्जलादय आध्यायाच्छादं दद्भिरित्यादि त्वगित्येतदन्तं द्रव्यदैवतमुक्तम् ॥ ४ ॥ [ य० अ० २४ मं० १–४० ]

इति० संहितायां चतुर्विंशोऽध्यायः ॥

अश्वस्तूपरो ब्राह्मणोऽध्यायः, शादं दद्भिस्त्वचान्तश्च । जुम्बकाय वारुणीं द्विपदां मुण्डिभ औदन्य एषा चाघनाशिन्यन्तर्जले, यस्येमे काय्यौ त्रिष्टुभौ हिरण्यगर्भः प्राजापत्य,

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| ३२ | दधिक्राव्णोऽअकारिषं० | प्रजापतिः दधिक्रावा वामदेव्यः | अश्वः | अनुष्टुप् |
| ३३ | गायत्री त्रिष्टुब्जगत्यनुष्टुप्० | ,, | ,, | उष्णिक् |
| ३४–३७ | द्विपदा या०॥३४॥– रजता हरिणीः ॥३७॥ | ,, | ,, | अनुष्टुप् |
| ३८ | कुविदङ्ग यवमन्तो यवं० | ,, | ,, | त्रिष्टुप् |
| ३९ | कस्त्वा च्छयति कस्त्वा० | ,, | ,, | गायत्री |
| ४०–४४ | ऋतवस्त०॥४०॥– शं ते परेभ्यो०॥४४॥ | ,, | ,, | अनुष्टुप् |
| [अ.२३।९] ४५ | कः स्विदेकाकी चरति० | ,, | प्रश्नः | अनुष्टुप् |
| [अ.२३।१०] ४६ | सूर्यऽएकाकी चरति० | ,, | प्रतिप्रश्नः | ,, |
| ४७–४८ | किꣳस्वित्०॥४७॥– ब्रह्म सूर्य०॥४८॥ | ,, | | ,, |
| ४९–५२ | पृच्छामि०॥४९॥– पञ्चस्वन्तः०॥५२॥ | ,, | | त्रिष्टुप् |
| ५३–५६ | का स्वि०॥५३॥– अजारे०॥५६॥ | ,, | | अनुष्टुप् |
| ५७–६२ | कल्यस्य० ॥५७॥– इयं वेदिः०॥६२॥ | ,, | | त्रिष्टुप् |
| ६३ | सुभूः स्वयंभूः प्रथमो० | ,, | लिङ्गोक्ता | अनुष्टुप् |
| ६४ | होता यक्षत्प्रजापतिꣳ० | ,, | प्रजापतिः | |
| [अ.१०।२०] ६५ | प्रजापते न त्वदेता० | ,, हिरण्यगर्भः | ,, | त्रिष्टुप् |

अथ० संहितायां चतुर्विंशोऽध्यायः ।

| | | | |
|---|---|---|---|
| १–४० | अश्वस्तूपरो० ॥१॥– खड्गो वैश्वदेवः०॥४०॥ | प्रजापतिः | (प्रजापत्यादयः) |

अथ० संहितायां पञ्चविंशोऽध्यायः ।

| | | | |
|---|---|---|---|
| १–९ | शादं दद्भि०॥१॥–विधृतिं नाभ्या घृतꣳ० | प्रजापतिः | ( शादादयः ) |
| | जुम्बकाय स्वाहा । | ,, मुण्डिभः औदन्यः | वरुणः |

आ नो दशर्चं जागतं वैश्वदेवं गोतमः, स्वस्ति नो विराट्स्थाना, भद्रं कर्णेभिस्तृचं त्रैष्टुभं, मा नोऽश्वस्तोमीयं दीर्घतमास्त्रैष्टुभं द्वात्रिंशत्यृचमश्वस्तुतिस्तृतीयाषष्ठ्यौ जगत्याविमा नु द्वैपदं वैश्वदेवं तृचं भौवन आप्त्यो वा साधनो भौवनो वा ॥ ५ ॥
[ य० अ० मं० २५ । १–४७ ]

इति० संहितायां पञ्चविंशोऽध्यायः ।

अग्निश्च सप्त लिङ्गोक्तानि, प्रियो देवानां लौगाक्षिरनुष्टुभमनवसानां, बृहस्पते गृत्स-मदो ब्राह्मीं त्रिष्टुभमिन्द्र गोमन्नैन्द्र्यौ गायत्र्यौ रम्याक्षिर्ऋतावानं प्रादुराक्षिर्वैश्वानरीयां,

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| [अ.१३।४] [अ.२३।१] | १० | हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे० | प्रजापतिः हिरण्यगर्भः | कः | त्रिष्टुप् |
| [अ.२३।३] | ११ | यः प्राणतो निमिषतो० | ,, ,, | ,, | ,, |
| | १२ | यस्येमे हिमवन्तो महित्वा० | ,, प्राजापत्यः हिरण्यगर्भः | ,, | ,, |
| | १३ | यऽआत्मदा बलदा यस्य विश्व० | ,, ,, ,, | ,, | ,, |
| | १४–१८ | आ नो भद्राः० ॥१४॥– तमीशानं०॥१८॥ | ,, गोतमः | विश्वेदेवाः | जगती |
| | १९ | स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः० | ,, ,, | ,, | विराट्स्थाना |
| | २० | पृषदश्वा मरुतः पृश्निमातरः० | ,, ,, | ,, | जगती |
| | २१–२३ | भद्रं कर्णेभिः०॥२१॥– अदितिर्द्यौ०॥२३॥ | ,, ,, | ,, | त्रिष्टुप् |
| | २४ | मा नो मित्रो वरुणो० | ,, दीर्घतमाः | अश्वः | ,, |
| | २५ | यन्निर्णिजा रेक्णसा० | ,, ,, | ,, | ,, |
| | २६ | एष छागः परोऽअश्वेन वाजिना० | ,, ,, | ,, | जगती |
| | २७ | यद्धविष्यमृतुशो देवयानं० | ,, ,, | ,, | त्रिष्टुप् |
| | २८ | होताध्वर्युरावयाऽअग्निमिन्धो० | ,, ,, | ,, | ,, |
| | २९ | यूपव्रस्काऽउत ये यूपवाहा० | ,, ,, | ,, | जगती |
| | ३०–४५ | उप प्रागात्सुम०॥३०॥– सुगव्यं नो०॥४५॥ | ,, ,, | ,, | त्रिष्टुप् |
| | ४६ | इमा नु कं भुवना सीषधामे० | ,, भौवनः आप्त्यः, वा भौवनः साधनो वा | विश्वेदेवाः | द्विपदा |
| [अ.३मं.२५] | ४७ | अग्ने त्वं नोऽअन्तम० | ,, देवाः बन्धुः | अग्निः | द्विपदा विराट् |
| | | वसुरग्निर्वसुश्रवाः० | ,, ,, सुबन्धुः | ,, | ,, |
| [अ.३।२६] | | तं त्वा शोचिष्ठ दीदिवः | ,, ,, श्रुतबन्धुः | ,, | ,, |

[ इत्यश्वमेधः समाप्तः ]

अथ० संहितायां षड्विंशोऽध्यायः ।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| १ | अग्निश्च पृथिवी च सन्नते० | विवस्वान् | लिङ्गोक्ता | |
| २ | यथेमां वाचं कल्याणी० | ,, | ,, | |
| | प्रियो देवानां दक्षिणायै दातु० | लौगाक्षिः | ,, | अनवसाना अनुष्टुप् |
| ३ | बृहस्पतेऽअति यदर्योऽअर्हाद्० | गृत्समदः | ब्रह्मा | त्रिष्टुप् |

वैश्वानरस्य त्रिष्टुभं कुत्सोऽग्निर्ऋषिराग्नेयीं गायत्रीं वसिष्ठभरद्वाजौ, महाँऽइन्द्रो माहेन्द्रीं वसिष्ठस्तं व ऐन्द्रीं पथ्याबृहतीं नोधागोतमो, यद्वाहिष्ठं वसूयव आग्नेयीमनुष्टुभमेहि भरद्वाजो गायत्रीमृतवस्ते बृहतीमुपह्वरे वत्सो गायत्रीम् ॥ ६ ॥ [ य० अ० २६ । मं० १–१५ ]

उच्चा ते गायत्रं तृचꣳ, सौम्यमामहीवयोऽनु वीरैर्मुद्गलो यज्ञपुरुषस्त्रिष्टुभमग्ने पत्नीर्मेधातिथिराग्नेयीं गायत्रीमाभि यज्ञं द्व्यृचमृतुदैवतं मेधातिथिस्तवायमैन्द्रीं त्रिष्टुभं विश्वामित्रोऽमेव नो जगतीं गृत्समदः, स्वादिष्ठया मधुच्छन्दाः सौम्यावनुक्तानां गायत्रम् ॥ ७ ॥ [ य० अ० २६ मं० १६--२६ ]

इति० संहितायां षड्विंशोऽध्यायः ।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| ४ | इन्द्र गोमन्निहा याहि० | रम्याक्षिः | इन्द्रः | गायत्री |
| ५ | इन्द्रा याहि वृत्रहन्० | ,, | ,, | ,, |
| ६ | ऋतावानं वैश्वानर० | प्रादुराक्षिः | वैश्वानरः | ,, |
| ७ | वैश्वानरस्य सुमतौ स्याम० | कुत्सः | ,, | त्रिष्टुप् |
| ८ | वैश्वानरो नऽऊतये० | वसिष्ठभरद्वाजौ | ,, | गायत्री |
| ९ | अग्निर्ऋषिः पवमानः० | ,, | अग्निः | ,, |
| १० | महाँ२ऽइन्द्रो वज्रहस्तः० | वसिष्ठः | महेन्द्रः | ,, |
| ११ | तं वो दस्ममृतीषहं० | नोधागोतमः | इन्द्रः | पथ्याबृहती |
| १२ | यद्वाहिष्ठं तदग्नये० | वसूयवः | अग्निः | अनुष्टुप् |
| १३ | एह्यू षु ब्रवाणि ते० | भरद्वाजः | ,, | गायत्री |
| १४ | ऋतवस्ते यज्ञं वितन्वन्तु० | | ,, | बृहती |
| १५ | उपह्वरे गिरीणां० | वत्सः | सोमः | गायत्री |
| १६ | उच्चा ते जातमन्धसो० | आमहीयवः | ,, | ,, |
| १७ | स नऽइन्द्राय यज्यवे० | ,, | ,, | ,, |
| १८ | एना विश्वान्यर्यऽआ० | ,, | ,, | ,, |
| १९ | अनु वीरैरनु पुष्यास्म गोभि० | मुद्गलो यज्ञपुरुषः | ( देवाः ) | त्रिष्टुप् |
| २० | अग्ने पत्नीरिहा वह० | मेधातिथिः | अग्निः | गायत्री |
| २१ | अभि यज्ञं गृणीहि नो० | ,, | ऋतुः | ,, |
| २२ | द्रविणोदाः पिपीषति० | ,, | ,, | ,, |
| २३ | तवायꣳ सोमस्त्वमेह्यर्वाङ्० | विश्वामित्रः | इन्द्रः | त्रिष्टुप् |
| २४ | अमेव न सुहवा आ हि० | गृत्समदः | ( त्वष्टा ) | जगती |
| २५ | स्वादिष्ठया मदिष्ठया० | मधुच्छन्दाः | सोमः | गायत्री |
| २६ | रक्षोहा विश्वचर्षणि० | ,, | ,, | ,, |

समास्त्वाग्निकोऽध्यायः प्रजापतेरार्षं, सामिधेन्यो नवाग्नेय्यस्त्रिष्टुभोऽग्निना दृष्टा, अग्निर्ऋषिः कर्माङ्गभूतमग्निं स्तौत्यूर्ध्वा द्वादशर्चमाग्नियमौष्णिहं विषमपदं प्राजापत्यमाग्नेयमग्निरपश्यदग्निर्हि प्रजापतित्वेन संस्तूयते तेन प्राजापत्यम् ॥ ८ ॥ [ य० अ० २७ मं० १–२२ ]

पीवो अन्ना द्वे वायव्ये त्रिष्टुभौ वसिष्ठ, आपो ह द्वे प्राजापत्ये हिरण्यगर्भः प्राजापत्यः, प्र याभिर्द्वे वायव्ये वसिष्ठो, नियुत्वान् वायव्याः षड्, वायो शुक्रोऽनुष्टुबेकया च त्रिष्टुबन्या गायत्र्यो, नियुत्वान् वायो गृत्समदो, वायो शुक्रः पुरुमीढाजमीढौ, तव

अथ० संहितायां सप्तविंशोऽध्यायः ।

[ आग्निकोऽध्यायः— ]

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| १—९ | समास्त्वाग्न०॥१॥-अमुत्रभूया०॥९॥ | प्रजापतिः, अग्निः | अग्निः | त्रिष्टुप् |
| [अ.२०।२१] १० | उद्वयं तमसस्परि० | ,, ,, प्रस्कण्वः | सूर्यः | अनुष्टुप् |
| ११ | ऊर्ध्वाऽअस्य समिधो० | ,, ,, अग्निः, प्रजापतिः | इध्मः | विषमपदा उष्णिक् |
| १२ | तनूनपादसुरो विश्ववेदा० | ,, ,, ,, ,, | तनूनपात् | ,, |
| १३ | मध्वा यज्ञं नक्षसे प्रीणानो० | ,, ,, ,, ,, | नराशंसः। | ,, |
| १४ | अच्छायमेति शवसा घृतेन० | ,, ,, ,, ,, | इडः | ,, |
| १५ | स यक्षदस्य महिमान० | ,, ,, ,, ,, | बर्हिः | ,, |
| १६ | द्वारो देवीरन्वस्य विश्वे० | ,, ,, ,, ,, | द्वारः | ,, |
| १७ | तेऽअस्य योषणे दिव्ये० | ,, ,, ,, ,, | उषासानक्ता | ,, |
| १८ | दैव्या होताराऽऊर्ध्वमध्वरं० | ,, ,, ,, ,, | दैव्याहोतारा | ,, |
| १९ | तिस्रो देवीर्बर्हिरेदꣳसद० | ,, ,, ,, ,, | तिस्रो देव्यः | ,, |
| २० | तन्नस्तुरीपमद्भुतं पुरुक्षु० | ,, ,, ,, ,, | त्वष्टा | ,, |
| २१ | वनस्पतेऽव सृजा रराण० | ,, ,, ,, ,, | वनस्पतिः | ,, |
| २२ | अग्ने स्वाहा कृणुहि जातवेद० | ,, ,, ,, ,, | स्वाहाकृतयः | ,, |
| २३ | पीवो अन्ना रयिवृधः० | ,, वसिष्ठः | वायुः | त्रिष्टुप् |
| २४ | राये नु यं जज्ञतू रोदसीमे० | ,, ,, | ,, | ,, |
| २५ | आपो ह यद्बृहतीर्विश्वमा० | ,, हिरण्यगर्भः प्राजापत्यः | प्रजापतिः | ,, |
| २६ | यश्चिदापो महिना पर्यप० | ,, ,, ,, | ,, | ,, |
| २७ | प्र याभिर्यासि दाश्वाꣳस० | ,, वसिष्ठः | वायुः | ,, |
| २८ | आ नो नियुद्भिः शतिनी० | ,, ,, | ,, | ,, |
| २९ | नियुत्वान्वायवागह्ययꣳ० | ,, गृत्समदः | ,, | गायत्री |
| ३० | वायो शुक्रो अयामि ते० | ,, पुरुमीढाजमीढौ | ,, | अनुष्टुप् |
| ३१ | वायुरग्रेगा यज्ञप्रीः० | ,, | ,, | गायत्री |
| ३२ | वायो ये ते सहस्रिणो० | ,, गृत्समदः | ,, | ,, |

वायो व्यश्व आङ्गिरसोऽभि त्वा वसिष्ठ ऐन्द्रं प्रगाथं, प्रथमा बृहती, द्वितीया सतो-बृहती, त्वामिदेवथ्ठं शंयुर्बार्हस्पत्यः, कया न ऐन्द्रं तृचं गायत्रं वामदेवोऽन्त्या तु पादनि-चृद्यज्ञा यज्ञा व ऊर्जो नपातथ्ठं शंयुः, पाहि नो गर्भः प्रगाथ, एतं तृचं प्रगाथमाग्नेयं, द्वे बृहत्यौ तृतीया सतोबृहती, संवत्सरोऽस्याग्नेयम् ॥ ९॥ [य० अ० २७ मं.१३-४५]

इति० संहितायां सप्तविंशोऽध्यायः ।

इन्द्रमिडः सौत्रामणिकोऽध्याय, एकादश प्रयाजप्रैषा ऐन्द्रा आप्रीदेवत्या आद्येऽनुवाके, देवं बर्हिरनुयाजप्रैषा ऐन्द्रा एकादशैवाग्निमद्यैन्द्रः सूक्तवाकप्रैषस्त्वामद्य प्रतीक उभयत्रापि,

| | | | |
|---|---|---|---|
| ३३ एकया च दशभिश्च० | प्रजापतिः | वायुः | त्रिष्टुप् |
| ३४ तव वायवृतस्पते० | ,, व्यश्वः आङ्गिरसः | ,, | गायत्री |
| ३५ अभि त्वा शूर नोनुमो० | ,, वसिष्ठः | इन्द्रः | बृहती |
| ३६ न त्वावाँ २ऽ अन्यो० | ,, ,, | ,, | सतोबृहती |
| ३७ त्वामिद्धि हवामहे० | ,, शंयुःबार्हस्पत्यः | ,, | बृहती |
| ३८ स त्वं नश्चित्र वज्रहस्त | ,, ,, | ,, | सतोबृहती |
| ३९-४० कया न०॥३९॥- कस्त्वा० ॥४९॥ | ,, वामदेवः | ,, | गायत्री |
| ४१ अभी षु णः सखीना० | ,, ,, | ,, | पादनिचृत् ,, |
| ४२ यज्ञा यज्ञा व अग्नये० | ,, शंयुः | अग्निः | बृहती |
| ४३ पाहि नो अग्न एकया० | ,, | ,, | ,, |
| ४४ ऊर्जो नपातᳬं स हिनाय० | ,, शंयुः | ,, | सतोबृहती |
| ४५ संवत्सरोऽसि परित्वसरोऽसी० | ,, | ,, | |

अथ० संहितायां अष्टाविंशोऽध्यायः । [ सौत्रामणिकोऽध्यायः । ]

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| १ होता यक्षत्समिधेन्द्र० | प्रजापतिः | अश्विनौ | सरस्वती | इध्मः |
| २ होता यक्षत्तनूनपातमूतिभि० | ,, | ,, | ,, | तनूनपात् |
| ३ होता यक्षदिडाभिरिन्द्र० | ,, | ,, | ,, | इडः |
| ४ होता यक्षद्बर्हिषीन्द्रं निषद्वरं० | ,, | ,, | ,, | बर्हिः |
| ५ होता यक्षदोजो न वीर्यᳬं | ,, | ,, | ,, | द्वारः |
| ६ होता यक्षदुषे इन्द्रस्य धेनू० | ,, | ,, | ,, | उषासानक्ता |
| ७ होता यक्षद्दैव्या होतारा० | ,, | ,, | ,, | दैव्या होतारा |
| ८ होता यक्षत्तिस्रो देवीर्न० | ,, | ,, | ,, | तिस्रो देव्यः |
| ९ होता यक्षत्त्वष्टारमिन्द्रं देवं० | ,, | ,, | ,, | त्वष्टा |
| १० होता यक्षद्वनस्पतिᳬं० | ,, | ,, | ,, | वनस्पतिः |
| ११ होता यक्षदिन्द्रᳬं स्वाहा० | ,, | ,, | ,, | स्वाहाकृतयः |
| १२ देवं बर्हिरिन्द्रᳬं सुदेवं० | ,, | ,, | ,, | बर्हिः |
| १३ देवीर्द्वार इन्द्रᳬं सङ्घाते० | ,, | ,, | ,, | द्वारः |
| १४ देवीऽउषासानक्तेन्द्रं यज्ञे० | ,, | ,, | ,, | उषासानक्ता |

समिधानं महद्वायोधस आप्रिय एकादश प्रयाजप्रैषास्तथैव देवं बर्हिरनुयाजप्रैषा, अग्नि मद्य वायोधसः सूक्तवाकप्रैषः ॥ १० ॥ [ य० अ० २८ मं० १–४६ ]

इति० संहितायां अष्टाविंशोऽध्यायः ।

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| | १५ देवी जोष्ट्री वसुधिती० | प्रजापतिः | अश्विनौ | सरस्वती | (द्यावापृथिव्यौ अहोरात्रे वा) |
| | १६ देवी ऊर्जाहुती दुघे० | ,, | ,, | ,, | |
| | १७ देवा दैव्या होतारा० | ,, | ,, | ,, | (एकः पार्थिवोऽग्निः अन्यो मध्यमः) |
| | १८ देवीस्तिस्रस्तिस्रो देवीः० | ,, | ,, | ,, | तिस्रो देव्यः |
| | १९ देव इन्द्रो नराशꣳस० | ,, | ,, | ,, | ( यज्ञः ) |
| | २० देवो दैवैर्वनस्पति० | ,, | ,, | ,, | ( यूपः ) |
| | २१ देवं बर्हिर्वारितीनां० | ,, | ,, | ,, | बर्हिः |
| | २२ देवो अग्निः स्विष्टकृत्० | ,, | ,, | ,, | स्विष्टकृत् अग्निः |
| [अ.२१।५९] | २३ अग्निमद्य होतारमवृणीतायं० | ,, | ,, | ,, | लिङ्गोक्ता |
| | २४ होता यक्षत्समिधानं० | ,, | ,, | ,, | समित् |
| | २५ होता यक्षत्तनूनपातमुद्भिदं० | ,, | ,, | ,, | तनूनपात् |
| | २६ होता यक्षदीडेन्यमीडितं० | ,, | ,, | ,, | इडः |
| | २७ होता यक्षत्सुबर्हिषं० | ,, | ,, | ,, | बर्हिः |
| | २८ होता यक्षद्व्यचस्वतीः० | ,, | ,, | ,, | द्वारः |
| | २९ होता यक्षत्सुपेशसा सुशिल्पे० | ,, | ,, | ,, | उषासानक्ता |
| | ३० होता यक्षत्प्रचेतसा० | ,, | ,, | ,, | दैव्या होतारा |
| | ३१ होता यक्षत्पेशस्वतीस्तिस्रो० | ,, | ,, | ,, | तिस्रो देव्यः |
| | ३२ होता यक्षत्सुरेतसं० | ,, | ,, | ,, | त्वष्टा |
| | ३३ होता यक्षद्वनस्पतिं० | ,, | ,, | ,, | वनस्पतिः |
| | ३४ होता यक्षत्स्वाहाकृतीरग्निं० | ,, | ,, | ,, | स्वाहाकृतयः |
| | ३५ देवं बर्हिर्वयोधसं० | ,, | ,, | ,, | बर्हिः |
| | ३६ देवीर्द्वारो वयोधसं० | ,, | ,, | ,, | द्वारः |
| | ३७ देवी उषासानक्ता० | ,, | ,, | ,, | उषासानक्ता |
| | ३८ देवी जोष्ट्री वसुधिती० | ,, | ,, | ,, | (द्यावापृथिवी अहोरात्रे वा ) |
| | ३९ देवी ऊर्जाहुती दुघे० | ,, | ,, | ,, | |
| | ४० देवा दैव्या होतारा० | ,, | ,, | ,, | दैव्या होतारा |
| | ४१ देवीस्तिस्रस्तिस्रो देवी० | ,, | ,, | ,, | तिस्रो देव्यः |
| | ४२ देवो नराशꣳसो देवमिन्द्रः० | ,, | ,, | ,, | नराशंसः |
| | ४३ देवो वनस्पतिर्देवमिन्द्रं० | ,, | ,, | ,, | वनस्पतिः |
| | ४४ देवं बर्हिर्वारितीनां० | ,, | ,, | ,, | बर्हिः |
| | ४५ देवोऽअग्निः स्विष्टकृत्० | ,, | ,, | ,, | स्विष्टकृत् |
| [अ.२१।५९-६१] | ४६ अग्निमद्य होतारमवृणीतायं० | ,, | ,, | ,, | लिङ्गोक्ता |

समिद्धो अञ्जन्नाश्वमेधिकोऽध्याय, आद्या आप्रीस्त्रिष्टुभ एकादशाश्वस्तुतिर्बृहदुक्थो वामदेव्यो ददर्शाश्वो वा सामुद्रिर्यदक्रन्दस्त्रयोदशाश्वस्तुतिस्त्रिष्टुभो भार्गवो जमदग्निर्ददर्श दीर्घतमाश्च, समिद्धो अद्य द्वादशाप्रीस्त्रिष्टुभो जमदग्निः ॥ ११ ॥ [ य० अ० २९ मं० १–३६ ]

केतुं कृण्वन्नाग्नेयीमनिरुक्तां गायत्रीं मधुच्छन्दा, जीमूतस्येव पायुर्भारद्वाजः संग्रामा-

अथ० संहितायां एकोनत्रिंशोऽध्यायः ।

[ आश्वमेधिकोऽध्यायः ]

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ समिद्धोऽअञ्जन्कृदरं० | प्रजापतिः | बृहदुक्थो, | वामदेव्यः | अश्वः | सामुद्रिः | समित् | त्रिष्टुप् |
| २ घृतेनाञ्जन्सं पथो० | ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | तनूनपात् | ,, |
| ३ ईड्यश्चासि वन्द्यश्च० | ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | नराशंसः | ,, |
| ४ स्तीर्णं बर्हिः सुष्टरीमा० | ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | बर्हिः | ,, |
| ५ एताऽउ वः सुभगा० | ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | द्वारः | ,, |
| ६ अन्तरा मित्रावरुणा० | ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | उषासानक्ता | ,, |
| ७ प्रथमा वाᳬं सरथिना० | ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | दैव्या होतारा | ,, |
| ८ आदित्यैर्नो भारती० | ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | तिस्रो देव्यः | ,, |
| ९ त्वंष्टा वीरं देवकामं० | ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | त्वष्टा | ,, |
| १० अश्वो घृतेन त्मन्या० | ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | वनस्पतिः | ,, |
| ११ प्रजापतेस्तपसा० | ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | स्वाहाकृतयः | ,, |
| १२–२४यदक्रन्दः०॥१२–उप प्रागा०॥२४॥ | ,, | भार्गवो जमदग्निः दीर्घतमाः | | | | अश्वः | ,, |
| २५ समिद्धोऽअद्य मनुषो | प्रजापतिः | जमदग्निः | | | | समित् | त्रिष्टुप् |
| २६ तनूनपात्पथऽऋतस्य० | ,, | ,, | | | | तनूनपात् | ,, |
| २७ नराशᳬंसस्य महिमानमेषा० | ,, | ,, | | | | नराशंसः | ,, |
| २८ आजुह्वान ईड्यो वन्द्यश्चा० | ,, | ,, | | | | इडः | ,, |
| २९ प्राचीनं बर्हिः प्रदिशा० | ,, | ,, | | | | बर्हिः | ,, |
| ३० व्यचस्वतीरुर्विया विश्रयन्तां० | ,, | ,, | | | | द्वारः | ,, |
| ३१ आसुष्वयन्ती यजते उपाके० | ,, | ,, | | | | उषासानक्ता | ,, |
| ३२ दैव्या होतारा प्रथमा सुवाचा० | ,, | ,, | | | | दैव्या होतारा | ,, |
| ३३ आ नो यज्ञं भारती तूयमे० | ,, | ,, | | | | तिस्रो देव्यः | ,, |
| ३४ यऽइमे द्यावापृथिवी जनित्री० | ,, | ,, | | | | त्वष्टा | ,, |
| ३५ उपावसृज त्मन्या समञ्जन्० | ,, | ,, | | | | वनस्पतिः | ,, |
| ३६ सद्यो जातो व्यमिमीत यज्ञं० | ,, | ,, | | | | स्वाहाकृतयः | ,, |
| ३७ केतुं कृण्वन्नकेतवे० | ,, | मधुच्छन्दाः | | | | अग्निः(अ०) | गायत्री |
| ३८ जीमूतस्येव भवति प्रतीकं० | ,, | पायुः भारद्वाजः | | | | सन्नाहम् | त्रिष्टुप् |
| ३९ धन्वना गा धन्वनाजिं० | ,, | ,, | | | | कार्मुकं | ,, |

ज्ञान्यृक्शोऽस्तौषीत्सन्नाहं, कार्मुकं, गुणमार्त्नीं, तूणं, जगत्यर्धेन सारथिमर्धेन रश्मीन्हरीन्रथँ रथगोपायितॄञ्जगत्या लिङ्गोक्तदेवता द्वाभ्यां त्रिष्टुबनुष्टुब्भ्यामिषुमनुष्टुभा कशां, ततो हस्तघ्नं, ततस्तृचौ रथदुन्दुभिदेवत्यावैन्द्रोऽर्धर्चोऽन्त्यः, सर्वास्त्रिष्टुभोऽनुक्ता, आग्नेयः कृष्णग्रीव इत्याद्या एकादशिन्योर्द्वयोः पशुदेवता, अग्नये गायत्रायेति दश हविषो वेष्टेर्देवता ॥ १२ ॥ [ य० अ० २९ मं० ३७–६० ]

इति० संहितायां एकोनत्रिंशोऽध्यायः ।

देव सवितर्द्वाविंध्यायौ पुरुषमेधो नारायणः पुरुषो ददर्श, विश्वानि देव गायत्रीँ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ४० | वक्ष्यन्ती वेदा गनीगन्ति० | प्रजापतिः पायुः भारद्वाजः | | गुणः | त्रिष्टुप् |
| ४१ | तेऽआचरन्ती समनेव० | ,, | ,, | आर्त्नी | ,, |
| ४२ | बह्वीनां पिता बहुरस्य पुत्र० | ,, | ,, | तूणं | ,, |
| ४३ | रथे तिष्ठन्नयति वाजिनः पुरो० | ,, | ,, | सारथिः | जगती |
| | अभीशूनां महिमानं पनायत० | ,, | ,, | रश्मयः | ,, |
| ४४ | तीव्रान्घोषान्कृण्वते वृष० | ,, | ,, | हरयः (अश्वाः) | त्रिष्टुप् |
| ४५ | रथवाहणँ हविरस्य नाम० | ,, | ,, | रथः | ,, |
| ४६ | स्वादुषँसदः पितरो वयो० | ,, | ,, | रथगोपायितारः | ,, |
| ४७ | ब्राह्मणासः पितरः सोम्यासः० | ,, | ,, | लिङ्गोक्ता(ब्राह्मणादयः) | जगती |
| ४८ | सुपर्णं वस्ते मृगो अस्या दन्तो० | ,, | ,, | इषुः | त्रिष्टुप् |
| ४९ | ऋजीते परि वृंग्धि० | ,, | ,, | ,, | अनुष्टुप् |
| ५० | आ जङ्घन्ति सान्वेषां० | ,, | ,, | कशा | ,, |
| ५१ | अहिरिव भोगैः पर्येति० | ,, | ,, | हस्तघ्नः | त्रिष्टुप् |
| ५२ | वनस्पते वीड्वङ्गो हि भूया० | ,, | ,, | रथः | ,, |
| ५३ | दिवः पृथिव्याः पर्योजऽउद्भृतं० | ,, | ,, | ,, | ,, |
| ५४ | इन्द्रस्य वज्रो मरुतामनीकं० | ,, | ,, | ,, | ,, |
| ५५ | उप श्वासय पृथिवीमुत द्यां० | ,, | ,, | दुन्दुभिः | ,, |
| ५६ | आक्रन्दय बलमोजो न० | ,, | ,, | ,, | ,, |
| ५७ | आमूरज प्रत्यावर्तयेमा० | ,, | ,, | ,, | ,, |
| | समश्वपर्णाश्चरन्ति नो नरो० | ,, | ,, | इन्द्रः | ,, |
| ५८ | आग्नेयः कृष्णग्रीवः सरस्वती० | ,, | | पशवः | |
| ५९ | अग्नयेऽनीकवते रोहिताञ्जिः० | ,, | | ,, | |
| ६० | अग्नये गायत्राय त्रिवृते० | ,, | | ( अग्न्यादयः ) | |

अथ० संहितायां त्रिंशोऽध्यायः ।

[ पुरुषमेधः । अ. ३०—३१ ]

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| [अ.९ मं.१] १ | देव सवितः प्रसुव यज्ञं० | नारायणःपुरुषः | | सविता | त्रिष्टुप् |
| [अ.३ मं.२५] २ | तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य० | ,, | विश्वामित्रः | ,, | गायत्री |

सावित्रीꣳ श्यावाश्वो, विभक्तारं मेधातिथिर्ब्रह्मणे ब्राह्मणमिति द्वे कण्डिके तपसेऽनुवाकश्च ब्राह्मणम् ॥ १३ ॥ [ य० अ० ३० मं० १–२२ ]

इति० संहितायां त्रिंशोऽध्यायः ।

सहस्रशीर्षा षोडशर्चमानुष्टुभं त्रिष्टुबन्तं पुरुषो जगद्बीजमत्र देवताऽग्रः षडृच उत्तर-नारायणो मन्त्र, आद्यास्तिस्रस्त्रिष्टुभो द्वे अनुष्टुभावन्त्या त्रिष्टुप् ॥ १४ ॥ [ य० अ० ३१ मं० १–२२ ]

इति० संहितायामेकत्रिंशोऽध्यायः ।

तदेव सर्वमेधोऽध्याय आत्मदैवतः सप्तमेऽहनि सर्वहोमे विनियुक्तः, सर्वमेधं ब्रह्म स्वयम्भ्वैक्षत तदीयं मन्त्रगणं प्र वायुमच्छेत्येतस्मादाद्ये द्वे अनुष्टुभौ, न तस्य द्विपदा गायत्री, हिरण्यगर्भश्चतस्रो मा मा हिꣳसीद्यस्मान्न द्वे एताः प्रतीकचोदिता ब्रह्मयज्ञे ध्येयाः, सर्वत्रैवमेषो ह चतस्रस्त्रिष्टुभ आपो ह यश्चित्प्रतीकचोदिते ॥ १५ ॥ [ य० अ० ३२ मं० १–७ ]

वेनस्तत्पश्च त्रिष्टुभः सदसस्पतिं तृचेन मेधाकामो मेधां याचते, प्रथमा गायत्री

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| | ३ विश्वानि देव सवित० | नारायण:पुरुषः श्यावाश्वः | सविता | गायत्री |
| | ४ विभक्तारꣳ हवामहे० | ,, मेधातिथिः | ,, | ,, |
| | ५–२२ ब्रह्मणे ब्राह्मणं॥५॥– अथैतानष्टौ०॥२२॥ | ,, | | |
| | अथ० संहितायां एकत्रिंशोऽध्यायः । | | | |
| | १-१५ सहस्रशीर्षा० ॥१॥– सप्तास्यासन्०॥१५॥ | नारायण:पुरुषः | पुरुष:जगद्बीजं | अनुष्टुप् |
| | १६ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवा० | ,, | ,, | त्रिष्टुप् |
| [उत्तरनारायणः | १७ अद्भ्यः संभृतः पृथिव्यै० | ,, | आदित्यः | ,, |
| मं.१७–२२] | १८ वेदाहमेतं पुरुषं महान्त० | ,, | ,, | ,, |
| | १९ प्रजापतिश्चरति गर्भेऽअन्त० | ,, | ,, | ,, |
| | २० यो देवेभ्यऽआ तपति० | ,, | ,, | अनुष्टुप् |
| | २१ रुचं ब्राह्मं जनयन्तो० | ,, | ,, | ,, |
| | २२ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्या० | ,, | ,, | त्रिष्टुप् |
| | अथ० संहितायां द्वात्रिंशोऽध्यायः । [ सर्वमेधः अ० ३२ ] | | | |
| | १ तदेवाग्निस्तदादित्य० | ब्रह्म स्वयम्भु | आत्मा | अनुष्टुप् |
| | २ सर्वे निमेषा जज्ञिरे० | ,, | ,, | ,, |
| | ३ न तस्य प्रतिमाऽअस्ति० | ,, | ,, | द्विपदा गायत्री |
| | ४–७ एषो ह देवः०॥४॥– यं क्रन्दसी० ॥७॥ | ,, | ,, | त्रिष्टुप् |
| | ८–१२ वेनस्तत्०॥८॥–परि द्यावापृथिवी०॥१२॥ | ,, | ,, | ,, |
| | १३ सदसस्पतिमद्भुतं० | ,, | ,, लिङ्गोक्ता ( सदसस्पतिः ) | गायत्री |

लिङ्गोक्तदेवता, द्वितीयाग्नेय्यनुष्टुप् तृतीया लिङ्गोक्तदेवतानुष्टुबिदं मे मान्त्रवर्णिक्यनुष्टुबे-तया देवेभ्यः श्रीकामो याचते श्रियम् ॥ १६ ॥ [ य० अ० ३२ मं० ८--१६ ]

इति० संहितायां द्वात्रिंशोऽध्यायः।

अस्याजरासः सप्तदशाग्निष्टुत्याग्निष्टोमिके प्रथमेऽहनि पुरोरुच आग्नेय्य आद्ये द्वे ऐन्द्रवाय-वस्यास्याजरासो वत्सप्रीर्हरयो धूमकेतवो विरूपो, यजा नो मैत्रावरुणस्य गोतमो, द्वे विरूपे शुक्रस्य कुत्सोऽयमिह मन्थिनो वैश्वदेवग्रहग्रहणे त्रीणि शता विश्वामित्र ऐन्द्राग्नस्याग्नि-र्वृत्राणि भरद्वाजो वैश्वदेवस्य विश्वेभिः सोम्यं मेधातिथिरायन्मरुत्वतीययोर्द्वे आ यत्प-राशरः शाक्त्योऽग्ने शर्द्धाऽत्रिदुहिता विश्ववारा, त्वांꣳ हि भरद्वाजस्त्वे अग्ने द्वे बृहत्या-वादित्यस्य त्वे अग्ने वसिष्ठः, श्रुधि प्रस्कण्व आदित्यग्रहग्रहणे विश्वेषामदितिर्वामदेवो गोतमो महो अग्नेः सावित्रस्य लुशोधानाकोऽनुक्तं गायत्रं त्रैष्टुभम् ॥ १७ ॥ [ य० अ० ३३ मं० १—१७ ]

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| | १४ यां मेधां देवगणाः० | ब्रह्म स्वयम्भु | अग्निः | अनुष्टुप् |
| | १५ मेधां मे वरुणो ददातु० | ,, | लिङ्गोक्ता(वरुणादयः) | ,, |
| | १६ इदं मे ब्रह्म च क्षत्रं० | ,, | मन्त्रोक्ता (श्रीः) | ,, |

अथ० संहितायां त्रयस्त्रिंशोऽध्यायः।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| | १ अस्याजरासो दमामरित्रा० | वत्सप्रीः | अग्निः | त्रिष्टुप् |
| | २ हरयो धूमकेतवो० | विरूपः | ,, | गायत्री |
| | ३ यजा नो मित्रावरुणा० | गोतमः | ,, | ,, |
| [ अ.१३।३७ ] | ४ युक्ष्वा हि देवहूतमां० | विरूपः | ,, | ,, |
| | ५ द्वे विरूपे चरतः स्वर्थे० | कुत्सः | ,, | त्रिष्टुप् |
| [ अ.३ । १५ ] | ६ अयमिह प्रथमो धायि० | वामदेवः | ,, | जगती |
| | ७ त्रीणि शता त्रीसहस्राण्यग्निं० | विश्वामित्रः | ,, | त्रिष्टुप् |
| [ अ.७।२४ ] | ८ मूर्धानं दिवोऽअरतिं पृथिव्या० | भरद्वाजः | वैश्वानरः | ,, |
| | ९ अग्निर्वृत्राणि जङ्घनद्० | ,, | अग्निः | गायत्री |
| | १० विश्वेभिः सोम्यं मध्वग्न० | मेधातिथिः | ,, | ,, |
| | ११ आ यदिषे नृपतिं तेजऽआनट्० | पराशरः शाक्त्यः | ,, | त्रिष्टुप् |
| | १२ अग्ने शर्ध महते सौभगाय० | अत्रिदुहिता विश्ववारा | ,, | ,, |
| | १३ त्वाꣳ हि मन्द्रतममर्कशोकैः० | भरद्वाजः | ,, | ,, |
| | १४ त्वे अग्ने स्वाहुत प्रियासः० | वसिष्ठः | ,, | बृहती |
| | १५ श्रुधि श्रुत्कर्ण वह्निभि० | प्रस्कण्वः | ,, | ,, |
| | १६ विश्वेषामदितिर्यज्ञियानां० | वामदेवः गोतमः | ,, | त्रिष्टुप् |
| | १७ महोऽअग्नेः समिधानस्य० | लुशोधानाकः | ,, | ,, |

इन्द्रस्तुत्युक्थे द्वितीयेऽहन्यैन्द्र्यः पुरोरुचो द्वादश प्रतीकचोदिते च द्वे तिस्रश्चापश्चि-द्वसिष्ठो, गाव उप पुरुमीढाजमीढौ, यदद्य वसिष्ठ, आ सुते सुनीतिरातिष्ठन्तं विश्वामित्रः,प्र वः सुचीको, बृहान्नि त्रिशोक, इन्द्रेहि मधुच्छन्दा, इन्द्रो वृत्रं विश्वामित्रः, कुतस्त्वमगस्त्य, आ तद्गौरीवितिः शाक्त्य, इमां ते कुत्सो जगतीमनुक्तं गायत्रं त्रैष्टुभम् ॥१८॥ [ य० अ० ३३ मं० १८-२९ ]

सूर्यस्तुत्युक्थ्ये तृतीयेऽहनि सौर्यश्चतुर्दश पुरोरुचस्तिस्रश्च प्रतीकोक्ता, विभ्राड् बृह-ज्जगती विभ्राट् सौर्य उदु त्यं तिस्रः प्रस्कण्व, आ नोऽगस्त्यो, यदद्य श्रुतकक्षसुकक्षौ, तरणिः प्रस्कण्वस्तत्सूर्यस्य द्वे कुत्सो, बण्महाँ द्वे जमदग्निर्बृहतीसतोबृहत्यौ, श्रायन्त इव

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| | १८ आपश्चित्पिप्युस्तर्यो न गावो० | वसिष्ठः | इन्द्रः | त्रिष्टुप् |
| | १९ गावऽउपावतावतं० | पुरुमीढाजमीढौ | ,, | गायत्री |
| | २० यदद्य सूरऽउदिते० | वसिष्ठः | ,, | ,, |
| | २१ आ सुते सिञ्चत श्रियं० | सुनीतिः | ,, | ,, |
| [ अ.७।१२ ] | तं प्रत्नथा० | अवत्सारः काश्यपः | ,, विश्वेदेवाः | त्रिष्टुप् |
| [ अ.७।१६ ] | अयं वेनः० | वेनः | ,, वेनः | ,, |
| | २२ आतिष्ठन्तं परि विश्वेऽअभूषन्० | विश्वामित्रः | ,, | त्रिष्टुप् |
| | २३ प्र वो महे मन्दमानायान्धसो० | सुचीकः | ,, | ,, |
| | २४ बृहन्निदिध्मऽएषां भूरि० | त्रिशोकः | ,, | गायत्री |
| | २५ इन्द्रेहि मत्स्यन्धसो० | मधुच्छन्दाः | ,, | ,, |
| | २६ इन्द्रो वृत्रमवृणोच्छर्धनीतिः० | विश्वामित्रः | ,, | त्रिष्टुप् |
| | २७ कुतस्त्वमिन्द्र माहिनः० | अगस्त्यः | ,, | ,, |
| | २८ आ तत्तऽइन्द्रायवः० | गौरीवितिः शाक्त्यः | ,, | ,, |
| | २९ इमां ते धियं प्र भरे महो० | कुत्सः | ,, | जगती |
| | ३० विभ्राड् बृहत्पिबतु सोम्यं० | विभ्राट् सौर्य | सूर्यः | ,, |
| ३१-३३ उदु त्यं०॥३१॥- दैव्यावध्व० ॥३३॥ | | प्रस्कण्वः | ,, | गायत्री |
| [ अ. ७।१२ ] | तं प्रत्नथा० | अवत्सारः काश्यपः | ,, विश्वेदेवाः | त्रिष्टुप् |
| [ अ. ७।१६ ] | अयं वेनः० | वेनः | ,, वेनः | ,, |
| [ अ. ७।४२ ] | चित्रं देवानां० | कुत्सः | ,, | ,, |
| | ३४ आ नऽइडाभिर्विदथे० | अगस्त्यः | ,, | ,, |
| | ३५ यदद्य कच्च वृत्रहन्नुदगा० | श्रुतकक्ष-सुकक्षौ | ,, | गायत्री |
| | ३६ तरणिर्विश्वदर्शतो० | प्रस्कण्वः | ,, | ,, |
| | ३७ तत्सूर्यस्य देवत्वं तन्महित्वं० | कुत्सः | ,, | त्रिष्टुप् |
| | ३८ तन्मित्रस्य वरुणस्याभिचक्षे० | ,, | ,, | ,, |
| | ३९ बण्महाँ२ऽ असि सूर्य० | जमदग्निः | ,, | बृहती |

नृमेधो बृहतीमद्या देवाः कुत्स, आ कृष्णेन हिरण्यस्तूप आङ्गिरसोऽनाख्यातꣳ सौर्यं गायत्रं त्रैष्टुभम् ॥ १९ ॥ [ य० अ० ३३ मं० ३०–४३ ]

वैश्वदेवस्तुतिश्चतुर्थेऽहनि, वैश्वदेव्यः पुरोरुच एकादश षट् च प्रतीकोक्ताः, प्र वावृजे वसिष्ठस्त्रिष्टुभमिन्द्रवायू बृहस्पतिं द्वे मेधातिथिरधि नः कुसीदी काण्वोऽग्न इन्द्र प्रतिक्षत्र, इन्द्राग्नी मित्रावरुणा जगतीं काश्यपोऽवत्सारोऽस्मे रुद्राः प्रगाथोऽर्वाञ्चो अद्य कूर्मो गार्त्समदो, विश्वे अद्य लुशोधानाको, विश्वे देवाः सुहोत्रो, देवेभ्यो हि वामदेवो जगतीमनुक्तं गायत्रं त्रैष्टुभम् ॥ २० ॥ [ य० अ० ३३ मं० ४४–५४ ]

अथानारभ्याधीतं मन्त्रगणमर्वाक्पितृमेधादादित्ययाज्ञवल्क्यौ ददृशतुः, प्र वायुं पञ्चदशर्चः पुरोरुग्गणो द्वे च प्रतीकोक्ते, प्र वायुमृजिश्वा, मित्रꣳ हुवे द्वे मधुच्छन्दा, मित्रं

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| | ४० बट् सूर्य श्रवसा महाँ० | जमदग्निः | सूर्यः | सतोबृहती |
| | ४१ श्रायन्तऽइव सूर्यं० | नृमेधः | ,, | बृहती |
| | ४२ अद्या देवाऽउदिता सूर्यस्य० | कुत्सः | ,, | त्रिष्टुप् |
| | ४३ आ कृष्णेन रजसा० | हिरण्यस्तूपः आङ्गिरसः | ,, | ,, |
| | ४४ प्र वावृजे सुप्रया बर्हिरेषामा० | वसिष्ठः | विश्वेदेवाः | त्रिष्टुप् |
| | ४५ इन्द्रवायू बृहस्पतिं० | मेधातिथिः | ,, | गायत्री |
| | ४६ वरुणः प्राविता भुवन्मित्रो० | ,, | ,, | ,, |
| | ४७ अधि न इन्द्रैषां विष्णो० | कुसीदी काण्वः | ,, | ,, |
| | तं प्रत्नथा० [ अ. ७।१२ ] | | | |
| | अयं वेनः० [ अ. ७।१६ ] | | | |
| | ये देवासः० [ अ. ७।१९ ] | | | |
| | आ न इडाभि० [ अ. ३३।३४ ] | | | |
| | विश्वेभिः सोम्यं मधु० [ ३३।१० ] | | | |
| | ओमासश्चर्षणीधृतः० [ ७।३३ ] | | | |
| | ४८ अग्नऽइन्द्र वरुण मित्र देवाः० | प्रतिक्षत्रः | ,, | त्रिष्टुप् |
| | ४९ इन्द्राग्नी मित्रावरुणादितिꣳ० | काश्यपोऽवत्सारः | ,, | जगती |
| | ५० अस्मे रुद्रा पर्वता मेहनासो० | प्रगाथः | ,, | त्रिष्टुप् |
| | ५१ अर्वाञ्चोऽअद्या भवता यजत्रा० | कूर्मः गार्त्समदः | ,, | ,, |
| [अ.१८।३१] | ५२ विश्वेऽअद्य मरुतो विश्वऽउती० | लुशोधानाकः | ,, | ,, |
| | ५३ विश्वे देवाः शृणुतेमꣳ हवं मे० | सुहोत्रः | ,, | ,, |
| | ५४ देवेभ्यो हि प्रथमं यज्ञियेभ्यो० | वामदेवः | ,, | जगती |
| | ५५ प्र वायुमच्छा बृहती मनीषा० | आदित्ययाज्ञवल्क्यौ, ऋजिश्वा | वायुः | त्रिष्टुप् |
| | ५६ इन्द्रवायूऽइमे सुता० | ,, | इन्द्रवायू | गायत्री |
| | ५७ मित्रꣳ हुवे पूतदक्षं० | ,, मधुच्छन्दाः | लिङ्गोक्ता(मित्रावरुणौ) | ,, |

लिङ्गोक्ता, दस्रा युवाकव आश्विनीं, विदद्यदैन्द्रीं कुशिको, न हि स्पशं विश्वामित्रो वैश्वानरीमुग्रा विघनिनैन्द्राग्नीं भरद्वाज, उपास्मै सौमीं देवलोऽसितो वा, ये त्वा विश्वामित्रो, जनिष्ठा उग्रो गौरीवितिरा तू वामदेवस्तृचमैन्द्रं, त्वमिन्द्रैन्द्र्यौ नृमेधः पथ्याबृहतीसतोबृहत्यौ, यज्ञो देवानां कुत्सोऽदब्धेभिः सावित्रीं जगतीं भरद्वाज, [अनुक्तं गायत्रं त्रैष्टुभम् ] ॥ २१ ॥ [ य०अ०३३ मं०५५–६९ ]

प्र वीरया पञ्चदशर्चः पुरोरुग्गणो द्वे च प्रतीकोक्ते, प्र वीरया वसिष्ठो वायव्यां, काव्ययोराजानेषु दक्षस्तिरश्चीनः परमेष्ठी प्रजापतिर्भाववृत्तमा रोदसी जगतीं विश्वामित्र, उक्थेभिर्वृत्रहन्तमा वसिष्ठ उप नः सुहोत्रो वैश्वदेवीं, ब्रह्माणि मेऽगस्त्यो द्वे इन्द्रमरुत्संवादे,

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | ५८ | दस्रा युवाकवः सुता० | आदित्ययाज्ञवल्क्यौ | मधुच्छन्दाः | अश्विनौ | गायत्री |
| | | तं प्रत्नथा० [ अ. ७।१२ ] | | | | |
| | | अयं वेनः [ अ, ७।१६ ] | | | | |
| | ५९ | विदद्यदी सरमा रुग्णमद्रे० | ,, | कुशिकः | इन्द्रः | त्रिष्टुप् |
| | ६० | न हि स्पशमविदन्नन्यमस्मा० | ,, | विश्वामित्रः | वैश्वानरः | ,, |
| | ६१ | उग्रा विघनिना मृध० | ,, | भरद्वाजः | इन्द्राग्नी | गायत्री |
| | ६२ | उपास्मै गायता नरः० | ,, | देवलः, असितः वा | सोमः | ,, |
| | ६३ | ये त्वाहिहत्ये मघवन्नवर्धन्ये० | ,, | विश्वामित्रः | इन्द्रः | त्रिष्टुप् |
| | ६४ | जनिष्ठाऽउग्रः सहसे तुराय० | ,, | गौरीवितिः | ,, | ,, |
| | ६५ | आ तू नऽइन्द्र वृत्रहन्० | ,, | वामदेवः | ,, | गायत्री |
| | ६६ | त्वमिन्द्र प्रतूर्तिष्वभि० | ,, | नृमेधः | ,, | पथ्याबृहती |
| | ६७ | अनु ते शुष्मं तुरयन्तमीयतुः० | ,, | ,, | ,, | सतोबृहती |
| [अ.८ मं४ ] | ६८ | यज्ञो देवानां प्रत्येति सुम्न० | ,, | कुत्सः | आदित्यः | त्रिष्टुप् |
| | ६९ | अदब्धेभिः सवितः० | ,, | भरद्वाजः | सविता | जगती |
| | ७० | प्र वीरया शुचयो दद्रिरे वा० | ,, | वसिष्ठः | वायुः | त्रिष्टुप् |
| [अ.३३।१९] | ७१ | गावऽउपावतावतं० | ,, | पुरुमीढाजमीढौ | इन्द्रः | गायत्री |
| | ७२ | काव्ययोराजानेषु० | ,, | दक्षः | मित्रावरुणौ | ,, |
| [अ.३३।३३] | ७३ | दैव्यावध्वर्यूऽआ गतꣳ | ,, | प्रस्कण्वः | सूर्यः | ,, |
| | | तं प्रत्नथा० [ अ.७।१२ ] | | | | |
| | | अयं वेनः [ अ.७।१६ ] | | | | |
| | ७४ | तिरश्चीनो विततो रश्मिरेषा० | ,, | परमेष्ठी प्रजापतिः | भाववृत्तं(विश्वेदेवाः) | त्रिष्टुप् |
| | ७५ | आ रोदसीऽअपृणदा० | ,, | विश्वामित्रः | वैश्वानरः | जगती |
| | ७६ | उक्थेभिर्वृत्रहन्तमा० | ,, | वसिष्ठः | इन्द्राग्नी | गायत्री |
| | ७७ | उप नः सूनवो गिरः० | ,, | सुहोत्रः | विश्वेदेवाः | ,, |
| | ७८ | ब्रह्माणि मे मतयः० | ,, | अगस्त्यः | इन्द्रामरुतौ | त्रिष्टुप् |

तदिदाथर्वणो बृहद्दिव, इमा उ त्वा द्वे बृहत्यौ मेधातिथिरयꣳ सहस्रं मेधातिथिः सतोबृहतीम्[ अनुक्तं गायत्रं त्रैष्टुभम् ] ॥ २२ ॥ [ य० अ० ३३ मं० ७०--८४ ]

आनस्त्रयोदर्शर्चः पुरोरुग्गणश्चतुर्ऋचं प्रतीकचोदितं चानो वायव्यां जमदग्निरिन्द्रवायू सुसन्दृशैन्द्रवायव्यां तापस, ऋधगित्था मैत्रावरुणीं जमदग्निरा यातमाश्विनीं वसिष्ठः, प्रैतु वैश्वदेवीं कण्वश्चन्द्रमा अप्स्वैन्द्रीमाहुतिपरिणामवादिनीं त्रित आप्त्यो, देवं देवं वो मनुर्वैवस्वतो वैश्वदेवीं, दिवि पृष्टो मेध ऐन्द्र, इन्द्राग्नी अपात्सुहोत्रो, देवासो हि मनुरपाधमद् द्वे नृमेधोऽस्येन्मेधातिथिर्दशम्येकादश्यन्त्या सतोबृहत्यः, शेषा बृहत्यः शेषा बृहत्यः ॥ २३ ॥ [ य० अ०३३ मं० ८५--९७ ]

इति० संहितायां त्रयस्त्रिंशोऽध्यायः ।

## इति सर्वानुक्रमसूत्रे तृतीयोऽध्यायः ।

## अथ सर्वानुक्रमसूत्रे चतुर्थोऽध्यायः ।

यज्जाग्रतः षडृचं मानसं त्रैष्टुभꣳ शिवसङ्कल्पः, पितुं नूष्णिहमगस्त्योऽन्नस्तुतिमन्वि-

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| | ७९ अनुत्तमा ते मघवन्नकिर्नु० | आदित्ययाज्ञवल्क्यौ, अगस्त्यः | | इन्द्रामरुतौ | त्रिष्टुप् |
| | ८० तदिदास भुवनेषु ज्येष्ठं० | ,, | आथर्वणो बृहद्दिवः | महेन्द्रः | ,, |
| | ८१–८२ इमाऽउ त्वा०॥८१॥–यस्यायं विश्व०॥८२॥ | ,, | मेधातिथिः | आदित्यः | बृहती |
| | ८३ अयꣳ सहस्रमृषिभिः० | ,, | ,, | ,, | सतोबृहती |
| [अ.३३।६९] | ८४ अदब्धेभिः सविताः० | ,, | भरद्वाजः | सविता | जगती |
| | ८५ आ नो यज्ञं दिविस्पृशं० | ,, | जमदग्निः | वायुः | बृहती |
| | ८६ इन्द्रवायू सुसन्दृशा० | ,, | तापसः | इन्द्रवायू | ,, |
| | ८७ ऋधगित्था स मर्त्यः० | ,, | जमदग्निः | मित्रावरुणौ | ,, |
| | ८८ आ यातमुप भूषतं० | ,, | वसिष्ठः | अश्विनौ | ,, |
| | ८९ प्रैतु ब्रह्मणस्पतिः० | ,, | कण्वः | विश्वेदेवाः | ,, |
| | ९० चन्द्रमाऽअप्स्वन्तरा० | ,, | त्रितः आप्त्यः | इन्द्रः | ,, |
| | ९१ देवं-देवं वोऽवसे० | ,, | मनुः वैवस्वतः | विश्वेदेवाः | ,, |
| | ९२ दिवि पृष्टोऽअरोचत० | ,, | मेधाः ऐन्द्रः | वैश्वानरः | ,, |
| | ९३ इन्द्राग्नीऽअपादियं० | ,, | सुहोत्रः | इन्द्राग्नी | ,, |
| | ९४ देवासो हि ष्मा मनवे० | ,, | मनुः | विश्वेदेवाः | सतोबृहती |
| | ९५ अपाधमदभिशस्तीरशस्तिहा० | ,, | नृमेधः | इन्द्रः(मरुत्वान्) | ,, |
| | ९६ प्र वऽइन्द्राय बृहते० | ,, | ,, | ,, | बृहती |
| | ९७ अस्येदिन्द्रो वावृधे वृष्ण्यꣳ० | ,, | मेधातिथिः | महेन्द्रः | सतोबृहती |

इति सर्वानुक्रमसूत्रे तृतीयोऽध्यायः ।

चतुर्ऋचमानुष्टुभं, द्वयोरनुमतिर्द्वयोः सिनीवालीसरस्वत्यौ, सिनीवालि पृथुष्टुके द्वे गृत्समदस्त्वमग्ने द्वे आग्नेय्यौ जगत्यौ हिरण्यस्तूप आङ्गिरस, उत्तानायां द्वे देवश्रवा देववातश्च भारतावाद्या त्रिष्टुब्द्वितीयानुष्टुप्प्र मन्महे नोधा द्व्यृचमैन्द्रं त्रिष्टुभमिच्छन्ति त्वा द्व्यृचमैन्द्रं त्रैष्टुभमेव देवश्रवा देववातश्च भारतौ ॥ १ ॥ [ य० अ०३४ मं १–१९ ]

अषाढं युत्सु गोतमश्चतुर्ऋचं त्रैष्टुभꣳ सौम्यमष्टौ व्यख्यचतुर्ऋचं त्रैष्टुभꣳ सावित्रमाङ्गिरसो हिरण्यस्तूपो द्वितीया जगत्युभा पिबतमाश्विनं तृचमुभा पिबतं प्रस्कण्वो गायत्रीमग्नस्वतीमश्विना त्रिष्टुभौ कुत्स, आ रात्रि पथ्याबृहतीꣳ रात्रिदेवत्यां कशिपा भरद्वाज-

## अथ सर्वानुक्रमसूत्रे चतुर्थोऽध्यायः ।

अथ० संहितायां चतुस्त्रिंशोऽध्यायः ।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| १–६ यज्जाग्रतो०॥१॥– सुषारथिरश्वानिव०॥६॥ | शिवसंकल्पः, आदित्ययाज्ञवल्क्यौ | मनः | | त्रिष्टुप् |
| ७ पितुं नु स्तोषं महो० | अगस्त्यः | ,, | अन्नम् | उष्णिक् |
| ८ अन्विदनुमते त्वं मन्यासै० | | ,, | अनुमतिः | अनुष्टुप् |
| ९ अनु नोऽद्यानुमति० | | ,, | ,, | ,, |
| १० सिनीवालि पृथुष्टुके० | गृत्समदः | ,, | सिनीवाली | ,, |
| ११ पञ्च नद्यः सरस्वती० | ,, | ,, | सरस्वती | ,, |
| १२ त्वमग्ने प्रथमोऽअङ्गिरा० | हिरण्यस्तूपः आङ्गिरसः | ,, | अग्निः | जगती |
| १३ त्वं नोऽअग्ने तव देव० | ,, ,, | ,, | ,, | ,, |
| १४ उत्तानायामवभरा० | देवश्रवा देववातश्च भारतौ | ,, | ,, | त्रिष्टुप् |
| १५ इडायास्त्वा पदे वयं० | ,, ,, | ,, | ,, | अनुष्टुप् |
| १६ प्र मन्महे शवसानाय शूष० | नोधाः | ,, | इन्द्रः | त्रिष्टुप् |
| १७ प्र वो महे महि नमो० | ,, | ,, | ,, | ,, |
| १८ इच्छन्ति त्वा सोम्यासः० | देवश्रवा देववातश्च भारतौ | ,, | ,, | ,, |
| १९ न ते दूरे परमा० | ,, ,, | | ,, | ,, |
| २० अषाढं युत्सु पृतनासु० | गोतमः | ,, | सोमः | ,, |
| २१ सोमो धेनुꣳ सोमो० | ,, | ,, | ,, | ,, |
| २२ त्वमिमाऽओषधीः सोम० | ,, | ,, | ,, | ,, |
| २३ देवेन नो मनसा देव सोम० | ,, | ,, | ,, | ,, |
| २४ अष्टौ व्यख्यत्ककुभः | हिरण्यस्तूपःआंगिरसः | ,, | सविता | ,, |
| २५ हिरण्यपाणिः सविता० | ,, ,, | ,, | ,, | जगती |
| २६ हिरण्यहस्तोऽअसुरः सुनीथः० | ,, ,, | ,, | ,, | त्रिष्टुप् |
| २७ ये ते पन्थाः सवितः० | ,, ,, | ,, | ,, | ,, |
| २८ उभा पिबतमश्विनोभा० | प्रस्कण्वः | ,, | अश्विनौ | गायत्री |
| २९–३० अग्नस्वती०॥२९॥–द्युभिरक्तुभिः०॥३०॥ | कुत्सः | ,, | ,, | त्रिष्टुप् |

दुहितोषस्तदुषस्यां परोष्णिहं गोतमः, प्रातरग्निं वसिष्ठः सप्तर्चमाद्या जगती बहुदेवत्या, पञ्च भगदेवत्यास्त्रिष्टुभोऽन्त्योषस्याः ॥ २ ॥ [ य० अ० ३४ मं० २०–४० ]

पूषन्तव सुहोत्रः, पथस्पथः परिपतिमृजिश्वैते पौष्ण्यौ गायत्रीत्रिष्टुभौ, त्रीणि पदा वैष्णव्यौ गायत्र्यौ मेधातिथिर्घृतवती भुवनानां भरद्वाजो द्यावापृथिव्यां जगतीं, ये नो लिङ्गोक्तदेवतां त्रिष्टुभं विहव्य, आ नासत्या हिरण्यस्तूप आश्विनीमेष वो मारुतीं त्रिष्टुभमगस्त्यः, सहस्तोमा ऋषिसृष्टिप्रतिपादिकां त्रिष्टुभं यज्ञः प्राजापत्य, आयुष्यं वर्चस्यं तृचं दक्ष उष्णिक्शक्करीत्रिष्टुभो हिरण्यस्तुतिरुत न ऋजिश्वा बहुदेवत्यां त्रिष्टुभमिमा गिरः कूर्मो गार्त्समद आदित्यदेवत्यां त्रिष्टुभꣳ, सप्त ऋषयोऽध्यात्मवादिनी जगत्युत्तिष्ठ तृचो ब्राह्मणस्पत्य आद्ये बृहत्यौ कण्वो घौरोऽन्त्यां त्रिष्टुभं गृत्समदो, य इमा चतुर्ऋचं

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| [अ.३३।४३] | ३१ | आ कृष्णेन रजसा० | हिरण्यस्तूपः आंगिरसः | आदित्ययाज्ञवल्क्यौ | सूर्यः | त्रिष्टुप् |
| | ३२ | आ रात्रि पार्थिवꣳ रजः० | कशिपा भरद्वाजदुहिता | ,, | रात्रिः | पथ्याबृहती |
| | ३३ | उषस्तच्चित्रमा भरा० | गोतमः | ,, | उषाः | परोष्णिक् |
| | ३४ | प्रातरग्निं प्रातरिन्द्रꣳ० | वसिष्ठः | ,, | बहुदेवताः(अग्न्यादयः) | जगती |
| | ३५–३९ | प्रातर्जितं०॥३५॥–समध्वरा०॥३९॥ | ,, | ,, | भगः | त्रिष्टुप् |
| | ४० | अश्वावतीर्गोमतीर्नऽउषासो० | ,, | ,, | उषाः | ,, |
| | ४१ | पूषन्तव व्रते वयं० | सुहोत्रः | ,, | पूषा | गायत्री |
| | ४२ | पथस्पथः परिपतिं० | ऋजिष्वा | ,, | ,, | त्रिष्टुप् |
| | ४३ | त्रीणि पदा वि चक्रमे० | मेधातिथिः | ,, | विष्णुः | गायत्री |
| | ४४ | तद्विप्रासो विपन्यवो० | ,, | ,, | ,, | ,, |
| | ४५ | घृतवती भुवनानामभि० | भरद्वाजः | ,, | द्यावापृथिवी | जगती |
| | ४६ | ये नः सपत्नाऽअप ते० | विहव्यः | ,, | लिङ्गोक्ता(इन्द्राग्न्यादयः) | त्रिष्टुप् |
| | ४७ | आ नासत्या त्रिभिरेका० | हिरण्यस्तूपः | ,, | अश्विनौ | जगती |
| | ४८ | एष व स्तोमो मरुत० | अगस्त्यः | ,, | मरुतः | त्रिष्टुप् |
| | ४९ | सहस्तोमाः सहच्छन्दस० | यज्ञः प्राजापत्यः | ,, | (ऋषिसृष्टिः) | ,, |
| | ५० | आयुष्यं वर्चस्यꣳ० | दक्षः | ,, | हिरण्यम् | उष्णिक् |
| | ५१ | न तद्रक्षाꣳसि न पिशाचा० | ,, | ,, | ,, | शक्करी |
| | ५२ | यदाबध्नन्दाक्षायणा० | ,, | ,, | ,, | त्रिष्टुप् |
| | ५३ | उत नोऽहिर्बुध्न्यः शृणोत्वज० | ऋजिश्वा | ,, | बहुदेवताः(पृथिव्यादयः) | ,, |
| | ५४ | इमा गिरऽआदित्येभ्यो० | कूर्मः गार्त्समदः | ,, | आदित्याः | ,, |
| | ५५ | सप्तऽऋषयः प्रतिहिताः० | | ,, | (सप्तऋषयः) | जगती |
| | ५६ | उतिष्ठ ब्रह्मणस्पते० | कण्वो घौरः | ,, | ब्रह्मणस्पतिः | बृहती |
| | ५७ | प्र नूनं ब्रह्मणस्पति० | ,, ,, | ,, | ,, | ,, |
| | ५८ | ब्रह्मणस्पते त्वमस्य यन्ता० | गृत्समदः | ,, | ,, | त्रिष्टुप् |

प्रतीकोक्तम् ॥ ३ ॥ [ य० अ० ३४ मं० ४१–५८ ]

इति० संहितायां चतुस्त्रिंशोऽध्यायः ।

अपेतोऽध्यायः पित्र्य आदित्यस्य देवानां वाद्या गायत्री परं यजुः, सविता ते गायत्री, वायुः पुनातु चत्वारि लिङ्गोक्तानि, सविता ते गायत्री, परं मृत्योः सङ्कसुकस्त्रिष्टुभं मृत्युदेवत्याᳬ, शं वातोऽनुष्टुब्बृहत्यौ वैश्वदेव्यावश्मन्वतीं सुचीकस्त्रिष्टुभं वैश्वदेवीमपाघं लिङ्गोक्तदेवतामनुष्टुभᳬ शुनःशेपो दुःस्वप्ननाशनीमनड्वाहमानडुह्यनुष्टुबिमं जीवेभ्यः सङ्कसुको मृत्युदेवत्यां त्रिष्टुभमायुष्मानग्न आग्नेयीं त्रिष्टुभं वैखानसः, परीमेऽनुष्टुभमैन्द्रीं भारद्वाजः शिरिम्बिठः, क्रव्यादमग्निं त्रिष्टुभमाग्नेयीं दमनो, वह वपां जातवेदसी त्रिष्टुप्,

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| [ अ.१७।१७ ] | यऽइमा विश्वा भुवना० | विश्वकर्मा भौवनः | आदित्ययाज्ञवल्क्यौ | विश्वकर्मा | त्रिष्टुप् |
| [ अ.१७।२६ ] | विश्वकर्मा० | ,, | ,, | ,, | ,, |
| [ अ.१७।२७ ] | यो नः पिता० | ,, | ,, | ,, | ,, |
| [ अ.११।८३ ] | अन्नपतेऽन्नस्य नो देहि० | प्रजापतिः साध्याः | ,, | अग्निः | उपरिष्टाद्बृहती |

अथ० संहितायां पञ्चत्रिंशोऽध्यायः ।

[ पित्र्योऽध्यायः ]

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| | १ अपेतो यन्तु पणयो० | आदित्यः, देवाः वा | | पितरः | गायत्री |
| | २ सविता ते शरीरेभ्यः० | ,, | ,, | ,, | ,, |
| | ३ वायुः पुनातु सविता० | ,, | ,, | लिङ्गोक्ता(वाय्वादयः) | |
| [अ.१२।७९] | ४ अश्वत्थे वो निषदनं० | ,, | ,, आथर्वणो भिषक् | ओषधिः | अनुष्टुप् |
| | ५ सविता ते शरीराणि० | ,, | ,, | (सविता) | गायत्री |
| | ६ प्रजापतौ त्वा देवतायामुपो० | ,, | ,, | प्रजापतिः | उष्णिक् |
| | ७ परं मृत्योऽअनु परेहि पन्थां० | ,, | ,, सङ्कसुकः | मृत्युः | त्रिष्टुप् |
| | ८ शं वातः शᳬहि ते घृणिः० | ,, | ,, | विश्वेदेवाः | अनुष्टुप् |
| | ९ कल्पन्तां ते दिशस्तुभ्य० | ,, | ,, | ,, | बृहती |
| | १० अश्मन्वती रीयते सᳬ० | ,, | ,, सुचीकः | ,, | त्रिष्टुप् |
| | ११ अपाघमप किल्बिष० | ,, | ,, शुनःशेपः | लिङ्गोक्ता | अनुष्टुप् |
| [ अ.६।२२ ] | १२ सुमित्रिया नऽआपऽओषधयः० | ,, | ,, प्रजापतिः | वरुणः | |
| | १३ अनड्वाहमन्वारभामहे० | ,, | ,, | अनडुत | ,, |
| [अ.२०।२१] | १४ उद्वयं तमसस्परि० | ,, | ,, प्रस्कण्वः | सूर्यः | ,, |
| | १५ इमं जीवेभ्यः परिधिं दधामि० | ,, | ,, सङ्कसुकः | मृत्युः | त्रिष्टुप् |
| [अ.१९।३८] | १६ अग्नऽआयूᳬषि पवस० | ,, | ,,प्रजापतिः वैखानसः | पवमानः अग्निः | गायत्री |
| | १७ आयुष्मानग्ने हविषा वृधानो० | ,, | ,, वैखानसः | अग्निः | त्रिष्टुप् |
| | १८ परीमे गामनेषत० | ,, | ,,भारद्वाजःशिरिम्बिठः | इन्द्रः | अनुष्टुप् |
| | १९ क्रव्यादमग्निं प्र हिणोमि दूरं० | ,, | ,, दमनः | अग्निः | त्रिष्टुप् |
| | २० वह वपां जातवेदः पितृभ्यो० | ,, | ,, | जातवेदाः | ,, |

स्योना पृथिवि मेधातिथिः पार्थिवीं गायत्रीमस्मात्त्वमाग्नेयी गायत्र्यनिरुक्ता ॥ ४ ॥
[ य० अ० ३५ मं० १–२२ ]

इति० संहितायां पञ्चत्रिंशोऽध्यायः ।

ऋचं वाचं पञ्चाध्यायीं दध्यङ्ङाथर्वणो ददर्शाग्निकाश्वमेधिकवर्जमाद्योऽध्यायः शान्त्यर्थो वैश्वदेव, आद्यानि यजूंषि, यन्मे बार्हस्पत्या पंक्तिः, कया त्वमैन्द्र्यनिरुक्ता गायत्रीन्द्रो विश्वस्य विराड् द्विपदा, शं नो द्वे अनुष्टुभावहानि द्विपदा गायत्री, शं न इन्द्राग्नी त्रिष्टुब्गायत्र्यावन्त्याशीर्योः शान्तिर्यजूंषि नमस्ते अस्त्वनुष्टुभौ, तच्चक्षुः पुर

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | २१ | स्योना पृथिवि नो भवा० आदित्यः देवाः वा मेधातिथिः | | | पृथिवी | गायत्री |
| | २२ | अस्मात्त्वमधि जातोऽसि० | ,, | ,, | अग्निः | अनिरुक्ता गायत्री |

अथ० संहितायां षट्त्रिंशोऽध्यायः ।

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | १ | ऋचं वाचं प्रपद्ये० | दध्यङ्ङाथर्वणः | | विश्वेदेवाः | |
| | २ | यन्मे छिद्रं चक्षुषो० | ,, | | बृहस्पतिः | पंक्तिः |
| [ अ.३ मं.३५] | ३ | भूर्भुवः स्वः तत्सवितु० | ,, | विश्वामित्रः | सविता | गायत्री |
| [ अ.२७।३९ ] | ४ | कया नश्चित्र आ ० | ,, | वामदेवः | इन्द्रः | ,, |
| [ अ.२७।४० ] | ५ | कस्त्वा सत्यो मदानां० | ,, | ,, | इन्द्रः | ,, |
| [ अ.२७।४१ ] | ६ | अभी षु णः सखीना० | ,, | ,, | ,, | ,, |
| | ७ | कया त्वं नऽऊत्या० | ,, | | इन्द्रः | अनिरुक्ता गायत्री |
| | ८ | इन्द्रो विश्वस्य राजति | ,, | | ,, | द्विपदा विराट् |
| | ९ | शं नो मित्रः शं वरुणः० | ,, | | (मित्रवरुणादयः) | अनुष्टुप् |
| | १० | शं नो वातः पवतांॅ० | ,, | | ,, | ,, |
| | ११ | अहानि शं भवन्तु नः० | ,, | | (अहानि रात्रयश्च) | द्विपदा गायत्री |
| | | शं नऽइन्द्राग्नी भवता० | ,, | | (इन्द्राग्न्यादयः) | त्रिष्टुप् |
| | १२ | शं नो देवीरभिष्टय० | ,, | | आपः | गायत्री |
| [अ.३५।२१] | १३ | स्योना पृथिवि नो० | ,, | मेधातिथिः | पृथिवी | ,, |
| [अ.११।५०] | १४ | आपो हि ष्ठा मयोभुव० | ,, | सिन्धुद्वीपः | आपः | ,, |
| [अ.११।५१] | १५ | यो वः शिवतमो रस० | ,, | ,, | ,, | ,, |
| [अ.११।५२] | १६ | तस्माऽअरङ्गमाम वो० | ,, | ,, | ,, | ,, |
| | १७ | द्यौः शान्तिरन्तरिक्षंॅ० | ,, | | (लिङ्गोक्ताः) | |
| | १८ | दृते दृंह मा मित्रस्य० | ,, | | (महावीरः) | |
| | १९ | दृते दृंह मा । ज्योक्ते० | ,, | | ,, | |
| [अ.१७।११] | २० | नमस्ते हरसे शोचिषे० | ,, | ऋषिसुता लोपामुद्रा | अग्निः | बृहती |
| | २१ | नमस्तेऽअस्तु विद्युते० | ,, | | (विद्युत्स्तनयित्नुरूपो भगवान् ) | अनुष्टुप् |
| | २२ | यतो यतः समीहसे० | ,, | | ,, | ,, |

उष्णिक् सौरी ॥ ५ ॥ [ य० अ० ३५ मं० १-२४ ]

इति० संहितायां षट्त्रिंशोऽध्यायः ।

आ ददे नारिरस्यग्निर्दैवतं, देवी द्यावापृथिव्यं, देव्यो वम्र्यो वल्मीकवपेयत्यग्रे वराहविहतमिन्द्रस्यौज आदाराः, प्रैतु मखस्याश्वस्यर्जवे यमाय देवस्त्वार्चिरसि घर्मदेवत्यानि, यो घर्मः स आदित्यो य एष तपत्यनाधृष्टा पुरस्तात्सप्त पार्थिवानि यजमानाशीर्मधु प्राणदेवत्यानि, गर्भो देवानामवकाशा मा मा हिꣳसीरित्येतदन्ता घर्मदेवत्या, धर्ता दिव उर्ध्वबृहत्यपश्यं गोपां त्रिष्टुभं दीर्घतमा, हृदे त्वा परोष्णिक्त्वष्टृमन्तः पत्न्याशीरहः केतुना यजुषी घर्मदेवत्ये ॥ ६ ॥ [ य० अ० ३७ मं० १-२१ ]

इति० संहितायां सप्तत्रिंशोऽध्यायः ।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| [ अ.६।२२ ] | २३ सुमित्रिया नऽआप० | दध्यङ्ङाथर्वणः प्रजापतिः | आपः | |
| | २४ तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्तात्० | ,, | सूर्यः | पुरऽउष्णिक् |

अथ० संहितायां सप्तत्रिंशोऽध्यायः ।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| [ अ. १।१० ] | १ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवे० | दध्यङ्आथर्वणः | सविता | |
| | आ ददे नारिरसि । | ,, | अग्निः | |
| [ अ. ५।१४ ] | २ युञ्जतेमनऽउत युञ्जते धियो० | ,, श्यावाश्वः | सविता | जगती |
| | ३ देवी द्यावापृथिवी मखस्य० | ,, | द्यावापृथिवी | |
| | ४ देव्यो वम्र्यो भूतस्य प्रथमजा० | ,, | वल्मीकवपा | |
| | ५ इयत्यग्रऽआसीन्मखस्य तेऽद्य० | ,, | वराहविहतम् | |
| | ६ इन्द्रस्यौज स्थ मखस्य० | ,, | आदाराः | |
| | ७-११ प्रैतु ब्रह्मण०॥७॥- यमाय त्वा०॥११॥ | ,, | घर्मः(आदित्यः) | बृहती |
| | १२ अनाधृष्टा पुरस्तादग्ने० | ,, | पृथिवी | |
| | १३ स्वाहा मरुद्भिः परि श्रीयस्व० | ,, | (घर्मः) | |
| | मधु मधु मधु० | ,, | प्राणाः | |
| | १४ गर्भो देवानां पिता मतीनां० | ,, | घर्मः | |
| | १५ समग्निरग्निना गत० | ,, | ,, | |
| | १६ धर्ता दिवो वि भाति तपस० | ,, | ,, | ऊर्ध्वबृहती |
| | १७ अपश्यं गोपामनिपद्यमान० | ,, दीर्घतमाः | ,, | त्रिष्टुप् |
| | १८ विश्वासां भुवां पते० | ,, | ,, | |
| | १९ हृदे त्वा मनसे त्वा० | ,, | ,, | परोष्णिक् |
| | २० पिता नोऽसि पिता नो बोधि० | ,, | ,, | |
| | त्वष्टृमन्तस्त्वा सपेम पुत्रान्० | ,, | ,, पत्न्याशीः | ऋचां त्रिष्टुप् |
| | २१ अहः केतुना जुषताꣳ० | ,, | ,, | |

आददेऽदित्यै रज्जुरिड एहि गौर्यस्ते त्रिष्टुभं दीर्घतमा, इन्द्राश्विना वैश्वदेवानि, समुद्राय त्वा वातनामानि, स्वाहा घर्माय घर्मदेवत्ये, विश्वा आशा आश्विन्यनुष्टुप्, दिवि धा घर्मदेवत्यमश्विना घर्ममुष्णिगपातां ककुबमेन्यस्मे खरः, स्वाहा पूष्णे सप्त लिङ्गोक्तदेवतानि, स्वाहा सं पयोदेवत्यं, मधु हुतं घर्मोऽभीमं गायत्रीबृहत्यावनवसाने अतिशक्करी

अथ० संहितायां अष्टत्रिंशोऽध्यायः ।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| [ अ.१।१० ] | १ देवस्य त्वा सवितुः० | दध्यङ् आथर्वणः | सविता | |
| | आददेऽदित्यै रास्नासि । | ,, | रज्जुः | |
| | २ इडऽएह्यदितऽएहि० | ,, | गौः | |
| | ३ अदित्यै रास्नासि० | ,, | रज्जुः | |
| | पूषासि० | ,, | (वत्सः) | |
| | ४ अश्विभ्यां पिन्वस्व० | ,, | (लिङ्गोक्ता) | |
| | स्वाहेन्द्रवत्० | ,, | (विप्रुषः) | |
| | ५ यस्ते स्तनः शशयो यो० | ,, दीर्घतमाः | (वाक्) | त्रिष्टुप् |
| | ६ गायत्रं छन्दोऽसि त्रैष्टुभं० | ,, | (परीशासौ) | |
| | द्यावापृथिवीभ्यां त्वा | ,, | (महावीरः) | |
| | अन्तरिक्षेणोपयच्छामि । | ,, | (घर्मः) | |
| | इन्द्राश्विना मधुनः सारघस्य० | ,, | विश्वेदेवाः | |
| | ७ समुद्राय त्वा वाताय स्वाहा० | ,, | वातनामानि | |
| | ८ इन्द्राय त्वा वसुमते० | ,, | ,, | |
| | ९ यमाय त्वाङ्गिरस्वते० | ,, | ,, | |
| | स्वाहा घर्माय० | ,, | घर्मः | |
| | १० विश्वाऽआशा दक्षिणसद्० | ,, | अश्विनौ | अनुष्टुप् |
| | ११ दिवि धाऽइमं यज्ञ० | ,, | घर्मः | |
| | १२ अश्विना घर्मं पातं० | ,, | (अश्विन्यादयः) | उष्णिक् |
| | १३ अपातामश्विना घर्मं० | ,, | (अश्विनौ) | ककुप् |
| | १४ इषे पिन्वस्वोर्जे पिन्वस्व० | ,, | (घर्मः) | |
| | अमेन्यस्मे नृम्णानि धारय० | ,, | खरः(घर्मः) | |
| | १५ स्वाहा पूष्णे शरसे स्वाहा० | ,, | लिङ्गोक्ता(पूषादयः) | |
| | १६ स्वाहा रुद्राय रुद्रहूतये० | ,, | लिङ्गोक्ता(रुद्रादयः) | |
| | स्वाहा सं ज्योतिषा ज्योतिः | ,, | पयः | |
| [ अ. ३७।२१ ] | अहः केतुना जुषताꣳ० | ,, | घर्मः | |
| | मधु हुतमिन्द्रतमे० | ,, | ,, | |
| | १७ अभीमं महिमा दिवं० | ,, | अग्निः | गायत्रीबृहत्यौ अनवसाने, त्र्यवसाना अतिशक्करी वा |

वाग्नेयी समस्ता त्र्यवसाना, या ते घर्मः, क्षत्रस्य बृहती, चतुःस्रक्तिर्महाबृहती, घर्मैतद-नुष्टुबचिक्रदत्परोष्णिग्यावती द्यावापृथिवी दधिघर्मो, मयि त्यत्पंक्तिर्यजमानाशीः, पयसो रेतो गायत्र्यनवसाना, त्विषः संवृग्दधिघर्मोऽनुक्तं घर्मदैवतम् ॥ ७ ॥ [ य० अ० ३८ मं० १–२८ ]

इति० संहितायां अष्टत्रिंशोऽध्यायः ।

स्वाहा प्राणेभ्यो मान्त्रवर्णिक्यो देवता, मनसः काममनुष्टुब् यजमानाशीः श्रीर्देवता, प्रजापतिः संभ्रियमाणो यथाकालं प्रायश्चित्तदेवताः, सविता प्रथमेऽहन्प्रत्यहं क्रमेणोग्रश्च मारुती गायत्री, विमुखाख्यो मन्त्रोऽग्नौ विनियुक्तस्तस्मादाग्निक एवास्य ऋषिः परमेष्ठी प्राजापत्यो वाग्निᳪं हृदयेनाश्वमेधिकानि त्रीणि तत्रत्य एव ऋषिर्लोमभ्यः स्वाहेति

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| | १८ | या ते घर्म दिव्या शुक् | ,, | घर्मः | |
| | १९ | क्षत्रस्य त्वा परस्पाय० | ,, | ,, | बृहती |
| | २० | चतुः स्रक्तिर्नाभिर्ऋतस्य० | ,, | ,, | महाबृहती |
| | २१ | घर्मैतत्ते पुरीषं० | ,, | ,, | अनुष्टुप् |
| | २२ | अचिक्रदद्वृषा हरिर्महान्० | ,, | ,, | परोष्णिक् |
| [ अ. ६।२२] | २३ | सुमित्रिया नऽआपऽओषधयः० | ,, | आपः | |
| [अ.२०।२१] | २४ | उद्वयं तमसस्परि० | ,, प्रस्कण्वः | सूर्यः | अनुष्टुप् |
| [अ.२०।२३] | २५ | एधोऽस्येधिषीमहि० | ,, | समित् | |
| | २६ | यावती द्यावापृथिवी० | ,, | दधिघर्मः(इन्द्रः) | |
| | २७ | मयि त्यदिन्द्रियं बृहत्० | ,, | यजमानाशीः(घर्मः) | पंक्तिः |
| | २८ | पयसो रेतऽआभृतं० | ,, | ,, | गायत्री अनवसाना |
| | | त्विषः संवृक् क्रत्वे दक्षस्य० | ,, | दधिघर्मः | |

अथ० संहितायां ऊनचत्वारिंशोऽध्यायः ।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| १ | स्वाहा प्राणेभ्यः साधिपति० | दध्यङ्आथर्वण | मान्त्रवर्णिक्यः | |
| २ | दिग्भ्यः स्वाहा चन्द्राय स्वाहा० | ,, | ,, | |
| ३ | वाचे स्वाहा प्राणाय स्वाहा० | ,, | ,, | |
| ४ | मनसः काममाकूतिं० | ,, | यजमानाशीः श्रीः | अनुष्टुप् |
| ५ | प्रजापतिः संभ्रियमाणः० | ,, | प्रायश्चित्तदेवताः ( प्रजापत्यादयः ) | |
| ६ | सविता प्रथमेऽहन्० | ,, | (सवित्रादयः) | |
| ७ | उग्रश्च भीमश्च० | ,, प्रजापतिः साध्याः वा परमेष्ठी प्राजापत्यः वा | मरुतः | गायत्री |
| ८ | अग्निᳪं हृदयेन० | ,, प्रजापतिः | | |
| ९ | उग्रं लोहितेन० | ,, ,, | | |

प्रायश्चित्ताहुतयो द्विचत्वारिंशत् ॥ ८ ॥ [ य० अ० ३९ मं० १–१३ ]

इति० संहितायामेकोनचत्वारिंशोऽध्यायः ।

ईशावास्यमात्मदेवत्य, मानुष्टुभोऽध्याय, अनेजदेकं त्रिष्टुप्, स परि जगती, वायुरनिलं यजुषी, ओ३मिति परमाक्षरस्य योगिनामालम्बभूतस्य परस्य ब्रह्मणः प्रणवाख्यस्यास्थूलादिगुणयुक्तस्य ब्रह्मा ऋषिश्छन्दो गायत्रं, परमात्मा देवता, ब्रह्मारम्भे विरामे च यागहोमादिषु शान्तिपुष्टिकर्मसु चान्येष्वपि काम्यनैमित्तिकादिषु सर्वेषु विनियोगोऽस्य, क्रतो त्रिभिर्यजुर्भिरन्ते यज्ञान्योगी स्मारयत्यग्ने नयान्तनमस्कारोक्तिर्हिरण्मयेनादित्योपासनमो३मिति नामनिर्देशो ब्रह्मणः खं ब्रह्मेत्याकाशरूपमन्ते ब्रह्म ध्यायेत् ॥ ९ ॥ [ य० अ० ४० मं० १–१७ ]

इति यजुर्वेदवाजसनेयिसंहितायां चत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४० ॥

---

| | | | |
|---|---|---|---|
| १० लोमभ्यः स्वाहा० | दध्यङ् आथर्वणः, | प्रजापतिः | |
| ११ आयासाय स्वाहा० | ,, | ,, | |
| १२ तपसे स्वाहा० | ,, | ,, | |
| १३ यमाय स्वाहाऽन्तकाय स्वाहा० | ,, | ,, | |

अथ० चत्वारिंशोऽध्यायः ।

| | | | |
|---|---|---|---|
| १–३ ईशावास्य०॥१॥– असुर्या नाम०॥३॥ | दध्यङ्आथर्वणः | आत्मा | अनुष्टुप् |
| ४ अनेजदेकं मनसो० | ,, | ,, | त्रिष्टुप् |
| ५–७तदेजति०॥५॥— यस्मिन्त्सर्वाणि० ॥७॥ | ,, | ,, | अनुष्टुप् |
| ८ स पर्यगाच्छुक्रमकाय० | ,, | ,, | जगती |
| ९–१४ अन्धं तमः०॥९॥– विद्यां चाविद्यां०॥१४॥ | ,, | ,, | अनुष्टुप् |
| १५ वायुरनिलममृत० | ,, | ,, | |
| १६ ओ३म् | ,, ब्रह्मा | परमात्मा | गायत्री |
| क्रतो स्मर क्लिबे स्मर० | ,, | आत्मा | |
| [ अ. ५।३६ ] १७ अग्ने नय सुपथा रायेऽअस्मान्० | ,, अगस्त्यः | अग्निः | त्रिष्टुप् |
| १८ हिरण्मयेन पात्रेण० | ,, | आत्मा | |
| ॐ खं ब्रह्म । | ,, | ,, | |

इति यजुर्वेद-वाजसनेयि-संहितायां
चत्वारिंशोऽध्यायः समाप्तः ।

अथातश्छन्दोदेवता– गायत्र्या अग्निरुष्णिहः सवितानुष्टुभः सोमो, बृहत्या बृहस्पतिः, पंक्तेर्वरुणस्त्रिष्टुभ इन्द्रो, जगत्या विश्वेदेवा, विराजो मित्रः, स्वराजोऽरुणोऽतिच्छन्दसः प्रजापतिर्विच्छन्दसो वायुर्द्विपदायाः पुरुष, एकपदाया ब्रह्मा, सर्वा ऋच आग्नेय्यः, सर्वाणि यजूꣳषि वायव्यानि, सर्वाणि सामानि सौराणि सर्वाणि ब्राह्मणानि च, स्वाहाकारस्याग्निर्वषट्कारस्य विश्वेदेवाः, कर्मारम्भे मन्त्राणां देवता वेदितव्याः, संन्यस्य मनसि देवतां ततो हविर्हूयते, देवतामविज्ञाय यो जुहोति देवास्तस्य हविर्न जुषन्ते, स्वाध्यायमपि योऽधीते मन्त्रदेवतज्ञः सोऽमुष्मिँल्लोके देवैरपीज्यते––

तस्माच्च देवता वेद्या मन्त्रे मन्त्रे प्रयत्नतः ।
मन्त्राणां देवताज्ञानान्मन्त्रार्थमधिगच्छति ॥

मन्त्रार्थज्ञानात्तु विधूतपाप्मा नाकमभ्येति ।

नहि कश्चिदविज्ञाय याथातथ्येन देवताः ।
श्रौतानां कर्मणां विप्रः स्मार्तानां चाश्नुते फलम् ॥ १० ॥

अनादिष्टमध्वरादौ सवान्तकर्मणि परिभाषितं मन्त्रगणं वक्ष्यामः-सर्वमाग्नेयं गायत्रं गौतमीयꣳ, सर्वꣳ सावित्रमौष्णिहं भारद्वाजीयꣳ, सर्वꣳ सौम्यमानुष्टुभमाथर्वणिकꣳ, सर्वं बार्हस्पत्यं बार्हतमाङ्गिरसꣳ, सर्वं वारुणं पांक्तमालम्बायनीयꣳ, सर्वमैन्द्रं त्रैष्टुभं याज्ञवल्कीयꣳ, सर्वमादित्यदेवतं जागतं कौत्सम् ॥ ११ ॥

ज्योतिष्टोमे दीक्षाप्रभृति वक्ष्यामो, दीक्षायां भृगुरग्नाविष्णू गायत्री, प्रायणीय आङ्गिरसोऽदितिरुष्णिक्,क्रये विश्वामित्रः सोमोऽनुष्टुबातिथ्ये वसिष्ठो विष्णुर्बृहती,प्रवर्ग्ये कश्यप आदित्यः पंक्तिरुपसत्स्वात्रेय उपसद्देवता त्रिष्टुबग्नीषोमीयेऽगस्त्योऽग्नीषोमौ जगती, प्रायणीयेऽतिरात्र आग्निवेश्योऽहोरात्रे अतिजगती, चतुर्विंꣳशत्यहे सौकरायणः संवत्सरः शक्वर्यभिप्लवे षडहे सौपर्णोऽर्द्धमासा मासाश्चातिशक्वरी, पृष्ठ्ये षडहे सायकायन ऋतवोऽष्टिरभिजिति प्रियव्रतोऽग्निरत्यष्टिः, स्वरसामसु सरस्वत्यापो धृतिर्विषुवति रौहिणायन आदित्योऽतिधृतिर्विश्वजिति सौभर इन्द्रः कृतिर्गो आयुषो बाष्कलिर्मित्रावरुणौ प्रकृतिर्दशरात्र आचार्यो विश्वेदेवा आकृतिर्द्वादशरात्रिके पृष्ठ्ये षडहे भाल्लवेयो दिशो विकृतिश्छन्दोमेषु शौल्वायन इमे लोकाः संकृतिर्दशमेऽहनि पराशरः संवत्सरोऽभिकृतिर्महाव्रते शैलिनः प्रजापतिरुत्कृतिरुदयनीयेऽतिरात्रे भौवायनो वायुश्छन्दाꣳसि सर्वाणि ॥१२॥

ऋषिभिरुपलक्षितं वाक्यं, ऋषयश्छन्दोभिरुपलक्षिताः, देवता मन्त्रवर्णादृग्यजुषोर्विनियोगतश्च विज्ञेयाः, सर्वमेतच्छन्दोदैवतमार्षं च विज्ञाय यत्किञ्चिज्जपहोमादि करोति तस्य फलमश्नुते, ब्रह्मयज्ञारंभे यथाविधि स्नात्वा छन्दःपुरुषमेनोनिर्णोदनꣳ शरीरे न्यसेत्तिर्यग्बिलश्चमस ऊर्ध्वबुध्नस्तस्याक्षिणी गोतमभरद्वाजौ, श्रोत्रे विश्वामित्रजमदग्नी, नासिके वसिष्ठकश्यपौ, वागत्रिर्गायत्रीं छन्दाग्निदेवताꣳ शिरसि विन्यसेदेवमेवोष्णिहꣳ सवितारं ग्रीवास्वनूके बृहतीं बृहस्पतिं, बाह्वोर्बृहद्रथन्तरे द्यावापृथिवी, मध्ये त्रिष्टुभमिन्द्रꣳ, श्रोण्योर्जगतीमादित्यं, मेढ्रेऽतिच्छन्दसं प्रजापतिं, पायौ यज्ञायज्ञियं वैश्वानरमूर्वोरनुष्टुभं विश्वान्देवानष्ठीवतोः पंक्तिं मरुतः, पादयोर्द्विपदां विष्णुं, प्राणेषु विच्छन्दसं वायुं, न्यूनातिरिक्तेष्वङ्गेषु न्यूनाक्षरं छन्द आपो देवतेत्येवꣳ सर्वाङ्गेषु योजयित्वा वेदमयः सम्पद्यते, तथा शापानुग्रहसमर्थो भवति, ब्राह्मं तेजश्च वर्धते, न कुतश्चिद्भयं विन्दते, ऋङ्मयो यजुर्मयः साममयस्तेजोमयो ब्रह्ममयोऽमृतमयः संभूय ब्रह्मैवाभ्येति तस्मादेतन्नाब्रह्मचारिणे नातपस्विने नासंवत्सरोषिताय, नाप्रवक्त्रेऽनुब्रूयादनेनाधीतेन चान्द्रायणाब्दफलमवाप्नोत्यनेन च सम्यग्ज्ञातेन ब्रह्मणः सायुज्यꣳ सलोकतामाप्नोत्याप्नोति ॥ १३ ॥

इति सर्वानुक्रमसूत्रे चतुर्थोऽध्यायः ।

---

## अथ सर्वानुक्रमसूत्रे पञ्चमोऽध्यायः ।

अथ छन्दाꣳसि—गायत्र्युष्णिगनुष्टुब्बृहतीपंक्तित्रिष्टुब्जगत्यतिजगती शक्वर्यतिशक्वर्यष्ट्यत्यष्टिधृत्यतिधृतयः कृतिप्रकृत्याकृतिविकृतिसंकृत्यभिकृत्युत्कृतयश्चतुर्विंꣳशत्यक्षरादीनि चतुरुत्तराण्यूनाधिकेनैकेन निचृद्भुरिजौ, द्वाभ्यां विराट्स्वराजौ, पादपूरणार्थं तु क्षैप्रसंयोगैकाक्षरीभावान्व्यूहेदाद्ये तु सप्तवर्गे पादविशेषात्संज्ञाविशेषस्ताननुक्रामन्त एवोदाहरिष्यामो, विराड्रूपा विराट्स्थानाश्च बहूना अपि त्रिष्टुभ एवेत्युद्देशस्तत्र दशैकादशद्वादशाक्षराणां वैराजत्रैष्टुभजागता इति संज्ञा, अनादेशेऽष्टाक्षराः पादाश्चतुष्पदाश्चर्चः॥१॥

प्रथमं छन्दस्त्रिपदा गायत्री, पञ्चकाश्चत्वारः षट्कश्चैकश्चतुर्थश्चतुष्को वा पदपंक्तिः, षट्सप्तैकादशा उष्णिग्गर्भा, त्रयः सप्तकाः पादनिचृन्मध्यमः षट्कश्चेदतिनिचृद्दशकश्चेद्यवमध्या, यस्यास्तु षट्कसप्तकाष्टकाः सा वर्धमाना, विपरीता प्रतिष्ठा, द्वौ षट्कौ सप्तकश्चेति ह्रसीयसी ॥ २ ॥

द्वितीयमुष्णिक् त्रिपदान्त्यो द्वादशक, आद्यश्चेत्पुर उष्णिङ्मध्यमश्चेत् ककुप्त्रैष्टुभजागतचतुष्काः ककुम्न्यंकुशिरैकादशिनोः परः षट्कस्तनुशिरा, मध्ये चेत्पिपीलिकमध्याद्यः पञ्चकस्त्रयोऽष्टका अनुष्टुब्गर्भा, चतुःसप्तकोष्णिगेव ॥ ३ ॥

तृतीयमनुष्टुप् चतुष्पदाथ पञ्चपञ्चकाः षट्कश्चैको महापदपंक्तिर्जागतावष्टकश्च कृतिर्मध्ये चेदष्टकः पिपीलकमध्या, नवकयोर्मध्ये जागतः काविराण्नव वैराजत्रयोदशैर्नष्टरूपादेकास्त्रयो विराडेकादशका वा ॥ ४ ॥

चतुर्थं बृहती, तृतीयो द्वादशक, आद्यश्चेत्पुरस्ताद्बृहती, द्वितीयश्चेन्न्यंकुसारिण्युरो बृहती स्कन्धोग्रीवी वान्त्यश्चेदुपरिष्टाद्बृहत्यष्टिनोर्मध्ये दशकौ विष्टारबृहती, त्रिजागतोर्ध्वबृहती, त्रयोदशिनोर्मध्येऽष्टकः पिपीलकमध्या, नवकाष्टकैकादशाष्टिनो विषमपदा, चतुर्नवका बृहत्येव ॥ ५ ॥

पञ्चमं पंक्तिः पञ्चपदाथ चतुष्पदा विराड्दशका, अयुजौ जागतौ सतोबृहती, युजौ चेद्विपरीताद्यौ चेत्प्रस्तारपंक्तिरन्त्यौ चेदास्तारपंक्तिराद्यन्त्यौ चेत्संस्तारपंक्तिर्मध्यमौ चेद्विष्टारपंक्तिः ॥ ६ ॥

षष्ठं त्रिष्टुप् त्रैष्टुभपदा, द्वौ तु जागतौ यस्याः सा जागते जगती, त्रैष्टुभे त्रिष्टुब्वैराजौ जागतौ चाभिसारिणी, नवकौ वैराजस्त्रैष्टुभश्च द्वौ वा वैराजौ नवकस्त्रैष्टुभश्च विराट्स्थानैकादशिनस्त्रयोऽष्टकश्च विराड्रूपा, द्वादशिनस्त्रयोष्टकश्च ज्योतिष्मती, यतोऽष्टकस्ततो ज्योतिश्चत्वारोऽष्टका जागतश्च महाबृहती, मध्ये जागतश्चेद्यवमध्याद्यौ दशकावष्टकास्त्रयः पंक्त्युत्तरा विराट्पूर्वा वा ॥ ७ ॥

सप्तमं जगती जागतपदाष्टिनस्त्रयः स्वौ च द्वौ महासतोबृहत्यष्टकौ सप्तकः षट्को दशको नवकश्च षडष्टका वा महापंक्तिः॥ माध्यन्दिनीये वाजसनेयके सर्वानुक्रमणिकैषा कृतिर्भगवतः कात्यायनस्यैषा कृतिर्भगवतः कात्यायनस्य ॥ ८ ॥

इति सर्वानुक्रमसूत्रे पञ्चमोऽध्यायः ।

इति यजुर्वेद-वाजसनेयि-संहितायाः सर्वानुक्रमसूत्रं समाप्तम् ।

# अथानुवाकसूत्राध्यायः ।

अथानुवाकान्वक्ष्यामि ब्रह्मणा निर्मितान्पुरा । शिष्याणामुपदेशाय यज्ञसंस्कार एव च । विप्राणां यज्ञकालेषु जपहोमार्चनादिषु ॥ १ ॥

इषे त्वैका(१) वसोः पवित्रं तिस्रो (२–४)ऽग्ने व्रतपते सप्त (५–११) पवित्रे स्थो द्वे (१२–१३) शर्मासि तिस्रो(१४–१६)धृष्टिरसि शर्मासि द्विकौ (१७–१८;१९–२०)देवस्य त्वा तिस्रो (२१-२३) देवस्य त्वा पञ्च (२४–२८) प्रत्युष्टꣳरक्षस्तिस्रो (२९–३१) दशैकत्रिꣳशत् ॥ १० ॥ ३१ ॥ १ ॥

कृष्णोऽसि षड्(१–६)अग्नेवाजजित्तिस्रो(७-९) मयीदमग्नीषोमयोः पञ्चकौ (१०–१४;१५–१९) अग्नेऽदब्धायो चतस्रः (२०–२३) संवर्चसा पञ्च (२४–२८)अग्नये कव्यवाहनाय षट् (२९–३४) सप्त, चतुस्त्रिꣳशत् ॥ ७ ॥ ३४ ॥ २ ॥

समिधाग्निं भूर्भुवः स्वश्चतुष्कौ (१–४;५–८) अग्निर्ज्योतिर्द्वे (९–१०) उपप्रयन्तः षड्विꣳशति-(११–१६) भूर्भुवःस्वश्चतस्रो(३७–४०) गृहा मा तिस्रः (४१–४३) प्रघासिनः पंच (४४–४८) पूर्णा दर्वि द्वे (४९–५०)अक्षन्नमीमदन्त षड् (५१-५६) एष ते सप्त (५७-६३) दश, त्रिषष्टिः ॥ १० ॥ ६३ ॥ ३ ॥

एदं द्वे (१-२) महीनां पयश्चतस्र (३–६) आकूत्या ऋक्सामयोर्द्विकौ (७–८;९-१०) व्रतं कृणुत षड् (११-१६)एषा ते चतस्रो (१७-२०) वस्व्यासि तिस्र (२१-२३) एष ते द्वे (२४-२५) शुक्रं त्वा चतस्रो (२६–२९)ऽदित्यास्त्वगष्टौ (३०-३७)दश, सप्तत्रिꣳशत्॥ १० ॥ ३७ ॥ ४ ॥

अग्नेस्तनूरापतये चतुष्कौ(१-४;५-८)तप्तायनी द्वे(९-१०) इन्द्रघोषस्तिस्रो (११-१३)युञ्जतेऽष्टौ (१४-२१) देवस्य त्वा चतस्रो (२२-२५) देवस्य त्वा पंच (२६-३०) विभूरसि चतस्रो (३१-३४) ज्योतिरसि षड् (३५-४०) उरु विष्णो तिस्रो (४१-४३) दश, त्रिचत्वारिꣳशत् ॥ १० ॥ ४३ ॥ ५ ॥

देवस्य त्वा षड् (१-६) उपावीरसि पंच (७-११) माहिः षट् (१२-१७) सं ते तिस्रः (१८-२०)समुद्रं गच्छ हविष्मतीर्द्विकौ(२१-२२; २३-२४) हृदे त्वा पंच (२५-२९) देवस्य त्वाष्टौ (३०-३७) अष्टौ, सप्तत्रिꣳशत् ॥ ८ ॥ ३७ ॥६ ॥

वाचस्पतय उपयामगृहीतोऽसि त्रिकौ (१-३; ४-६)आवायोऽयं वां द्विकौ(७-८;९-१०)या वामेका (११) तं प्रत्नथा चतस्रो(१२–१५)ऽयं वेनो ये देवासस्त्रिकौ(१६-१८;१९–२१)इन्द्राय मूर्धानं द्विकौ (२२–२३;२४–२५) यस्त एका (२६) प्राणाय तिस्रो (२७–२९) मघव (३०)इन्द्राग्नी आगतमा ग्नौमासश्चर्षणीधृतो(३१;३२;३३)विश्वेदेवास आगतेन्द्रमरुत्वो (३४;३५) मरुत्वन्तं वृषभं (३६) मरुतां त्वौजसे(३६)सजोषा इन्द्र (३७) मरुत्वाँ २ इन्द्र(३८)महाँ२ इन्द्रो (३९) महाँ २ इन्द्रमेकैका(४०)उदुत्यमष्टौ (४१–४८) पंचविꣳशतिरष्टाचत्वारिꣳशत् ॥ २५॥ ४८॥७॥

उपयामगृहीतोऽस्यादित्येभ्यः पंच (१–५) वाममद्य द्वे (६–७) सुशर्मास्येका (८) बृहस्पतिसुतस्य द्वे (९-१०) हरिरसि चतस्रः (११–१४) समिन्द्र णोऽष्टौ (१५–२२) माहिरेजतु दशमास्यः पंचकौ(२३–२७;२८–३२) आतिष्ठ युक्ष्वाहीन्द्रमिदेकैका (३३; ३४; ३५) यस्मान्न द्वे (३६–३७) अग्ने पवस्वोत्तिष्ठन्नदश्रमुदुत्यमेकैकाजिघ्र द्वे (३८;३९;४०;४१;४२–४३) वि न इन्द्र वाचस्पतिं विश्वकर्मन्नेकैकाग्नये त्वा चतस्र (४४;४५;४६;४७–५०) इह रतिस्तिस्रः (५१–५३) परमेष्ठी दश (५४–६३) त्रयोविꣳशतिस्त्रिषष्टिः ॥ २३॥ ६३ ॥ ८ ॥

देवसवितश्चतस्र (१–४) इन्द्रस्य वज्रः पंच

( ५-९ ) देवस्याहं दश ( १०-१९ ) आपये तिस्रो ( २०-२२ ) वाजस्येममष्टौ ( २३-३० ) अग्निरेकाक्षरेणैष ते चतुष्कौ (३१-३४;३५-३८) सविता द्वे (३९-४० ) अष्टौ चत्वारिंशत् ॥ ८ ॥ ४० ॥ ९ ॥

अपो देवाश्चतस्रः ( १-४ ) सोमस्य त्विषिः पंच ( ५-९ )अवेष्टाः सप्त ( १०-१६ )सोमस्य त्वा चतस्र ( १७-२० ) इन्द्रस्य वज्रः पंच ( २१-२५ ) स्योनासि चतस्रः ( २६-२९ ) सवित्रेका (३०) अश्विभ्यां चतस्रः ( ३१-३४ ) अष्टौ, चतुस्त्रिंशत् ॥ ८ ॥ ३४ ॥ १० ॥

युञ्जान एकादश ( १-११ ) प्रतूर्तं षोडश ( १२-२७ ) देवस्य त्वा दश ( २८-३७)आपो देवीर्द्वादश( ३८-४९ )आपो ह्येकादश(५०-६०) अदितिष्ट्वा पंच ( ६१-६५ ) आकूतिमष्टादश ( ६६-८३) सप्त, त्र्यशीतिः ॥ ७ ॥ ८३ ॥ ११ ॥

दृशानः सप्तदश ( १-१७) दिवस्परि द्वादश ( १८-२९ ) समिधाग्निं पंचदश ( ३०-४४ ) अपेत सप्तदश ( ४५-६१ ) असुन्वन्तं त्रयोदश ( ६२-७४ ) या ओषधीः सप्तविंशतिः ( ७५-१०१ ) मा मा षोडश ( १०२-११७ ) सप्त, सप्तदशशतम् ॥ ७ ॥ ११७ ॥ १२ ॥

मयि गृह्णामि पंचदश ( १-१५ ) ध्रुवासि मधुवाता एकादशकौ ( १६—२६;२७—३७ ) सम्यक्स्रवन्ति नव ( ३८-४६ ) इमं मा षड् ( ४७-५२) अपां त्वैका( ५३ ) अयं पुरः पंच (५४-५८) सप्ताष्टापंचाशत् ॥ ७ ॥ ५८ ॥ १३ ॥

ध्रुवक्षितिः षट्( १-६ )सजूर्ऋतुभिर्मूर्धा वयो द्विकौ ( ७-८;९-१० ) इन्द्राग्नी आयुर्मे षट्कौ ( ११-१६;१७-२२ ) आशुस्त्रिवृदेका ( २३ ) अग्नेर्भागोस्येकया चतुष्कौ ( २४-२७;२८-३१ ) अष्टावेकत्रिंशत् ॥ ८ ॥ ३१ ॥ १४ ॥

अग्ने जातान्पंच ( १-५ ) रश्मिना सत्याय चतस्रो ( ६-९) राज्यस्ययं पुरः पंचकौ ( १०-१४;१५-१९ ) अग्निर्मूर्धैकोनत्रिंशद् ( २०-४८ ) येन ऋषयोऽष्टौ( ४९-५६ ) तपश्च नव ( ५७-६५ ) सप्त, पंचषष्टिः ॥ ७ ॥ ६५ ॥ ॥ १५ ॥

नमस्ते षोडश ( १-१६ ) हिरण्यबाहव ( १७-२१ ) उष्णीषिणे ( २२-२६ ) तक्षभ्यो ( २७-३१ ) ज्येष्ठाय पंचकाः ( ३२-३६ ) सुत्याय चतस्रः ( ३७-४० ) शंभवायैका (४१) पार्याय पंच( ४२-४६ ) द्रापे अन्धसो विंशतिः( ४७-६६ ) नव, षट्षष्टिः ॥ ९ ॥६६॥१६॥

अश्मन्नूर्जं दश ( १-१० ) नमस्ते पंच (११-१५) अग्निस्तिग्मेन नव (१६-२४) चक्षुषः पिताष्टौ ( २५-३२ ) आशुः शिशानः सप्तदश ( ३३-४९ ) उदेनं क्रमध्वमग्निना पंचदशकौ (५०-६४;६५-७९) शुक्रज्योतिः सप्त(८०-८६) इमंस्तनं त्रयोदश ( ८७-९९ ) नवैकोनशतम् ॥ ९ ॥ ९९ ॥ १७ ॥

वाजः सप्त (१-७)शमूर्क्चतुष्का(८;९-१२) अश्माग्निस्त्रिकौ ( १३-१५;१६-१८ ) अंशुः पंच ( १९-२३ ) एका चतस्रो ( २४-२७ ) वाजाय द्वे ( २८-२९ )वाजस्य त्वष्टौ (३०-३७) ऋताषाड् त्रयोदश ( ३८-५० ) अग्निं युनज्मि सप्त ( ५१-५७ ) यदाकूताद्वात्रहत्याय दशकौ ( ५८-६७;६८-७७ ) त्रयोदश, सप्तसप्ततिः ॥ १३ ॥ ७७ ॥ १८ ॥

स्वाद्वीं त्वैकादश ( १-११ ) देवा यज्ञं विंशतिः ( १२-३१ ) सुरावन्तं सप्तदश ( ३२-४८ ) उदीरतां त्रयोदश ( ४९-६१ ) आच्याजानुर्दश ( ६२—७१ ) सोमो राजाष्टौ ( ७२-७९ ) सीसेन तन्त्रं षोडष ( ८०-९५) सप्त, पंचनवतिः ॥ ७ ॥ ९५ ॥ १९ ॥

क्षत्रस्य योनिस्त्रयोदश ( १-१३ ) यद्देवा दश( १४-२३ )अभ्यादधाम्यष्टौ (२४-३१) यो भूतानां चतस्रः ( ३२-३५ ) समिद्ध इन्द्र एका-

दश ( ३६-४६ ) आ यात्वष्टौ ( ४७-५४ ) समिद्धो अग्निर्द्वादश ( ५५-६६ ) अश्विना हविस्त्रयोदश ( ६७—७९ ) अश्विना तेजसैकादश ( ८०-९० ) नव, नवतिः ॥ ९ ॥ ९० ॥ २० ॥

इमं मे समिद्धो अग्निरेकादशकौ ( १-११; १२-२२ ) वसन्तेन ऋतुना षड् ( २३-२८ ) होता यक्षत्समिधाग्निं द्वादश( २९-४० ) अश्विनौ छागस्य सप्त ( ४१-४७ ) देवं बर्हिश्चतुर्दश ( ४८-६१ ) षडेकषष्टिः ॥ ६ ॥ ६१ ॥ २१ ॥

तेजोऽसि पंच ( १-५ ) अग्नय एका ( ६ ) हिंकाराय द्वे ( ७-८ ) तत्सवितुर्दश ( ९-१८ ) विभूर्मात्रैका ( १९ ) काय द्वे ( २०-२१ ) आब्रह्मँस्त्रयोदश शेषादेका ( २२;२३;२४;२५; २६;२७;२८;२९;३०;३१;३२;३३;३४ ) एकोनविꣳशतिः, चतुस्त्रिꣳशत् ॥ १९ ॥ ३४ ॥ २२ ॥

हिरण्यगर्भो, यः प्राणतो द्विकौ ( १-२;३-४) युञ्जन्त्यष्टौ (५-१२) वायुष्ट्वा पंच ( १३-१७ ) प्राणाय तिस्र ( १८-२० ) उत्सक्थ्या द्वादश ( २१-३२ ) गायत्री, कस्त्वा षट्कौ ( ३३-३८; ३९-४४ ) कःस्विदष्टौ ( ४५-५२ ) कास्विद्दश ( ५३-६२ ) सुभूः स्वयंभूस्तिस्र ( ६३-६५ ) एकादश, पञ्चषष्टिः ॥ ११ ॥ ६५ ॥ २३ ॥

अश्वस्तूपरो ( १—१० ) धूम्रान्वसन्ताय ( ११-२० ) समुद्राय शिशुमारान् ( २१-३० ) मयुः प्राजापत्यो दशकाः ( ३१-४० ) चत्वारश्चत्वारिꣳशत् ॥ ४ ॥ ४० ॥ २४ ॥

शादं दद्भिर्नवैकैका ( १;२;३;४;५;६;७;८;९) हिरण्यगर्भश्चतस्र ( १०—१३ ) आ नो दश ( १४—२३ ) मा नो मित्रो, यदश्वस्याष्टकौ ( २४-३१;३२-३९ ) यत्ते षड् (४०-४५) इमा नु कं द्वे ( ४६-४७) पंचदश,सप्तचत्वारिꣳशत् ॥ १५ ॥ ४७ ॥ २५ ॥

अग्निश्च पंचदश ( १-१५ ) उशा त एकादश ( १६-२६ ) द्वौ, षड्विꣳशतिः ॥२॥२६॥२६॥

समास्त्वा दश ( १-१० ) ऊर्ध्वा अस्य पीवो अन्ना द्वादशकौ ( ११-२२;२३-३४ ) अभि त्वैकादश ( ३५-४५ ) चत्वारः, पंचचत्वारिꣳशत् ॥ ४ ॥ ४५ ॥ २७ ॥

होता यक्षदेकादश ( १-११ ) देवं बर्हिर्द्वादश ( १२-२३ ) पुनरप्येवं ( २४-३४;३५-४६ ) चत्वारः, षट्चत्वारिꣳशत् ॥ ४ ॥ ४६ ॥ २८ ॥

समिद्धो अअग्नेकादश ( १-११ ) यदक्रन्दस्त्रयोदश ( १२-२४ ) समिद्धो अद्य द्वादश (२५-३६) केतुं कृण्वँश्चतुर्विꣳशतिः (३७-६०) चत्वारः, षष्टिः ॥ ४ ॥ ६० ॥ २९ ॥

देवसवितः षट् ( १-६ ) तपसे कौलालꣳ षोडष ( ७-२२ ) द्वौ; द्वाविꣳशतिः ॥ २ ॥ ॥ २२ ॥ ३० ॥

सहस्रशीर्षा षोडष (१-१६ ) अद्भ्यः संभृतः षट् ( १७-२२ ) द्वौ; द्वाविꣳशतिः ॥ २ ॥ ॥ २२ ॥ ३१ ॥

तदेव सप्त ( १-७ ) वेनस्तन्नव ( ८-१६ ) द्वौ, षोडष ॥ २ ॥ १६ ॥ ३२ ॥

अस्याजरासः सप्तदश ( १-१७ ) आपश्चिद् द्वादश (१८-२९ ) विभ्राट् चतुर्दश (३०-४३) प्रवावृज एकादश ( ४४-५४ ) प्रवायुप्रवीरया पंचदशकौ ( ५५-६९;७०-८४ ) आ नस्त्रयोदश ( ८५-९७ ) सप्त, सप्तनवतिः ॥७॥९७॥३३॥

यज्जाग्रतः ( १-१० ) पंच नद्यः ( ११-२० ) सोमो धेनुमाकृष्णेन (२१-३०;३१-४० )पूषन्तव दशका ( ४१-५० ) न तदष्टौ ( ५१-५८ ) षडष्टापंचाशत् ॥ ६ ॥ ५८ ॥ ३४ ॥

अपेतो दश ( १-१० ) अपाघं द्वादश (११-२२) द्वौ, द्वाविꣳशतिः ॥ २ ॥ २२ ॥३५॥

ऋचं वाचꣳषोडश (१-१६) द्यौः शान्तिरष्टौ ( १७-२४ ) द्वौ, चतुर्विꣳशतिः ॥२॥२४॥३६॥

देवस्य त्वा दश ( १-१० ) यमायत्वैकादश ( ११-२१ ) द्वावेकविंशतिः ॥ २ ॥२१॥३७॥

देवस्य त्वाष्टौ (१-८) यमाय त्वा क्षत्रस्य त्वा दशकौ ( ९-१८;१९-२८ ) त्रयोऽष्टाविंशतिः ॥ ३ ॥ २८ ॥ ३८ ॥

स्वाहा प्राणेभ्यः षड् ( १-६ ) उग्रश्च सप्त ( ७-१३ ) द्वौ त्रयोदश ॥ २ ॥ १३ ॥ ३९ ॥

ईशावास्यमष्टौ ( १-८ ) अन्धं तमो नव ( ९-१७ ) द्वौ, सप्तदश ॥ २ ॥ १७ ॥ ४० ॥

दशाध्याये समाख्याता अनुवाकास्तु संख्यया ।
शतं दशानुवाकाश्च नवान्ये च मनीषिभिः ॥ १ ॥
सप्तषष्टिश्चितौ ज्ञेया सौत्रे द्वाविंशतिस्तथा ।
अश्व एकोनपंचाशत्पञ्चत्रिंशत्खिले स्मृताः ॥ २ ॥
शुक्रियेषु तु विज्ञेया एकादश मनीषिभिः ।
एकीकृत्य समाख्यातं त्रिशतं त्र्यधिकं मतम् ॥ ३ ॥

इत्यनुवाकसूत्राध्यायः संपूर्णः ॥

---

# छन्दांसि ।

## [ सर्वानुक्रमसूत्रं । अ० ५, अनु० १ ]

| छन्दोनामानि | अक्षराणि | छन्दोनामानि | अक्षराणि | छन्दोनामानि | अक्षराणि |
|---|---|---|---|---|---|
| **१ गायत्री ।** | **२४** | ३ भुरिगनुष्टुप् | ३३ | २ निचृ(वृ)त्त्रिष्टुप् | ४३ |
| १ विराड् गायत्री | २२ | ४ स्वरानुष्टुप् | ३४ | ३ भुरिक् त्रिष्टुप् | ४५ |
| २ निचृ(वृ)द्गायत्री | २३ | **४ बृहती ।** | **३६** | ४ स्वराट् त्रिष्टुप् | ४६ |
| ३ भुरिग्गायत्री | २५ | १ विराड् बृहती | ३४ | **७ जगती ।** | **४८** |
| ४ स्वराड् गायत्री | २६ | ४ निचृ(वृ)द्बृहती | ३५ | १ विराड् जगती | ४६ |
| **२ उष्णिक् ।** | **२८** | ३ भुरिग्बृहती | ३७ | २ निचृ(वृ)ज्जगती | ४७ |
| १ विराडुष्णिक् | २६ | ४ स्वराड्बृहती | ३८ | ३ भुरिग्जगती | ४९ |
| २ निचृ(वृ)दुष्णिक् | २७ | **५ पंक्तिः ।** | **४०** | ४ स्वराड्जगती | ५० |
| ३ भुरिगुष्णिक् | २९ | १ विराट्पंक्तिः | ३८ | **८ अतिजगती ।** | **५२** |
| ४ स्वराडुष्णिक् | ३० | २ निचृ(वृ)त्पंक्तिः | ३९ | १ विराडतिजगती | ५० |
| **३ अनुष्टुप् ।** | **३२** | ३ भुरिक्पंक्तिः | ४१ | २ निचृ(वृ)दतिजगती | ५१ |
| १ विराडनुष्टुप् | ३० | ४ स्वराट् पंक्तिः | ४२ | ३ भुरिगतिजगती | ५३ |
| २ निचृ(वृ)दनुष्टुप् | ३१ | **६ त्रिष्टुप् ।** | **४४** | ४ स्वराडतिजगती | ५४ |
| | | १ विराट्त्रिष्टुप् | ४२ | | |

| छन्दोनामानि | अक्षराणि |
|---|---|
| **९ शक्वरी ।** | **५६** |
| १ विराट् शक्वरी | ५४ |
| २ निचृ(वृ)च्छक्वरी | ५५ |
| ३ भुरिक्शक्वरी | ५७ |
| ४ स्वराट् शक्वरी | ५८ |
| **१० अतिशक्वरी ।** | **६०** |
| १ विराडतिशक्वरी | ५८ |
| २ निचृ(वृ)दतिशक्वरी | ५९ |
| ३ भुरिगतिशक्वरी | ६१ |
| ४ स्वराडतिशक्वरी | ६२ |
| **११ अष्टिः ।** | **६४** |
| १ विराडष्टिः | ६२ |
| २ निचृ(वृ)दष्टिः | ६३ |
| ३ भुरिगष्टिः | ६५ |
| ४ स्वराडष्टिः | ६६ |
| **१२ अत्यष्टिः ।** | **६८** |
| १ विराडत्यष्टिः | ६६ |
| २ निचृ(वृ)दत्यष्टिः | ६७ |
| ३ भुरिगत्यष्टिः | ६९ |
| ४ स्वराडत्यष्टिः | ७० |
| **१३ धृतिः ।** | **७२** |
| १ विराड्धृतिः | ७० |
| २ निचृ(वृ)द्धृतिः | ७१ |
| ३ भुरिग्धृतिः | ७३ |
| ४ स्वराड्धृतिः | ७४ |
| **१४ अतिधृतिः ।** | **७६** |
| १ विराडतिधृतिः | ७४ |
| २ निचृ(वृ)दतिधृतिः | ७५ |
| ३ भुरिगतिधृतिः | ७७ |
| ४ स्वराडतिधृतिः | ७८ |
| **१५ कृतिः ।** | **८०** |
| १ विराट्कृतिः | ७८ |
| २ निचृ(वृ)त्कृतिः | ७९ |
| ३ भुरिक्कृतिः | ८१ |
| ४ स्वराट्कृतिः | ८२ |
| **१६ प्रकृतिः ।** | **८४** |
| १ विराट्प्रकृतिः | ८२ |
| २ निचृ(वृ)त्प्रकृतिः | ८३ |
| ३ भुरिक्प्रकृतिः | ८५ |
| ४ स्वराट् प्रकृतिः | ८६ |
| **१७ आकृतिः ।** | **८८** |
| १ विराडाकृतिः | ८६ |
| २ निचृ(वृ)दाकृतिः | ८७ |
| ३ भुरिगाकृतिः | ८९ |
| ४ स्वराडाकृतिः | ९० |
| **१८ विकृतिः ।** | **९२** |
| १ विराड्विकृतिः | ९० |
| २ निचृ(वृ)द्विकृतिः | ९१ |
| ३ भुरिग्विकृतिः | ९३ |
| ४ स्वराड्विकृतिः | ९४ |
| **१९ संकृतिः ।** | **९६** |
| १ विराट्संकृतिः | ९४ |
| २ निचृ(वृ)त्संकृतिः | ९५ |
| ३ भुरिक्संकृतिः | ९७ |
| ४ स्वराट्संकृतिः | ९८ |
| **२० अभिकृतिः ।** | **१००** |
| १ विराडभिकृतिः | ९८ |
| २ निचृ(वृ)दभिकृतिः | ९९ |
| ३ भुरिगभिकृतिः | १०१ |
| ४ स्वराडभिकृतिः | १०२ |
| **२१ उत्कृतिः ।** | **१०४** |
| १ विराडुत्कृतिः | १०२ |
| २ निचृ(वृ)दुत्कृतिः | १०३ |
| ३ भुरिगुत्कृतिः | १०५ |
| ४ स्वराडुत्कृतिः | १०६ |

## छन्दसां देवताः ।

### ( सर्वानु. अ. ४ अ. १० )

| छन्दः | देवता | छन्दः | दवता |
|---|---|---|---|
| गायत्री | अग्निः | विच्छन्दाः | वायुः |
| उष्णिक् | सविता | द्विपदा | पुरुषः |
| अनुष्टुप् | सोमः | एकपदा | ब्रह्मा |
| बृहती | बृहस्पतिः | सर्वा ऋचः | अग्निः |
| पंक्तिः | वरुणः | सर्वाणि यजूंषि | वायुः |
| त्रिष्टुप् | इन्द्रः | सर्वाणि सामाणि | सूर्यः |
| जगती | विश्वेदेवाः | सर्वाणि ब्राह्मणाणि | ,, |
| विराट् | मित्रः | स्वाहाकारः | अग्निः |
| स्वराट् | अरुणः | बषट्कारः | विश्वेदेवाः |
| अतिच्छन्दाः | प्रजापतिः | | |

## अनादिष्टा देवतादयः ।

### ( सर्वानु. अ. ४ अनु. ११ )

| देवता | छन्दः | ऋषिः | देवता | छन्दः | ऋषिः |
|---|---|---|---|---|---|
| अग्निः | गायत्री | गोतमः | वरुणः | पंक्तिः | आलम्बायनः |
| सविता | उष्णिक् | भरद्वाजः | इन्द्रः | त्रिष्टुप् | याज्ञवल्क्यः |
| सोमः | अनुष्टुप् | अथर्वा | आदित्यः | जगती | कुत्सः |
| बृहस्पतिः | बृहती | अङ्गिराः | | | |

## ज्योतिष्टोमे दीक्षादीनां ऋष्यादयः (सर्वा.अ.४अनु.१२)

| | ऋषिः | देवता | छन्दः |
|---|---|---|---|
| दीक्षा | भृगुः | अग्नाविष्णू | गायत्री |
| प्रायणीयः | आङ्गिरसः | अदितिः | उष्णिक् |
| क्रयः | विश्वामित्रः | सोमः | अनुष्टुप् |
| आतिथ्यम् | वसिष्ठः | विष्णुः | बृहती |
| प्रवर्ग्यः | कश्यपः | आदित्यः | पंक्तिः |
| उपसदः | आत्रेयः | उपसद् | त्रिष्टुप् |
| अग्नीषोमीयम् | अगस्त्यः | अग्नीषोमौ | जगती |
| प्रायणीयोऽतिरात्रः | आग्निवेश्यः | अहोरात्रे | अतिजगती |
| चतुर्विंशत्यहः | सौकरायणः | संवत्सरः | शक्करी |
| अभिप्लवः षडहः | सौपर्णः (सावर्णः) | अर्धमासाः मासाश्च | अतिशक्करी |
| पृष्ठ्यः षडहः | सायकायनः | ऋतवः | अष्टिः |
| अभिजित् | प्रियव्रतः | अग्निः | अत्यष्टिः |
| स्वरसामानि | सरस्वती | आपः | धृतिः |
| विषुवान् | रौहिणायनः | आदित्यः | अतिधृतिः |
| विश्वजित् | सौभरः | इन्द्रः | कृतिः |
| गो आयुः | बाष्कलिः (वार्कलिः) | मित्रावरुणौ | प्रकृतिः |
| दशरात्रः [शाहः | आचार्यः | विश्वेदेवाः | आकृतिः |
| पृष्ठ्यःषडहः द्वाद- | भाल्लवेयः | दिशः | विकृतिः |
| छन्दोमाः | शौल्वायनः | इमेलोकाः | संकृतिः |
| दशममहः | पराशरः | संवत्सरः | अभिकृतिः |
| महाव्रतम् | शैलिनः | प्रजापतिः | उत्कृतिः |
| उदयनीयोऽतिरात्रः | भौवायनः | वायुः | छन्दांसि सर्वाणि |

## छन्दःपुरुषस्य

### शरीरे न्यासप्रकारः

(सर्वानु. अ. ४ अनु. १३)

| अवयवाः | ऋषयः | देवताः | छन्दः |
|---|---|---|---|
| अक्षिणी | गोतमभरद्वाजौ | | |
| श्रोत्रे | विश्वामित्रजमदग्नी | | |
| नासिके | वसिष्ठकश्यपौ | | |
| वाक् | अत्रिः | | |
| शिरः | | अग्निः | गायत्री |
| ग्रीवाः | | सविता | उष्णिक् |
| अनूकम् | | बृहस्पतिः | बृहती |
| बाहू | | द्यावापृथिवी | बृहद्रथन्तरे |
| मध्यम् | | इन्द्रः | त्रिष्टुप् |
| श्रोण्यौ | | आदित्यः | जगती |
| मेढ्रं | | प्रजापतिः | अतिच्छन्दाः |
| पायुः | | वैश्वानरः | यज्ञायज्ञियं |
| ऊरू | | विश्वेदेवाः | अनुष्टुप् |
| अष्ठीवन्तौ | | मरुतः | पंक्तिः |
| पादौ | | विष्णुः | द्विपदा |
| प्राणाः | | वायुः | विच्छन्दाः |
| इतोऽन्येऽवयवाः | | आपः | न्यूनाक्षरंछन्दः |

## छन्दांसि ।

### १ गायत्री

(सर्वानु. अ. ५ अनु. २)

| छन्दोनामानि | प्रथमः पादः | द्वितीयः पादः | तृतीयः पादः | चतुर्थः पादः | पंचमः पादः | संपूर्णान्यक्षराणि |
|---|---|---|---|---|---|---|
| गायत्री | ८ | ८ | ८ | | | २४ |
| पदपंक्तिर्गायत्री | ५ | ५ | ५ | ५ | ६ | २६ |
| | ५ | ५ | ५ | ४ | ६ | २५ |
| उष्णिग्गर्भा गायत्री | ६ | ७ | ११ | | | २४ |
| पादनिवृ(चृ)द्गायत्री | ७ | ७ | ७ | | | २१ |
| अतिनिवृद्गायत्री | ७ | ६ | ७ | | | २० |
| यवमध्या गायत्री | ७ | १० | ७ | | | २४ |
| वर्धमाना गायत्री | ६ | ७ | ८ | | | २१ |
| प्रतिष्ठा गायत्री | ८ | ७ | ६ | | | २१ |
| ह्रसीयसी गायत्री | ६ | ६ | ७ | | | १९ |

## २ उष्णिक्

### ( सर्वानु. अ. ५ अनु. ३ )

| छन्दोनामानि | प्र.पा. | द्वि.पा. | तृ.पा. | च.पा. | अक्षरसंख्या |
|---|---|---|---|---|---|
| उष्णिक् | ८ | ८ | १२ | | २८ |
| पुर उष्णिक् | १२ | ८ | ८ | | २८ |
| ककुबुष्णिक् | ८ | १२ | ८ | | २८ |
| ककुम्न्यंकुशिरा उष्णिक् | ११ | १२ | ४ | | २७ |
| तनुशिरा उष्णिक् | ११ | ११ | ६ | | २८ |
| पिपीलिकमध्या उष्णिक् | ११ | ६ | ११ | | २८ |
| अनुष्टुब्गर्भा उष्णिक् | ५ | ८ | ८ | ८ | २९ |
| केवला उष्णिक् | ७ | ७ | ७ | ७ | २८ |

## ३ अनुष्टुप्

### ( सर्वानु. अ. ५ अनु. ४ )

| छन्दोनामानि | प्र.पा. | द्वि.पा. | तृ.पा. | च.पा. | पं.पा | ष.पा. | स. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अनुष्टुप् | ८ | ८ | ८ | ८ | | | ३२ |
| महापदपंक्तिरनुष्टुप् | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ६ | ३१ |
| कृतिरनुष्टुप् | १२ | १२ | ८ | | | | ३२ |
| पिपीलिकमध्या नु० | १२ | ८ | १२ | | | | ३२ |
| काविराडनुष्टुप् | ९ | १२ | ९ | | | | ३० |
| नष्टरूपानुष्टुप् | ९ | १० | १३ | | | | ३२ |
| विराडनुष्टुप् | १०(११) | १० (११) | १०(११) | | | | ३०(३३) |

## ४ बृहती

### ( सर्वानु. अ. ५ अनु. ५ )

| छन्दोनामानि | प्र.पा. | द्वि.पा. | तृ.पा. | च.पा. | सं.सं. |
|---|---|---|---|---|---|
| बृहती | ८ | ८ | १२ | ८ | ३६ |
| पुरस्ताद्बृहती | १२ | ८ | ८ | ८ | ३६ |
| न्यंकुसारिणी बृहती, पुरोबृहती, स्कन्धोग्रीवी वा बृहती | ८ | १२ | ८ | ८ | ३६ |
| उपरिष्टाद्बृहती | ८ | ८ | ८ | १२ | ३६ |
| विष्टारबृहती | ८ | १० | १० | ८ | ३६ |
| ऊर्ध्वबृहती | १२ | १२ | १२ | | ३६ |
| पिपीलिकमध्या बृहती | १३ | ८ | १३ | | ३४ |
| विषमपदा बृहती | ९ | ८ | ११ | ८ | ३६ |
| केवला बृहती | ९ | ९ | ९ | ९ | ३६ |

## ५ पंक्तिः

### ( सर्वानु. अ. ५ अनु. ६ )

| छन्दोनामानि | प्र.पा. | द्वि.पा. | तृ.पा. | च.पा. | पं.पा. | सं.सं. |
|---|---|---|---|---|---|---|
| पंक्तिः | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ४० |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| विराट्पंक्तिः | १० | १० | १० | १० | ४० |
| सतोबृहती पंक्तिः | १२ | ८ | १२ | ८ | ४० |
| विपरीता पंक्तिः | ८ | १२ | ८ | १२ | ४० |
| प्रस्तारपंक्तिः | १२ | १२ | ८ | ८ | ४० |
| आस्तारपंक्तिः | ८ | ८ | १२ | १२ | ४० |
| संस्तारपंक्तिः | १२ | ८ | ८ | १२ | ४० |
| विष्टारपंक्तिः | ८ | १२ | १२ | ८ | ४० |

## ६ त्रिष्टुप्

### ( सर्वानु. अ.५ अनु. ७ )

| छन्दोनामानि | प्र.पा | द्वि.पा | तृ.पा. | च.पा. | पं.पा. | सं.संख्या |
|---|---|---|---|---|---|---|
| त्रिष्टुप् | ११ | ११ | ११ | ११ | | ४४ |
| जगती त्रिष्टुप् | १२ | १२ | ११ | ११ | | ४६ |
| त्रिष्टुप् जगती | ११ | ११ | १२ | १२ | | ४६ |
| अभिसारिणी त्रिष्टुप् | १० | १० | १२ | १२ | | ४४ |
| विराट्स्थाना त्रिष्टुप् | ९ | ९ | १० | ११ | | ३९ |
| ,, ,, | १० | १० | ९ | ११ | | ४० |
| विराड्रूपा त्रिष्टुप् | ११ | ११ | ११ | ८ | | ४१ |
| ज्योतिष्मती त्रिष्टुप् | १२ | १२ | १२ | ८ | | ४४ |
| पुरस्ताज्ज्योतिस्त्रिष्टुप् | ८ | १२ | १२ | १२ | | ४४ |
| मध्येज्योतिस्त्रिष्टुप् | १२ | १२ | ८ | १२ | | ४४ |
| उपरिष्टाज्ज्योतिस्त्रिष्टुप् | १२ | १२ | १२ | ८ | | ४४ |
| महाबृहती त्रिष्टुप् | ८ | ८ | ८ | ८ | १२ | ४४ |
| यवमध्या त्रिष्टुप् | ८ | ८ | १२ | ८ | ८ | ४४ |
| पंक्त्युत्तरा त्रिष्टुप् | १० | १० | ८ | ८ | ८ | ४४ |
| विराट्पूर्वा वा त्रिष्टुप् | ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | ,, |

## ७ जगती

### ( सर्वानु. अ. ५ अनु. ८ )

| छन्दोनामानि | प्र.पा. | द्वि.पा. | तृ.पा. | च.पा. | पं.पा. | ष.पा. | सं. सं. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जगती | १२ | १२ | १२ | १२ | | | ४८ |
| महासतोबृहती जगती | ८ | ८ | ८ | १२ | १२ | | ४८ |
| महापंक्तिर्जगती | ८ | ८ | ७ | ६ | १० | ९ | ४८ |
| ,, ,, | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ४६ |

## द्विपाच्छन्दः ।

| सर्वाक्षर संख्या | प्रथम चरणे अक्षरसंख्या | द्वितीयचरणे अक्षरसंख्या | छंदो नामानि |
|---|---|---|---|
| ६ | १ | ५ | याजुषी गायत्री |
| ७ | २ | ५ | याजुषी उष्णिक् |
| ८ | ३ | ५ | याजुषी अनुष्टुप् |
| ९ | ४ | ५ | याजुषी बृहती |
| १० | ५ | ५ | याजुषी पंक्तिः |
| ११ | ६ | ५ | याजुषी त्रिष्टुप् |
| १२ | ७ | ५ | याजुषी जगती |
| ८ | १ | ७ | प्राजापत्या गायत्री |
| १२ | २ | १० | प्राजपत्योष्णिक् |
| १६ | ३ | १३ | प्राजापत्याऽनुष्टुप् |
| २० | ४ | १६ | प्राजापत्या बृहती |
| २४ | ५ | १९ | प्राजापत्या पंक्तिः |
| २८ | ६ | २२ | प्राजापत्या त्रिष्टुप् |
| ३२ | ७ | २५ | प्राजापत्या जगती |
| १५ | १ | १४ | आसुरी गायत्री |
| १४ | २ | १२ | आसुरी उष्णिक् |
| १३ | ३ | १० | आसुरी अनुष्टुप् |
| १२ | ४ | ८ | आसुरी बृहती |
| ११ | ५ | ६ | आसुरी पंक्तिः |
| १० | ६ | ४ | आसुरी त्रिष्टुप् |
| ९ | ७ | २ | आसुरी जगती |
| १२ | ६ | ६ | साम्नी गायत्री |
| १४ | ७ | ७ | साम्नी उष्णिक् |
| १६ | ८ | ८ | साम्नी अनुष्टुप् |
| १८ | ९ | ९ | साम्नी बृहती |
| २० | १० | १० | साम्नी पंक्तिः |
| २२ | ११ | ११ | साम्नी त्रिष्टुप् |
| २४ | १२ | १२ | साम्नी जगती |

## त्रिपाच्छन्दः ।

| सर्वाक्षराणि | प्रथम चरणे | द्वितीय चरणे | तृतीय चरणे | छंदो नामानि |
|---|---|---|---|---|
| २४ | १ | १५ | ८ | आर्षी गायत्री |
| २८ | २ | १४ | १२ | आर्षी उष्णिक् |
| ३२ | ३ | १३ | १६ | आर्षी अनुष्टुप् |
| ३६ | ४ | १२ | २० | आर्षी बृहती |
| ४० | ५ | ११ | २४ | आर्षी पंक्ति |
| ४४ | ६ | १० | २८ | आर्षी त्रिष्टुप् |
| ४८ | ७ | ९ | ३२ | आर्षी जगती |

| सर्वा क्षराणि | प्रथम चरणे | द्वितीय चरणे | तृतीय चरणे | छंदो नामानि |
|---|---|---|---|---|
| १८ | ६ | ६ | ६ | आर्ची गायत्री |
| २१ | ७ | ७ | ७ | आर्ची उष्णिक् |
| २४ | ८ | ८ | ८ | आर्ची अनुष्टुप |
| २७ | ९ | ९ | ९ | आर्ची बृहती |
| ३० | १० | १० | १० | आर्ची पंक्तिः |
| ३३ | ११ | ११ | ११ | आर्ची त्रिष्टुप् |
| ३६ | १२ | १२ | १२ | आर्ची जगती |
| ३६ | ६ | १२ | १८ | ब्राह्मी गायत्री |
| ४२ | ७ | १४ | २१ | ब्राह्मी उष्णिक् |
| ४८ | ८ | १६ | २४ | ब्राह्मी अनुष्टुप् |
| ५४ | ९ | १८ | २७ | ब्राह्मी बृहती |
| ६० | १० | २० | ३० | ब्राह्मी पंक्ति |
| ६६ | ११ | २२ | ३३ | ब्राह्मी त्रिष्टुप् |
| ७२ | १२ | २४ | ३६ | ब्राह्मी जगती |

## ( पिंगलसूत्रानुसारेण )

## छन्दसामक्षरसंख्या ।

| छन्दोनामानि | अक्षरसंख्या | |
|---|---|---|
| दैवी गायत्री | १ | |
| दैव्युष्णिक् | २ | |
| दैव्यनुष्टुप् | ३ | |
| दैवी बृहती | ४ | |
| दैवी पंक्तिः | ५ | |
| दैवी त्रिष्टुप् | ६ | वा याजुषी गायत्री |
| दैवी जगती | ७ | ,, याजुष्युष्णिक् |
| प्राजापत्या गायत्री | ८ | ,, याजुष्यनुष्टुप् |
| आसुरी जगती | ९ | ,, याजुषी बृहती |
| आसुरी त्रिष्टुप् | १० | ,, याजुषी पंक्तिः |
| आसुरी पंक्तिः | ११ | ,, याजुषी त्रिष्टुप् |
| आसुरी बृहती, | १२ | ,, याजुषी जगती, |
| प्राजापत्योष्णिक् | | ,, साम्नी गायत्री |
| आसुर्यनुष्टुप् | १३ | |
| आसुरी उष्णिक् | १४ | ,, साम्नी उष्णिक् |
| आसुरी गायत्री | १५ | |
| प्राजापत्या अनुष्टुप् | १६ | ,, साम्नी अनुष्टुप् |

| | | |
|---|---|---|
| आर्ची गायत्री | १८ | साम्नी बृहती |
| प्राजापत्या बृहती | २० | साम्नी पंक्तिः |
| आर्ची उष्णिक् | २१ | |
| साम्नी त्रिष्टुप् | २२ | |
| आर्षी गायत्री | २४ | प्राजापत्या पंक्तिः, साम्नी जगती, आर्ची अनुष्टुप् |
| आर्ची बृहती | २७ | |
| आर्षी उष्णिक् | २८ | प्राजापत्या त्रिष्टुप् |
| आर्ची पंक्तिः | ३० | |
| आर्षी अनुष्टुप् | ३२ | प्राजापत्या जगती |
| आर्ची त्रिष्टुप् | ३३ | |
| आर्षी बृहती | ३६ | आर्ची जगती, ब्राह्मी गायत्री |
| आषा पंक्तिः | ४० | |
| ब्राह्मी उष्णिक् | ४२ | |
| आर्षी त्रिष्टुप् | ४४ | |
| आर्षी जगती | ४८ | ब्राह्मी अनुष्टुप् |
| ब्राह्मी बृहती | ५४ | |
| ब्राह्मी पंक्तिः | ६० | |
| ब्राह्मी त्रिष्टुप् | ६६ | |
| ब्राह्मी जगती | ७२ | |

## ( पिंगल सूत्रानुसारेण । )

### गायत्र्यधिकारः

| | छन्दो नाम | प्रथम चरणे अ. संख्या | द्वितीय चरणे अ. संख्या | तृतीय चरणे अ. संख्या | चतुर्थ चरणे अ. संख्या | संपूर्ण अ. संख्या |
|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | गायत्री त्रिपात् | ८ | ८ | ८ | ० | २४ |
| २ | गायत्री चतुष्पात् | ६ | ६ | ६ | ६ | २४ |
| ३ | पादनिवृत् गायत्री | ७ | ७ | ७ | ० | २१ |
| ४ | अतिपादनिवृत् गायत्री | ६ | ८ | ७ | ० | २१ |
| ५ | नागी गायत्री | ९ | ९ | ६ | ० | २४ |
| ६ | वाराही गायत्री | ६ | ९ | ९ | ० | २४ |
| ७ | वर्द्धमाना गायत्री | ६ | ७ | ८ | ० | २१ |
| ८ | प्रतिष्ठा गायत्री | ८ | ७ | ६ | ० | २१ |
| ९ | द्विपात् विराट् गायत्री | १२ | ८ | १२ | ८ | ४० |
| १० | त्रिपात् विराट् गायत्री | ११ | ११ | ११ | ० | ३३ |

### उष्णिगधिकारः

| | | प्र. पा. | द्विपा. | तृ. पा. | च. पा. | सं. सं. |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ० | उष्णिक् | ८ | ८ | १२ | ० | २८ |
| | | १२ | ८ | ८ | ० | |
| १ | ककुप् उष्णिक् | ८ | १२ | ८ | ० | २८ |
| २ | पुर उष्णिक् | १२ | ८ | ८ | ० | २८ |
| ३ | परोष्णिक् | ८ | ८ | १२ | ० | २८ |
| ४ | चतुष्पात् उष्णिक् | ७ | ७ | ७ | ७ | २८ |

## अनुष्टुबधिकारः

| छन्दो नाम । | प्र. पा. | द्वि. पा. | तृ. पा. | च. पा. | सं. सं. |
|---|---|---|---|---|---|
| १ चतुष्पात् अनुष्टुभ् | ८ | ८ | ८ | ८ | ३२ |
| २ त्रिपात् अनुष्टुभ् (आदौ) | ८ | १२ | १२ | ० | ३२ |
| ३ त्रिपात् अनुष्टुभ् (मध्ये) | १२ | ८ | १२ | ० | ३२ |
| ४ त्रिपात् अनुष्टुभ् (अन्ते) | १२ | १२ | ८ | ० | ३२ |

## बृहत्यधिकारः

| | प्र. पा. | द्वि. पा. | तृ. पा. | च. पा. | सं. सं. |
|---|---|---|---|---|---|
| १ बृहती | १२ | ७ | ८ | ८ | ३६ |
| २ पथ्या बृहती | ८ | ८ | १२ | ८ | ३६ |
| ३ न्यंकुसारिणी (स्कन्धोग्रीवी, उरोबृहती इयमेव आचार्यमतेन ) | ८ | १२ | ८ | ८ | ३६ |
| ४ उपरिष्टात् बृहती | ८ | ८ | ८ | १२ | ३६ |
| ५ पुरस्तात् बृहती | १२ | ८ | ८ | ८ | ३६ |
| ६ 'क्वचित्' बृहती | ९ | ९ | ९ | ९ | ३६ |
| ७ बृहती | १० | १० | ८ | ८ | ३६ |
| ८ महाबृहती (सतोबृहती इयमेव आचार्यमतेन ) | १२ | १२ | १२ | ० | ३६ |

## पंक्त्यधिकारः

| छन्दो नाम | प्र. पा. | द्वि. पा. | तृ. पा. | च. पा. | पं. पा. | सं. सं. |
|---|---|---|---|---|---|---|
| १ सत्पङ्क्तिः (अनुलोमा | १२ | ८ | १२ | ८ | ० | ४० |
| विपरीता च ) | ८ | १२ | ८ | १२ | | |
| २ आस्तारपंक्तिः | ८ | ८ | १२ | १२ | ० | ४० |
| ३ प्रस्तारपंक्तिः | १२ | १२ | ८ | ८ | ० | ४० |
| ४ विष्टारपंक्तिः | ८ | १२ | १२ | ८ | ० | ४० |
| ५ संस्तारपंक्तिः | १२ | ८ | ८ | १२ | ० | ४० |
| ६ अक्षरपंक्तिः(अल्पशः) | ५ | ५ | ५ | ५ | ० | २० |
| ७ अल्पशः पंक्तिः | ५ | ५ | ० | ० | ० | १० |
| ८ पदपंक्तिः | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | २५ |
| ९ पंचपदापंक्तिः | ४ | ६ | ५ | ५ | ५ | २५ |
| १० पथ्यापंक्तिः | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ४० |

## त्रिष्टुबधिकारः

| | प्र. पा. | द्वि. पा. | तृ. पा. | च. पा. | पं. पा. | सं. सं. |
|---|---|---|---|---|---|---|
| त्रिष्टुप् | ११ | ११ | ११ | ११ | ० | ४४ |
| ज्योतिष्मती त्रिष्टुप् | ८ | ११ | ८ | ८ | ८ | ४३ |
| पुरस्ताज्ज्योतिस्त्रिष्टुप् | ११ | ८ | ८ | ८ | ८ | ४३ |
| मध्येज्योतिस्त्रिष्टुप् | ८ | ८ | ११ | ८ | ८ | ४३ |
| उपरिष्टाज्ज्योतिस्त्रिष्टुप् | ८ | ८ | ८ | ८ | ११ | ४३ |

## जगत्यधिकारः

| छन्दोनाम | प्र. पा. | द्वि. पा. | तृ. पा. | च. पा. | पं. पा. | अ. सं. |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ज्योतिष्मती जगती | ८ | १२ | ८ | ८ | ८ | ४४ |
| पुरस्ताज्ज्योतिर्जगती | १२ | ८ | ८ | ८ | ८ | ४४ |
| मध्येज्योतिर्जगती | ८ | ८ | १२ | ८ | ८ | ४४ |
| उपरिष्टाज्ज्योतिर्जगती | ८ | ८ | ८ | ८ | १२ | ४४ |
| जगती | १२ | १२ | १२ | १२ | ० | ४८ |
| शंकुमती गायत्री | ५ | ६ | ६ | ६ | (अत्र क्रमाभावः) | २३ |
| ककुम्मती गायत्री | ६ | ५ | ५ | ५ | (अत्र क्रमाभावः) | २१ |

## गायत्री ।

| | प्र. पा. | द्वि. पा. | तृ. पा. | | अ.संख्या |
|---|---|---|---|---|---|
| अणिष्ठमध्यासती | | | | | |
| पिपीलिकमध्या गायत्री | ८ | ३ | ८ | ० | १९ |
| पिपीलिकमध्या गायत्री | ८ | ४ | ८ | ० | २० |
| पिपीलिकमध्या गायत्री | ८ | ५ | ८ | ० | २१ |
| यवमध्या गायत्री | ७ | ८ | ७ | ० | २२ |
| यवमध्या गायत्री | ६ | ८ | ६ | ० | २० |
| यवमध्या गायत्री | ५ | ८ | ५ | ० | १८ |
| यवमध्या गायत्री | ४ | ८ | ४ | ० | १६ |
| यवमध्या गायत्री | ३ | ८ | ३ | ० | १४ |

## छन्दसामक्षरसंख्या ।

| छंदांसि | गा. | उ. | अ. | बृ. | पं. | त्रि. | ज. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| आर्षी | २४ | २८ | ३२ | ३६ | ४० | ४४ | ४८ |
| दैवी | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ |
| आसुरी | १५ | १४ | १३ | १२ | ११ | १० | ९ |
| प्राजापत्या | ८ | १२ | १६ | २० | २४ | २८ | ३२ |
| याजुषी | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ |
| साम्नी | १२ | १४ | १६ | १८ | २० | २२ | २४ |
| आर्ची | १८ | २१ | २४ | २७ | ३० | ३३ | ३६ |
| ब्राह्मी | ३६ | ४२ | ४८ | ५४ | ६० | ६६ | ७२ |

### चतुर्थोऽध्यायः ।

चतुःशतमुत्कृतिः ॥ १ ॥ चतुरश्चतुरस्त्यजेदुत्कृतेः ॥ २ ॥ तान्यभिसंख्या-प्रेभ्यः कृतिः ॥ ३ ॥ प्रकृत्या चोपसर्गवर्जिता॥ ४ ॥ धृत्यष्टिशक्करीजगत्यः ॥५॥ पृथक् पृथक् पूर्वत एतान्येवैषाम् ॥ ६ ॥ द्वितीयं द्वितीयमतितः॥ ७ ॥ अत्र लौकिकम् ॥ ८ ॥ आत्रैष्टुभाच्च यदार्षम् ॥ ९ ॥ पादश्चतुर्भागः ॥ १० ॥ यथावृत्तसमासिर्वा ॥ ११ ॥

( कात्यायनसर्वानुक्रमसूत्रानुसारेण )

## छंदसामक्षरसंख्या ।

| अक्षर संख्या | छंदोनामानि | अक्षर संख्या | छंदोनामानि | अक्षर- संख्या | छंदोनामानि |
|---|---|---|---|---|---|
| २२ | विराट् गायत्री | ५१ | निचृदतिजगती | ८० | कृतिः |
| २३ | निचृद्गायत्री | ५२ | अतिजगती | ८१ | भुरिक् कृतिः |
| २४ | गायत्री | ५३ | भुरिगतिजगती | ८२ | स्वराट् कृतिः+ विराट् प्रकृतिः |
| २५ | भुरिग्गायत्री | ५४ | स्वराडतिजगती+विराट् शक्वरी | ८३ | निचृत्प्रकृतिः |
| २६ | स्वराट् गायत्री+विराट् उष्णिक् | ५५ | निचृत् शक्वरी | ८४ | प्रकृतिः |
| २७ | निचृत् उष्णिक् | ५६ | शक्वरी | ८५ | भुरिक् प्रकृतिः |
| २८ | उष्णिक् | ५७ | भुरिक् शक्वरी | ८६ | स्वराट् प्रकृतिः+ विराडाकृतिः |
| २९ | भुरिगुष्णिक् | ५८ | स्वराट् शक्वरी+विराडतिशक्वरी | ८७ | निचृदाकृतिः |
| ३० | स्वराट् उष्णिक्+विराडनुष्टुप् | ५९ | निचृदतिशक्वरी | ८८ | आकृतिः |
| ३१ | निचृदनुष्टुप् | ६० | अतिशक्वरी | ८९ | भुरिगाकृतिः |
| ३२ | अनुष्टुप् | ६१ | भुरिगतिशक्वरी | ९० | स्वराडाकृतिः+ विराट् विकृतिः |
| ३३ | भुरिगनुष्टुप् | ६२ | स्वराडतिशक्वरी+ विराडष्टिः | ९१ | निचृद्विकृतिः |
| ३४ | स्वराडनुष्टुप्+विराड् बृहती | ६३ | निचृदष्टिः | ९२ | विकृतिः |
| ३५ | निचृद् बृहती | ६४ | अष्टिः | ९३ | भुरिग् विकृतिः |
| ३६ | बृहती | ६५ | भुरिगष्टिः | ९४ | स्वराट् विकृतिः+ विराट् संकृतिः |
| ३७ | भुरिग्बृहती | ६६ | स्वराडष्टिः+ विराडत्यष्टिः | ९५ | निचृत्संकृतिः |
| ३८ | स्वराट् बृहती+विराट् पंक्तिः | ६७ | निचृदत्यष्टिः | ९६ | संकृतिः |
| ३९ | निचृत् पंक्तिः | ६८ | अत्यष्टिः | ९७ | भुरिक् संकृतिः |
| ४० | पंक्तिः | ६९ | भुरिगत्यष्टिः | ९८ | स्वराट् संकृतिः+ विराडभिकृतिः |
| ४१ | भुरिक्पंक्तिः | ७० | स्वराडत्यष्टिः+ विराट् धृतिः | ९९ | निचृदभिकृतिः |
| ४२ | स्वराट् पंक्तिः+विराट् त्रिष्टुप् | ७१ | निचृद्धृतिः | १०० | अभिकृतिः |
| ४३ | निचृत् त्रिष्टुप् | ७२ | धृतिः | १०१ | भुरिगभिकृतिः |
| ४४ | त्रिष्टुप् | ७३ | भुरिग् धृतिः | १०२ | स्वराडभिकृतिः+विराडुत्कृतिः |
| ४५ | भुरिक् त्रिष्टुप् | ७४ | स्वराड् धृतिः+ विराडतिधृतिः | १०३ | निचृदुत्कृतिः |
| ४६ | स्वराट् त्रिष्टुप्+विराड् जगती | ७५ | निचृदतिधृतिः | १०४ | उत्कृतिः |
| ४७ | निचृज्जगती | ७६ | अतिधृतिः | १०५ | भुरिगुत्कृतिः |
| ४८ | जगती | ७७ | भुरिगतिधृतिः | १०६ | स्वराडुत्कृतिः |
| ४९ | भुरिग्जगती | ७८ | स्वराडतिधृतिः+ विराट्कृतिः | | |
| ५० | स्वराड् जगती+विराडतिजगती | ७९ | निचृत्कृतिः | | |

# सर्वानुक्रमसूत्रस्य विषयसूची ।

## ( १ ) सर्वानुक्रमसूत्रस्य अध्यायसूची ।



## ( २ ) सर्वानुक्रमसूत्रस्थयजुर्वेदाध्यायसूची ।

## (३) सर्वानुक्रमसूत्रस्थयजुर्वेदविषयानुक्रमणिका ।



## छन्दसां कोष्टकानि ।

## छन्दसामक्षरसंख्याकोष्टकानि ।